इस्लाम का भारतीयकरण

जमालुद्दीन जौहर

लेखक की ओर से...
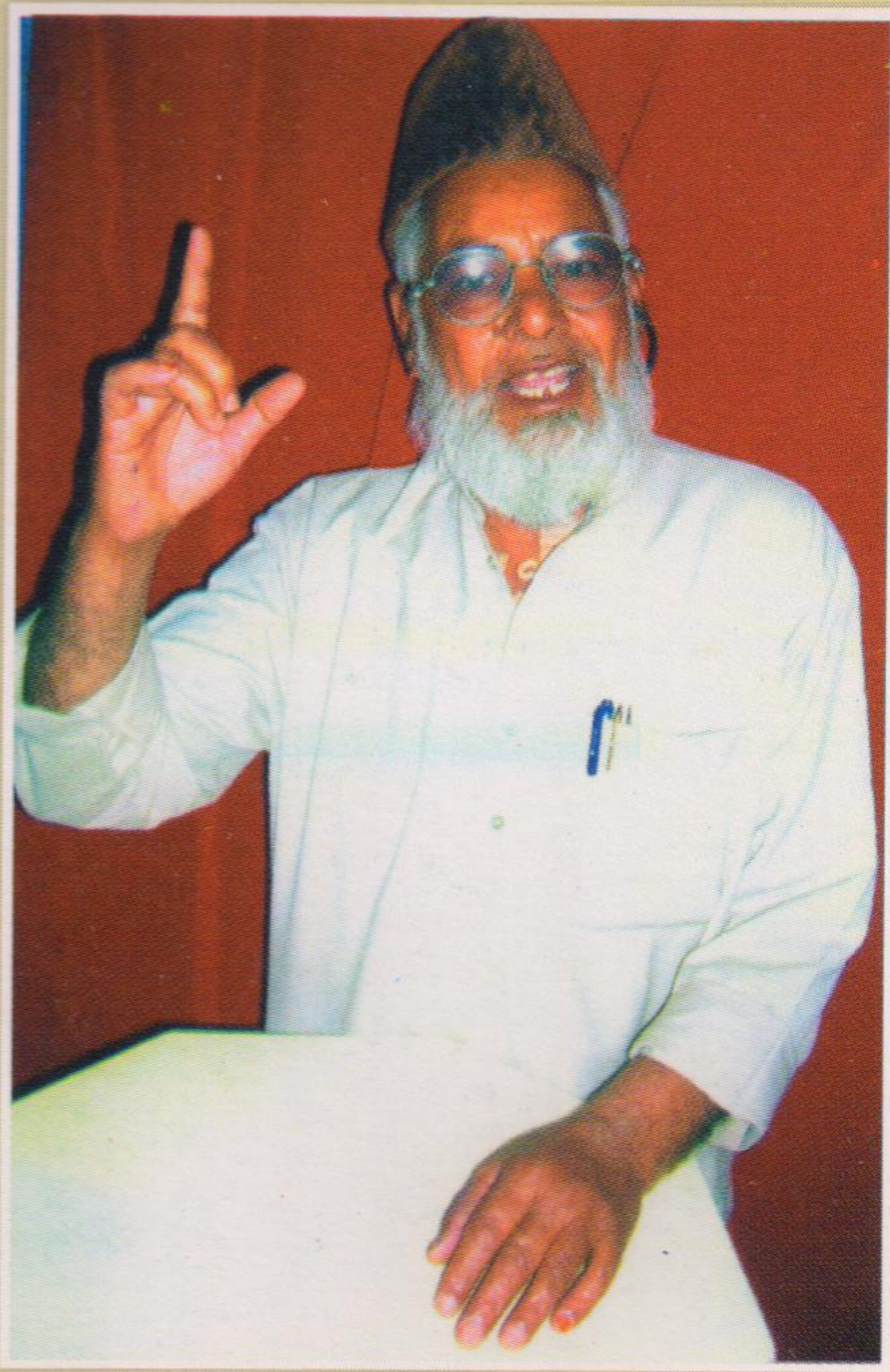
प्रिय पाठकों,

इस संसार में जगत नियंता के अलावा कोई पूर्ण नहीं है। कई कमियां मेरे विचारों को प्रकट करने की शैली में हो सकती है। मेरा यह गद्य के रूप में प्रयास कैसा बन पड़ा यह आप पर निर्भर है। प्रस्तुत पुस्तक लिखने का मकसद किसी का दिल दुखाना नहीं है मात्र यह बताना है कि अपने राजनैतिक-आर्थिक स्वार्थों के लिए इन्सान क्या नहीं करता है- अपनी जिद पर अड़ा रहता है, हजार बार गिरने के बाद भी टांग ऊपर ही रखना चाहता है। दिखावटी रूप से सहयोग सद्भाव की बात करता जाता है और रह-रहकर घावों पर नमक छिड़कता जाता है तो दूसरी तरफ कुछ तत्व ऐसे भी है जो अपने तुच्छ आर्थिक स्वार्थों हेतु अपनी वंश परपंराओं को झुठलाते नजर आते है। ऐसे लोग प्रत्येक समाज में मिल जाएंगे। जो उदाहरण इस पुस्तक में है वो सब-तारीखे फरिश्ता-आइने अकबरी, तजकिरा तुस्सादात, दैनिक न्याय, दैनिक नवज्योति, दैनिक भास्कर, पाथेय कण व डायमंड इंडिया से लिए गए है अतः इन सबका हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। पाखंडों के खिलाफ इस संघर्ष में मेरे साथ कदम से कदम मिलाकर आपका भी साथ होगा तभी भारत में धार्मिक विद्वेष के स्थान पर प्रेम की गंगा बहेगी।

जय जगत

- जमालुद्दीन जौहर

इस्लाम का भारतीयकरण

जमालुद्दीन 'जौहर'

गजाला प्रकाशन

गजाला प्रकाशन
कविता कुंज, झरणेश्वर मार्ग
मोड़ का निम्बाहेड़ा
भीलवाड़ा (राज.)-311026
द्वारा प्रकाशित

संस्करण : 2006

मूल्य : 50.00 रु.

आवरण : उद्भावना से साभार

मेधा ऑफसेट प्रिन्टर्स, भीलवाड़ा
द्वारा मुद्रित

Islam Ka Bhartiyakaran
Written by **Jamaluddin Johar**

शुभकामनाएं

तार्किक ढंग से पाखंडों पर प्रहार

धर्म की अवधारणा सहयोग, सद्भाव बढ़ाकर वसुदैव कुटुम्बकम को पुष्ट करती है। व्यक्ति आत्मिक उन्नयन के स्थान पर तुच्छ स्वार्थ पूर्ति हेतु जब धर्म को आधार बनाता है तो समाज में अनेकानेक विकृतियां उत्पन्न हो जाती है। मत मतांतर तुच्छ स्वार्थ पूर्ति हेतु विकसित हुए है।

आयुष्मान जमालुद्दीन जौहर के राजस्थानी दोहे मैंने पढ़े- दुधारी तलवार के जैसे, बुराइयों पर प्रहार करते है यथा -

पंडित मुल्ला पादरी चोरां रा सिरमौर
चोर हिलावे हाथ पग ये कामां का चौर।

गद्य की प्रस्तुत पुस्तक में तार्किक ढंग से पाखंडों पर प्रहार किया गया है। अपनी बात को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर बताया गया है।

मुझे प्रसन्नता है कि शिक्षा जगत में खरी व स्पष्ट बात कहने वाला कवि, लेखक के रूप में आपके सामने प्रस्तुत है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं इनकी लेखनी दिनों दिन प्रखर होती रहे।

– **सुभाष मिश्रा**, उपनिदेशक (मा.शि.), अजमेर मंडल, अजमेर

❖❖❖

एक तीर से तेरह शिकार

एक तीर से दो शिकार की कहावत सबने सुनी पर जब मंच पर जौहर दहाड़ता है-

धर्म अब ढोंग है मजहब सिर्फ मक्कारी है,
ऐ खुदा सुन ले ये सब इन्सान के साथ अय्यारी है।

इस तरह वे एक तीर से तेरह शिकार करते नजर आते है।

हमें वास्तव में सोचना पड़ता है कि धर्म नाम की अवधारणा धरती पर कभी रही होगी। आज मात्र दिखावा-बनावटीपन है, छीना-झपटी, इन्सान तुच्छ स्वार्थों के वशीभूत कितना निम्न स्तरीय व्यवहार करने लग जाता है फिर भी दम भरता है- मैं ही सच्चा हूं।

ईश्वर से कामना करता हूं इस पुस्तक के बाद दोहों का प्रकाशन शीघ्र हो।

– **ए.के. सक्सेना**, प्राचार्य-रा.उ.मा.वि. माखुपुरा, अजमेर

प्रकाशकीय

कट्टरपंथ और रुढ़िवादिता पर दोहरा प्रहार

'इस्लाम का भारतीयकरण' शीर्षक चोंकाता है, प्रथम दृष्टया ऐसा लगता है कि संघ परिवार के राष्ट्रवादी मुस्लिम आंदोलन की विचारसरणी से रंगी कोई प्रचार पुस्तक मात्र होगी यह, क्योंकि संघ के सरसंघचालक कुप्पहल्ली सीतारमैया सुदर्शन ने भारतीय मुसलमानों को 'मोहम्मदी हिंदू' निरूपित करते हुए उनका आह्वान किया था कि वे भारतीयकरण की मुख्यधारा में शामिल हो जाए। संघ प्रमुख के इन विचारों ने एक राष्ट्रव्यापी बहस को जन्म दिया तथा इतिहास के व्याख्याता और मूलतः कवि श्री जमालुद्दीन जौहर को इस पुस्तक को लिखने को प्रेरित किया। इस प्रयास की सराहना की जानी चाहिए क्योंकि यह कट्टरपंथ व कर्मकाण्ड पर दोहरा वार करने वाली बेबाक किताब है।

पुस्तक के 'उत्पात की जड़ आस्था' लेख में लेखक लिखते है कि बेमतलब के नारे ढूंढना और उन्हें जनता की तरफ उछाल देने का प्रचलन चल पड़ा है, मसलन राम शिला पूजन के वक्त राम मंदिर निर्माण के कर्ता-धर्ताओं ने एक नारा गढ़ा था- "नहीं निरोध क रोक सकेंगे, तूफान उठा है महाभयंकर। गांव-गांव बजरंग चला है शक्ति शिला की ले प्रलयंकर।"! लेखक पूछते है कि इस नारे में क्या सार्थकता है? वीर बजरंग की शिला पर तो संजीवनी थी जिसका लक्ष्य लक्ष्मण की जीवन रक्षा करना था और ये मंदिर के नाम पर जुटाई गई शिलाएं भी सृजन ही करेगी, पर उन्हें प्रलयंकारी बताकर आम भारतीयों को प्रलय मचाने की प्रेरणा दी जा रही है। लेखक संभवतः धार्मिक रुढिवाद और कट्टरता से सर्वाधिक दुखी है इसलिए एक जगह तो यह कहने से भी नहीं चूकते कि "आस्था उच्च कोटि की सनक है, कब क्या कर बैठे?"

मुस्लिम समुदाय के बहुचर्चित सवाल तस्लीमा नासरीन, इमराना, जनसंख्या वृद्धि, चार बीबीयां, पर्दा प्रथा, तलाक, इस्लामी आतंकवाद और परिवार नियोजन जैसे मसलों पर लेखक ने समसामयिक टिप्पणियाँ की है। शरीयत में परिवर्तन या

पुर्नव्याख्या जैसे संवेदनशील मसले पर भी लेखक ने पूरी साफगोई से अपने विचार प्रकट किए है।

लेखक राजनीति व धर्म दोनों के स्वतंत्र रूप को हितकारी मानते हुए चेतावनी देना नहीं भूलते कि इनका गढमढ रूप घातक विष बन जाता है।

जौहर सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों के 'भारत में यदि रहना है तो वन्दे मातरम् कहना होगा' के दुराग्रह को ललकारते हुए कहते है – सनातनी भाई कहता है- वन्दे मारतम् और जौहर (लेखक) कहता है – जय हिन्द, कहां है अंतर? अंतर तो सिर्फ भाषा का है, हिंदुस्तान जिंदाबाद को अगर छोटा सा नाम दे तो वह जय हिंद कहा जाएगा और जब जय हिंद हमारे मन में रम जाएगा तो वही वन्दे मातरम् के रूप में प्रतिध्वनित होगा। लेखक का तो मानना है कि हिंदू शब्द धर्म की संज्ञा के रूप में न होकर एक भू सांस्कृतिक इकाई का नाम है जो राष्ट्रीयता का द्योतक है, वे कहते है कि राष्ट्रीयता से ही राष्ट्र की पहचान होती है न कि मजहब से। भारतीय मुसलमान भी विश्व के अन्य देशों में हिंदी, अल हिंदी के रूप में ही पहचाने जाते है। मगर पुस्तक आगाह करती है कि भारतीयकरण के नाम पर हिंदुकरण किया जा रहा है तथा यह राष्ट्रीयता की भावना से नहीं बल्कि राजनीतिक फायदा उठाने की गरज से किया जा रहा है।
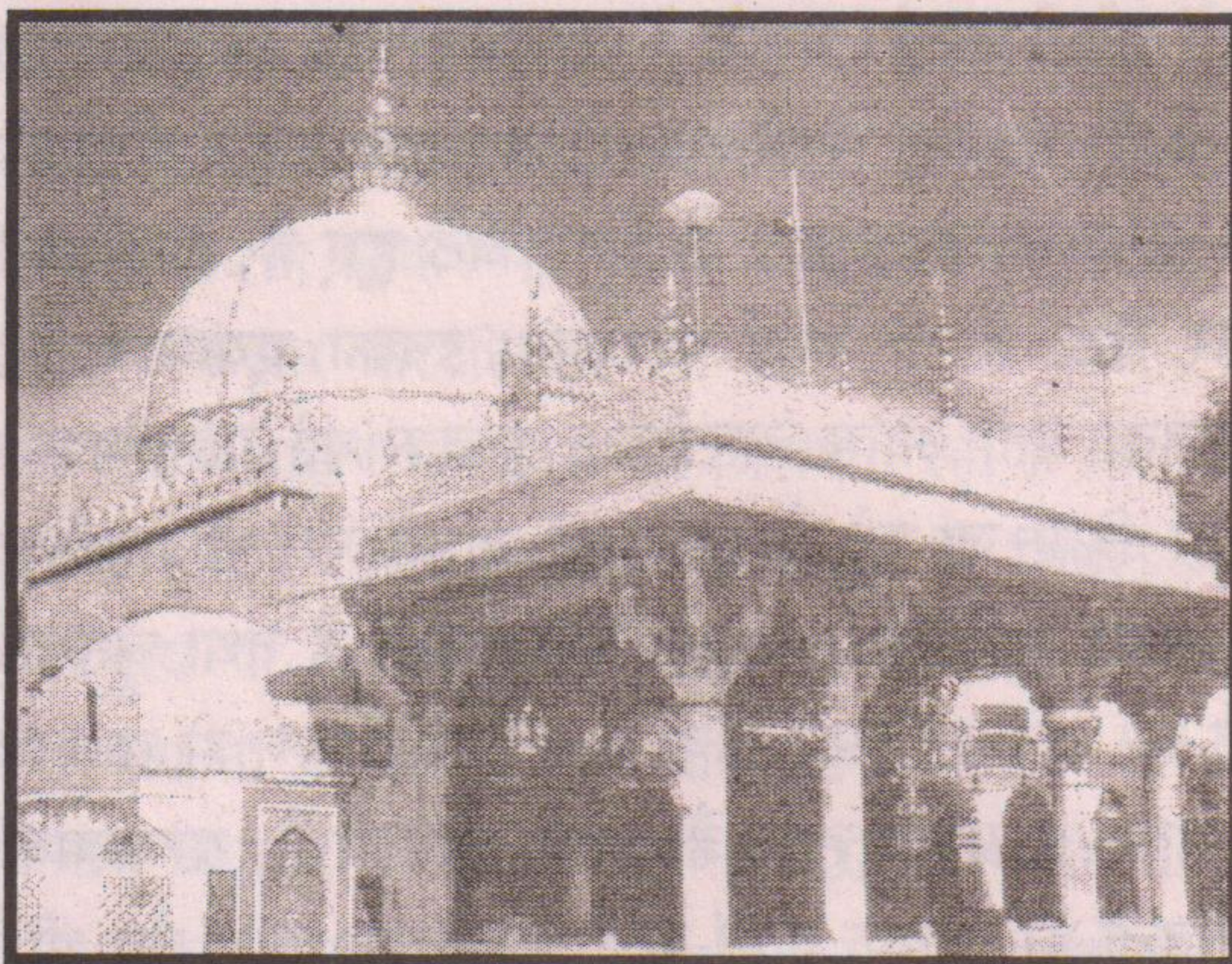
लेखक कहीं संघ प्रमुख सुदर्शन तो कहीं प्रवीण तोगड़िया और अशोक सिंघल के कट्टर विचारों से लोहा लेते है तो कहीं मुल्ला-मौलवियों से दो-दो हाथ करते नजर आते है और फिर.... अजमेर में स्थित ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के खादिमों की तो खैर नहीं।

गरीब नवाज की दरगाह में होने वाले पूजा-पाठ और कर्मकाण्ड तथा लूट-खसोट को लेखक इस्लाम का भारतीयकरण (जैसा सुदर्शन जी चाहते होंगे!) करार देते हुए पूछते है कि – आलमे इस्लाम हजरत मोहम्मद मुस्तुफा की कब्र पर जब लोबान, फूल-चादर, चढ़ावे नहीं होते है तो फिर अजमेर व अन्य स्थानों पर ऐसा क्यों?

अजमेर दरगाह में इस्लाम के नाम पर फैले अंधविश्वास पर करारा व्यंग्य भी

लेखक अपनी पुस्तक में करना नहीं भूलते, कई बार तो लगता है कि वे दरगाह के अंदरूनी नजारे का दृकसाक्षी वर्णन कर रहे है यथा – **''अजमेर में जायरीन खादिमों के कहने पर चादर, किवाड़ तथा खंभों को चूमते है और सीढ़ियों को झुककर, हाथों से छूकर सलाम करते हैं। हमें तो इस्लाम में कहीं पर भी ये बाते नहीं मिलती है।''** इस पूरे प्रोपेगण्डा और अंधी आस्था से भरे कर्मकाण्ड के पीछे के निहितार्थ को पूरी स्पष्टवादिता से पुस्तक कहती है –

''आस्ताने पर छेन में हाथ डलवाकर गरीब नवाज से मुसाफा कराने का दम भरते खादिमों को देखा है। बदले में जायरीनों की अंगुठियां गायब हो जाती है, जेबें कट जाती है। दरगाह में जेबकतरों का एक बहुत बड़ा गिरोह पल रहा है। खादिम लोग जगह-जगह लूटने के लिए बैठे हुए है, कहीं कोई रजिस्टर व रसीद बुक लेकर बैठा है तो कोई मोरछल। इनका एकमात्र उद्देश्य है रुपया ऐंठना।'' को संभवत: यही आत्म आलोचना पुस्तक को प्रामाणिक बनाती है तथा इस्लाम के नाम पर किए जा रहे गैर इस्लामी कृत्यों पर भी गहरी चोट करती है।

पुस्तक की भाषा साहित्यिक अलंकारों से मुक्त है तथा जनसाधारण के मध्य प्रचलित बोलचाल की जबान जिसमें हिंदी व उर्दू के मिश्रण से बनी हिंदोस्तानी भाषा के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है। भाषा चुटीली है, प्रश्नात्मक है और बहस के लिए सवाल छोड़ती है। लेखक कहीं-कहीं पर देशज शब्दों का भी इस्तेमाल करते है, शायद उनके जीवन जीने की जैसी अक्खड़ शैली है वैसा ही वे बोलते भी है तथा कविताओं में भी उनका यही मूड झलकता है, गद्य विधा में उनकी यह प्रथम पुस्तक भी उनकी अक्खड़ मिजाजी को ही साबित करती है।

पुस्तक स्पष्टत: दो हिस्सों में बांटकर पढ़ी जा सकती है, पहला हिस्सा भारत की साझी विरासत व उदात्त आध्यात्मिक धर्म दर्शन व विचाराधाराओं की शल्य क्रिया करता है तथा हिंदू मुस्लिम एकता की आवश्यकता प्रतिपादित करता है। यथा 'समानांतर रेखाएं मिट सकती है' नामक लेख में लेखक आशावादी है कि सनातन व मुस्लिम संस्कृतियों के रूप में बनी समानांतर रेखाएं मिट सकती है अगर दोनों समुदाय अपने-अपने पूर्वाग्रहों व दुराग्रहों को त्याग दें।''

पुस्तक का दूसरा हिस्सा भी काफी रोचक है लेखक अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के खिदमतारों के क्रियाकलापों को पूर्णत: हिंदू धर्म की पूजा पद्धति की नकल बताते हुए कहते है कि यहां पर इस्लाम अपना मूल स्वरूप ही खो बैठा है। ऐसा कहकर लेखक किसी प्रकार के शुद्धिकरण का आग्रह नहीं करते है मगर वे यह जताना भी नहीं भूलते है कि अगर खादिमों की करतूतों को संघ प्रमुख सुदर्शन देख लें तो उन्हें मंदिरों के पुरोहितों की ही भांति वे भी आस्थाओं के व्यापारी ही लगेंगे तथा वे खुश होंगे कि चलो कहीं तो इस्लाम का भारतीयकरण हुआ है!

अनहद, दिल्ली

कहीं-कहीं ऐसा भी लग सकता है कि लेखक खादिमों से खार खाए बैठे है, शायद इसलिए वे खादिमों को लताड़ने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहते है, मगर ऐसी बात नहीं है, लेखकीय आलेख में जमालुद्दीन जौहर स्पष्ट करते हैं कि उनकी ना किसी से दोस्ती है और न ही किसी से बैर है, वे तो महज यह चाहते है कि गरीब नवाज की पवित्र दरगाह खादिमों की चंगुल से मुक्त हो जाए। ऐसा चाहते हुए वे अक्सर काफी तल्ख भाषा लिखते है जैसे कि **''दरगाह शरीफ में आधी भीड़ तो खादिमों की ही है जो कथित रूप से खिदमत करते-करते अब जायरीनों के गाइड बन चुके है। दरगाह से भिखमंगों को बाहर निकालने की अंजुमन की मांग पर सवाल उठाते हुए जौहर सैयद जादगान के सचिव से प्रतिप्रश्न करते है कि खिदमत के नाम पर तथा जियारत के नाम पर लोगों की जेबें काट लेने वाले लुटेरों को क्यों नहीं निकाल बाहर करने की मांग उठाई जाती है।''**

पुस्तक की भाषा सपाट है जो इसे रोचक बनाती है। साहित्य के सुधी समीक्षकों को यह कृति ज्यादा उत्साहित नहीं करेगी क्योंकि यह अपनी तरह की सुधारवादी नजरिए की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक पुस्तक है जिसमें ऐतिहासिक संदर्भो की भरमार है मगर आज के संदर्भो पर बात करते वक्त लेखक छोटी से छोटी घटना पर भी टिप्पणी करते है।

पुस्तक को पूर्वाग्रह मुक्त दृष्टिकोण से पढ़ा जाना चाहिए तथा इसमें उठाए सवालों के हल ढूंढने की ईमानदार कोशिश की जानी चाहिए। उम्मीद है कि मुस्लिम जगत के विचारवान लोग इस कृति का स्वागत करेंगे तथा राजनीतिक सामाजिक अध्ययनों के शोधार्थी भी इससे लाभान्वित होंगे। गजाला प्रकाशन इस पुस्तक के जरिए साहित्य जगत में लोकोपयोगी पुस्तकों की एक शृंखला प्रस्तुत करने की योजना रखता है, आशा है कि इस प्रयास को आपका समर्थन, सुझाव व सहयोग हासिल होगा।

– प्रकाशक की ओर से

लेखक की ओर से...
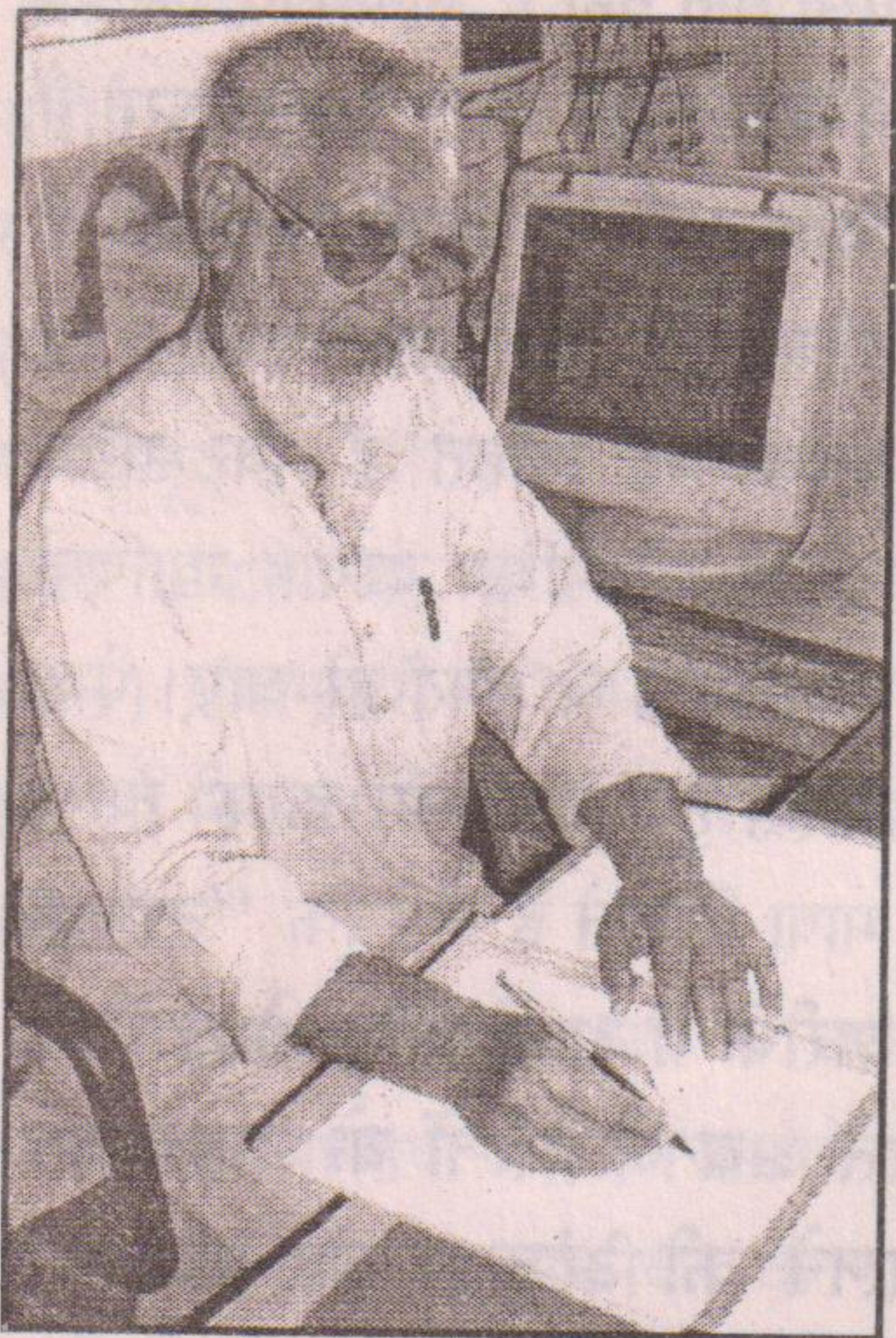
भाषा, अभिव्यक्ति का माध्यम है और मैं भाषा ज्ञान से करीब-करीब कोरा हूं। व्याकरण संबंधी दोषों का निराकरण अजीज जख्मी और भंवर मेघवंशी (मयंक) ने समय-समय पर सुझाव दे कर किया। अल्लाह से अर्ज हैं कि इन दोनों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती रहे।

साहित्य सागर से कुछ बूंदों का रसास्वादन जरूर किया पर गोता लगाने की क्षमता अभी पैदा नहीं हुई है और ना ही बिना पंख गगन छूने की स्थिति बनी।

भाषा संबंधी अगर कोई कमी नजर आए तो पाठक गण क्षमा करें। भाषा का मानक स्वरूप भाषा के विकास में बाधक होता है। इस बात को मानते हुए मैंने इस पुस्तक में आजकल की चलन के संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के शब्दों को जो मेरे अध्ययन में आए जिनसे हिंदी-उर्दू भाषा विकसित हुई, उनका प्रयोग किया। कठिन शब्दों का सरल अर्थ नीचे देखकर पुस्तक को एकदम सरल बनाने का प्रयास भी किया गया है।

इस पुस्तक के नामकरण व लिखने का एकमात्र उद्देश्य भ्रम को दूर करना मात्र है जिन महानुभावों का प्रसंगवश वर्णन दिया वो मेरी आवश्यक मजबूरी रही किसी का दिल दुखाना मेरा उद्देश्य नहीं रहा। 'पाथेय कण' नामक पत्रिका में जब संघ प्रमुख सुदर्शन जी के विचार- 'भारत में इस्लाम का भारतीयकरण होना चाहिए'' पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली और इस पुस्तक को पूरी कर दी। सुदर्शन जी ने इस्लाम के बारे में भारतीयकरण वाली बात कही वो भारतीय करण की तरफ कम, हिंदुत्वकरण की तरफ ज्यादा झुकी हुई महसूस हुई। मेरी दृष्टि व विचार से सुदर्शन जी आप सनातनधर्मी है। सनातन में शुद्ध निराकार की उपासना का प्रावधान है। प्रतीक पूजा व व्यक्तिपूजा तो उन धर्म प्रचारकों की ही देन है जो मौर्यकाल में भारत के चारों तरफ गए। ईमानदारी व गहराई से विचारने पर आप पायेंगे 'इस्लाम' सनातन का अरबी संस्करण मात्र है। इस्लाम उसी निराकार अगोचर, अदृश्य, सर्व शक्तिमान ईश की

उपासना की इजाजत देता है। जिसे सनातन में ॐ कहा जाता है। 'ॐ नमः शिवाय' का भाव यही है- निराकार, सर्वव्यापी-सर्व शक्तिमान, अदृश्य, कण-कण में व्याप्त व कल्याणकारी है। 'रब्बील आलमीन' सबका पालनहार वही निराकार है। सनातन व इस्लाम में कहीं व्यक्तिपूजा व प्रतीक पूजा का प्रावधान नहीं है, फिर कौनसा भारतीयकरण? कहीं आप सनातन के परिवर्द्धित एवं परिवर्तित उस रूप की बात तो नहीं कर रहे है जो बाह्य संस्कृतियों से बौद्ध धर्म प्रचारक लेकर आये? अगर आप मूर्ति पूजा व अनेक देवी-देवताओं की पूजा की बात चाहते हैं तो यह भारतीयकरण नहीं हैं, यह तो हिंदुआकरण की बात हुई।

वैसे भी भारत में इस्लाम का असली स्वरूप रहा ही कहां है? भारतीय मुसलमान नाम के ही रह गये है। इनके 80% काम इस्लाम सम्मत नहीं हैं।

काम काफिर सूं करड़ा, फेरूं मुसलमान?
रोजा, नमाज छोड़ दी, कबरां लीदी मान।

यह बात सत्य है कि इस्लाम व्यापारियों के माध्यम से दक्षिण में आया पर वट वृक्ष के रूप में इस्लाम का प्रसार अजमेर में ख्वाजा गरीबनवाज की शिक्षाओं से हुआ। जहां इस्लाम ने वट वृक्ष के रूप में अपनी जड़ें जमाई उसी अजमेर में आज इस्लाम की जड़ों में तेजाब डाला जा रहा है। सम्माननीय सुदर्शन जी, आप जिस तरह का इस्लाम चाहते है उससे हजार गुना परिवर्तित रूप अजमेर में पायेंगे। यहां इस्लाम अपना असल दर्शन खो चुका है। इस्लाम का असली रूप भारतीयकरण में है हिंदुआकरण में नहीं।

'हिंदुत्व' की विचारधारा भारतीय नहीं है। इस आयातित विचारधारा व आरोपित शब्द को लोग सिर का ताज मानते हैं, यह हठधर्मिता मात्र हैं। पूर्वाग्रह व दुराग्रह छोड़कर इस शब्द का अर्थ जान लें, तो स्वतः आप सनातनी कहलाना पसंद करेंगे।

अब रहा भारतीय इस्लाम पर हिंदू (सनातनी नहीं) विचारधारा के लोगों की टिप्पणियां इस मामले में मध्यकालीन आक्रमणकारियों का दोष अधिक हैं। इस्लाम के नाम पर मूर्तियों की तोड़फोड़ करना इस्लाम से विमुख होना हैं। हजरत मोहम्मद ने अपने साथियों से कहा- 'किसी का दिल मत तोड़ो, चाहे वह झूठे खुदा की ही पूजा कर रहा हो।' ऐसा एक भी उदाहरण प्रारम्भिक मुस्लिम तारीख में नहीं मिलेगा। काबा में हर कबीले का प्रत्येक दिन का खुदा अलग-अलग बुतों के रूप में पूजा जाता था। मक्का वालों ने जब इस्लाम को स्वीकारा तो अपने-अपने खुदाओं के बुतों को स्वयं ने ही काबा से हटा लिया- एक भी बुत मुसलमानों ने नहीं तोड़ा।

अब रहे भारतीय इतिहास के वो काले प्रसंग जहां मूर्तियों को खंडित किया गया है। ये आक्रमणकारी बर्बर व्यक्ति थे जिन्होंने इस्लाम की टोपी नयी-नयी पहनी थी। सोमनाथ महालय के अधर झूलते शिवलिंग को देखकर महमूद अर्चंभित हो गया उसने

जिज्ञासावश शिवलिंग को छड़ी से छुआ तो बेलेंस बिगड़ गया, शिवलिंग नीचे गिर गया। महमूद को भारी पछतावा हुआ। उसने मंदिर की सेवा के लिए 12 गांव दिए। ब्रिटिश शासनकाल तक महमूद का दिया गया ताम्रपत्र सोमनाथ महालय में था अब पता नहीं।

औरंगजेब को कट्टर सुन्नी कहना एकदम ठीक है। उसने कई मजार तुड़वा दिए जहां उसे फ्राड महसूस हुआ। काशी विश्वनाथ के एक भाग में ज्ञान व्यापी मस्जिद क्यों बनी? अध्ययन करने वाला पायेगा-यहां मंदिर की मूर्ति के नीचे गुप्त मार्ग है ले जाकर ग्वालियर की रानी के साथ कुकर्म करके मंदिर की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाया। ख्वाजा साहब की दरगाह के दारूल उलूम के पुस्तकालय में विद्वान का उद्धरण मौजूद है। औरंगजेब ने विश्वनाथ जी की सेवार्थ कई ग्राम दिए पर मंदिर को तुड़वाकर (चाहे वो अपवित्र हो गया) मस्जिद बनवाना औरंगजेब के (सुन्नी मुसलमान) ईमानदारी की भारी कमी है क्योंकि उसने हादिये मुसलमान के उस फरमान को नकारा है कि- ''दिल किसी का मत तोड़ो चाहे वो झूठे खुदा को ही पूज रहा हो।''

आज इस्लाम फिरकेबाजी के चक्कर में असली रूप खोता जा रहा है। मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे विचारकों ने सही राह बताने का प्रयास किया तो अति उत्साही फिरकेबाजों ने अकीदत के नाम पर मुसलमानों को पक्का रूढ़िवादी बना दिया। आज के मुसलमान पढ़ाई लिखाई पर तो ध्यान कम देते हैं पर मजहबी विश्वास के नाम पर ताव जल्दी खा जाते हैं। ताजियेदारी का इस्लाम से कोई लेना देना नहीं हैं पर आलिमों का मौन, नित नये गुल खिलाता है। जो लोग सुन्नी होने का दम भरते हैं उन्हें अगर हजरत गौस पाक का फतवा बताया जाए तो आलिम खींसे निपौरने लगेंगे पर अपनढ़ सीधे मुसलमानों को इमाम हुसैन की शहादत व अकीदत के नाम पर उकसायेंगे और अपनी तरफ से कह देंगे- आज के दौर में दिल में यह जरूरी है। ऐसी बातों से इस्लाम का भला होने की जगह बुरा ही होता है। बिना सोचे समझे दुराग्रहों से ग्रसित होकर इस्लाम पर अंगुली उठाने के वैसे तो अनेकों उदाहरण मिल जायेंगे मैं आपके सामने एक ताजा उदाहरण लिख रहा हूं- 28 नवम्बर 2005, अजमेर में एक सभा को सम्बोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद के नेता अशोक सिंघल ने फरमाया- ''छुआछूत हिंदूधर्म की देन नहीं है, छुआछूत का आरम्भ इस्लाम के आगमन के साथ हुआ जिन लोगों ने इस्लाम धर्म को मानने से इंकार कर दिया, उन्हें अछूत की संज्ञा देकर बाहर कर दिया।'' सिंघल साहब, तरस आता आपके ज्ञान पर और दुराग्रहीपन पर, आपने रामायुग के शूद्र के कानों में पिघला शीशा डालने का प्रसंग तो पढ़ा ही होगा- नहीं पढ़ा हो तो जान लें शूद्रों के कानों में श्रुतिवाक्यांश पड़ गये इस अपराध के लिए उनकी हत्या कर दी। आपने जैन व बौद्ध धर्म के समय के हिंदू

समाज की ऊंच-नीच के बारे में नहीं पढ़ा इसलिए आपने छुआछूत का सारा दोष इस्लाम के नाम पर मंढ़ दिया। महावीर व बुद्ध की शिक्षाओं ने ऊंच-नीच मिटाया इसलिए अधिकांश शूद्र बौद्ध व जैनी बन गये।

यह बात सत्य हैं कि मुसलमान आक्रामक बन कर आये पर अछूतों ने इस्लाम दबाव में आकर कम अपनाया, ज्यादातर तो सवर्णों के अत्याचारों से तंग आकर मुसलमान बने। मैं स्वयं शाही गौत्र का ब्राह्मणवंशी हूँ -राजा दाहिर का वंशज! मेरे पूर्वजों ने तराइन के दूसरे युद्ध तक मुस्लिम अंाक्रान्ताओं का डटकर मुकाबला किया पर उस वक्त के उच्च वर्गों ने सिर्फ इस बात पर हमारे पूर्वजों से ओछा व्यवहार करना शुरू कर दिया कि-इनके पास कोई जमीन नहीं है और तराइन के दूसरे मैदान में हार गये। ओछी बातों से तंग आकर मेरे पूर्वज़ों ने बख्तियारूद्दीन खिलजी को आत्म समर्पण करके इस्लाम अंगीकार कर लिया।

सिंघल साहब ब्राह्मण संस्कृति की विशेषता रही हैं कि जिनसे स्वार्थ सिद्ध होता हो उन्हें गले से लगाये रखना अन्यथा वह अछूत है। सिंहल जी इस्लाम की बुनियाद भाईचारे व बंधुत्व पर आधारित है। थोड़ी देर के लिए नहीं चाहते हुए भी आपकी बात मान ली जाए तो भी आपसे कुछ बातें पूछनी हैं। अब तो आपने सब समझ लिया तो बताईये बाबू जगजीवन राम के जगन्नाथपुरी के मंदिर से दर्शन करके लौटने पर मूर्तियों को व मंदिर को गंगाजल से क्यों धोना पड़ा। अछूतों को मंदिर में प्रवेश दिलाने हेतु स्वामी अग्निवेश को आंदोलन क्यों करना पड़ रहा है? अछूतों को घाटों पर स्नान क्यों नहीं करने दिया जा रहा है? इस सबके पीछे कट्टरपंथी, धर्मान्ध, कूप मंडूक विचारधारा के लोगों का हाथ है। सनातन विचारधारा को जानने वाला तो ये कुकर्म कर ही नहीं सकता। दूसरों पर अंगुली सनातनी कभी नहीं उठाता है। अंगुली उठाने वाले 'हिंदू' भले ही हो सकते हैं। ऐसे अनेकों उदाहरण आये दिन देखने को पढ़ने को मिलते हैं।

पाठक गण कहीं यह ना सोच लें कि मैं 'हिंदू' विचारधारा के पीछे ही पड़ गया हूं। इस्लाम का लेबल लगाये हुए भ्रष्ट व्यक्तियों की कमी नहीं हैं जिनके कारण आज इस्लाम बदनाम हो रहा है और ऐसे ऐरे गैरे नत्थू खैरे टाईप के लोग इस्लाम पर अंगुली उठाने लग जाते हैं। इस पुस्तक में उन भ्रष्ट नामधारी मुस्लिमों के काले कारनामों का कच्चा चिट्ठा ऐतिहासिक तथ्यों से ढूंढकर आपके सामने रखा है। भारत में इस्लाम कट्टरपंथी आक्रांताओं से नहीं फैला, इस्लाम फैला सूफी संतों के प्रेम पूर्ण व्यवहार से। महान सूफी संत हजरत मइनूद्दीन चिश्ती-संजरी अजमेरी-शम्मे फिरोजा बनके आज भी विश्वबंधुत्व व भाईचारे के प्रतीक है पर उन्हीं के टूकड़ों पर पलने वालों के कारनामों से इस्लामी जगत की नजर शर्म से झूक जाती हैं।

सुदर्शनजी, मैं आपकी बात से पूर्ण सहमत हूं कि इस्लाम का भारतीयकरण होना

चाहिए क्योंकि इस्लामी संस्कृति का दम भरने वालों ने इस्लाम का हिंदुआकरण कर लिया है आपसे मेरा विनम्र निवेदन हैं कि आप इस्लाम पर खूब अंगुली उठायें पर भारतीयता के संदर्भ में, हिंदुत्व के संदर्भ में नहीं।

एक निवेदन और करना चाहता हूं आदरणीय सुदर्शनजी व उन्हीं के जैसी विचारधारा रखने वाले सज्जनों से कि- आप किस अधिकार से इस्लाम में परिवर्तन व परिवर्द्धन (सुधार) की बात कर रहे हैं? इस्लाम में परिवर्तन का अधिकार किसी को नहीं है। अब रहा परिवर्द्धन का प्रश्न सो इस्लामी कानून का पूर्ण ज्ञाता ही उस पर बात कर सकता है।

जो भी व्यक्ति सोचता हैं कि मेरी विचारधारा ही सत्य है। यह सोचना भ्रामक है। अंतिम सत्य ईश्वर है बाकी सब परिवर्तनशील है और जो परिवर्तनशील है वो पूर्ण सत्य नहीं है। कट्टरता से कोई बात मनवाई नहीं जा सकती है। औरंगजेब ने कट्टरता का सहारा लिया। उसने इस्लाम का कौनसा भला कर दिया-उसकी कट्टरता से नफरत फैलाई जबकि इस्लाम का पैगाम भाईचारा व मेलजोल, प्रेमभाव ही है।

सुदर्शनजी, आपको तहेदिलबाअदब नमन। आपने ही मुझे आज के इंसान को समझने के लिए प्रेरित किया और अब मैं इस पुस्तक के माध्यम से आपको आमंत्रित करता हूं- आईये अजमेर और इस्लाम के वर्तमान स्वरूप को देखिए प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा गरीब नवाज के आस्ताना-ए-आलया व इर्द-गिर्द। जो 1426 वर्ष पूर्व दुनियां में प्रसारित हुआ। ठीक उससे विपरीत कब्रपरस्ती में सबके सब मगन है- मजारों पर मन्नतें मांगी जा रही हैं- चढ़ावे चढ़ाए जा रहे हैं, बच्चों के चुगली रखी जाकर मजारों पर बाल उतारे जा रहे हैं, बच्चों को तराजू में तौला जा रहा है- इन कामों का विरोध करने पर उन्हें वहाबी का फतवा दिया जा रहा है, ताने कसे जाते हैं। ये सब बातें इस्लाम सम्मत नहीं हैं। दरगाहों से जुड़े व्यक्तियों की नजर अर्जुन की नजर के समान (अर्जून की नजर आंख की पुतली है) सिर्फ पैसों पर ही है। इस्लाम जाए भाड़ में इन लोगों को पैसा चाहिए, सिर्फ पैसा, चाहे कुछ भी करना पड़े। पैसों के लिए इस्लाम को ताक में रखकर नमाज छोड़ देते हैं, दाढ़ी तो दो प्रतिशत ही रखते हैं तस्करी में फंसे हुए आस्ताने में बदसलूकियां करते पकड़े जाते हैं। जूते खाते है, फिर भी मासूम बने फिरते हैं।

इन लोगों को देखकर इस्लाम की साधारण जानकारी रखने वाले व्यक्ति के मुंह से भी अंचानक यही निकलता हैं कि ये कैसे मुसलमान है? अगर कोई सुबह से शाम तक दरगाह शरीफ अजमेर में मौन रहकर अवलोकन करता रहे तो पायेगा कि यहां तो इस्लाम का उल्टा तरीका है। पैगम्बर साहब की कब्र मुबारक पर ऐसा कुछ भी नहीं होता है जो भारत में कब्रों पर खासकर अजमेर दरगाह में। इसलिए सुदर्शनजी, आप इस्लाम की फिक्र तो छोड़िए भारतीय बनियेगा, हिंदू नहीं। सबसे कहो भारतीय

बनों, कहने से पहले स्वयं को निराकार उपासक बनाना जरूरी हैं। अल्हम्दो लिल्लाह कहो या ॐ नमः शिवाय पर प्रतीक पूजा व व्यक्तिपूजा से दूर रहो यही भारतीयकरण है।

शुद्ध इस्लाम में रूपान्तरीकरण में अकीदत (विश्वास आस्था) के नाम पर दरगाहों से जुड़े व्यक्तियों की बहुत बड़ी (अहम) भूमिका रही हैं। इस पुस्तक में सुल्ताने हिंद ख्वाजा गरीब नवाज के आस्ताने से जुड़े लोगों की करतूतों का उल्लेख ज्यादातर किया गया। इनके क्रिया कलाप एक दूसरे पर झपटा मारने वाले ज्यादा नजर आए। एक दूसरे की टांग खिंचते-खिंचते खुद भले ही निर्वस्त्र हो जाएंगे पर अपनी जिद को नहीं छोड़ेंगे। अपने हक हकूक की आपस की लड़ाई में इन्होंने चंद्रभाट की पोथी कोर्ट में प्रस्तुत करके स्वयं की वंश परम्परा को उजागर कर दिया। पर आज की तारीख में स्वयं मानने के लिए तैयार नहीं हैं। यह उनका निजी मामला है। पर यह सत्य हैं कि इन्होंने अपनी वंश परम्परा छिपायी हैं।

इस पुस्तक का प्रारूप कुछ विद्वानों ने देखा-पढ़ा और जो सुझाव दिये उनके अनुरूप पुनरावृति दोष से मुक्ति पाने का प्रयास किया और एक ऐसा शब्द मुझे हटाना पड़ा जिस शब्द से भंयकर जहर घुल रहा था। मैं अपने उस्ताद मरहूम (स्वर्गीय) नसीरूद्दीन साहब शेख का शुक्रिया अदा करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। आपने बेधड़क कहने की कुव्वत मुझे बख्शी। अल्लाह उन्हें जन्नतुल फिरदौस अता फरमावें।

अंत में जीवन संगिनी हज्जन जैतून बेगम जौहर का भी शुक्रिया जिसने जिंदगी के हर मोड़ पर साथ तो निभाया ही है पर लेखन कार्य में आयी बाधाओं से संघर्षरत रहने में भी सहयोग दिया। अंत में उन सभी महानुभावों का तहेदिल से शुक्रिया जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में मेरे लेखन को संवारा।

एक बार फिर मेरी अर्ज हैं- किसी का दिल दुःखाना मेरा मकसद नहीं है, प्रसंगवश कहीं कड़वी लगी तो बुरा मत मानना। अल्लाह से दुआ हैं हम सब बंदो को एक व नेक बनावें। दूसरों पर अंगुली उठाने के स्थान पर स्वयं की तरफ उठी तीन अंगुलियां के संकेत को समझकर पर छिद्रान्वेषी के स्थान पर स्वछिद्रान्वेषी बनें। मैं सुधरूं, समाज सुधरेगा- समाज सुधरेगा तो राष्ट्र व सम्पूर्ण मानवता सुधरेगी। मानव-मानव में प्रेम रस छलके।

!!आमीन!!

- जमालुद्दीन जौहर
कविता कुञ्ज, झरणेश्वर मार्ग,
मोड़ का निम्बाहेड़ा,
जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान)-311026

विषय सूची

उत्पात की जड़- आस्था

आस्था के वशीभूत आदमी कब उत्पात् कर बैठे ? कोई गारंटी नहीं है। गिरगिट तो परिस्थितिवश व वातावरण के कारण रंग बदलता है पर आस्था कब रंग बदल दे ? कोई नहीं कह सकता। आस्था, विश्वास, अकीदत समान भाव वाले शब्द है फिर भी इसकी कोई निश्चित परिभाषा नहीं है क्योंकि भावों के बदलने की कोई मर्यादा नहीं है।

आदिकाल से आज तक आस्था के नाम पर क्या नहीं हुआ ? आस्था के नाम पर पूजा स्थल तोड़े गये- 'क्रूसेड' (धर्मयुद्ध) हुये, मूक जानवरों व स्वयं नर की नर बलियाँ आस्था के वशीभूत ही दी गई। आस्था के नाम पर लोगों को 'बनाना' बहुत आसान है- चाहे जितना धन इकट्ठा करो- मौज करो, बिगड़ैल सांड की तरह 'केरायले पेट' (ऐबलेपन) करते रहो, कोई कहने वाला नही है, अगर कोई मिल जाये तो नास्तिक का 'फतवा' दाग दो- कोई चूँ तक नहीं करेगा।

आस्था कब किस करवट बैठ जाये ? पता नहीं चलता है। बक्सर में ताजियों का जुलूस निकल रहा था, अचानक एक आस्था वान की आस्था ने करवट बदली- कपड़े के थान पर चिपके महावीर स्वामी के चित्र को धागे में पिरोकर रास्ते में बाँधकर एलान[1] कर दिया- ''मेरी आस्था है यह चित्र यहाँ से हटना नहीं चाहिए।'' बिहार सरकार के एक मंत्री की मौजूदगी में यह काम हुआ। जुलूस रूक गया। प्रशासन ठप्प हो गया। यह है आस्था का चमत्कार।

आस्था पैदा करने के कई तरीके हैं- उनमें नारों की बात ही निराली है। नारे सुनने और पढ़ने में बड़े भले लगते हैं (अर्थ चाहे जो भी निकले)। आप तो अच्छा सा नारा गढ़कर फेंक दीजिये- जमाना झूम उठेगा। नारों के

---

1. घोषणा

करामात देखिये और विचारिये- किस प्रकार आस्था उत्पन्न की जाती है- उदाहरणार्थ-

''नहीं निरोधक रोक सकेंगे- तूफान उठा है महा भयंकर,
गाँव-गाँव बजरंग चला है- शक्ति शिला की ले प्रलयंकर।''

इस नारे में सार्थकता नजर नहीं आ रही है क्योंकि- बजरंग की शिला पर संजीवनी थी जिसका उद्देश्य जीवन रक्षा था। राम मंदिर हेतु जो शिलाएँ जुटायी गई उनसे सृजन ही होगा फिर उन्हें प्रलयंकारी बताना, बेमतलब की बात है। अगर इस 'प्रलयंकारी' में कहीं सार्थकता छिपी है तो प्रबुद्ध लोगों की समझ में तो आ ही नहीं सकती, केवल अंध विश्वासी आस्थावानों को सार्थकता नजर आयेगी। आम भारतीय शिक्षा से वंचित है अतः निश्चित रूप से प्रलय मचाने की प्रेरणा ही लेगा।

नारों का कोई खास अर्थ नहीं होता है- बस एक ही उद्देश्य है लोगों को गुमराह[1] करना। नमूना देखिये- ''ख्वाजा का दामन[2]- नहीं छोड़ेंगे[3]।'' इस नारे को समझना है तो मानसिक रूप से आप अजमेर आ जाइये। इस नारे को लगाते हुये आप उन लोगों को पायेंगे जो अधिकांश दाढ़ी मुण्डे है, सुरा-सुन्दरी का जिन्हें पूरा शौक है। अश्लील फोटू काण्ड के कर्ताधर्ता इन्हीं में से है। नशीले पदार्थों की तस्करी करना इनका धंधा है। बलात्कार करना इनकी 'हॉबी' है। बड़ी मासूमियत से ये लोग अकीदत पैदा करने के लिए नारा लगाते ''ख्वाजा का दामन....।'' भोले भाले यात्री आस्था के चक्कर में फंस जाते है। ख्वाजा के दामन (शिक्षा) से इन लोगों को कोई वास्ता[4] नहीं। ये लोग रोजे के है ना नमाज के, दुश्मन है अनाज के। नमाज के वक्त इनको मेहमान पटाते हुये देखा जा सकता है। इन लोगों का इस्लाम से सिर्फ इतना ही वास्ता है कि ये गरीब नवाज के दर पर अड़े हुये हैं। ख्वाजा के दामन का वास्ता देकर ये इतने कुकर्म करते है कि मानवता काँप उठती है। कई अपराधिक मामले न्यायालय में लंबित है फिर भी कहते है ''ख्वाजा का दामन-नहीं छोड़ेंगे। मेरी समझ से तो ख्वाजा इनकी नाटकबाजियों से उकताकर अजमेर छोड़कर मदीना चले गये तभी तो ख्वाजा की गुम्बद के नीचे ये कुकर्मी पल रहे हैं।

---

1. भटकाना, 2. पल्ला, 3. पूरे नारे का भावार्थ है - गरीब नवाज की बताई राह नहीं छोड़ेंगे, 4. सरोकार

आस्था उत्पन्न करना सीखना हो तो अजमेर आइये। पग-पग पर आस्था उत्पन्न करने के गुर देखने को मिल जायेंगे। यहाँ दो उदाहरण मुलाहिजा फरमाइये[1] (1) दरगाह से मदार गेट की तरफ बढ़िये थोड़ी दूरी पर बाएँ हाथ की तरफ एक मस्जिद-खैरादियान लिखा हुआ। दरवाजे पर ताला पड़ा हुआ मिलता है। मस्जिद का व्यक्तिगत उपयोग हो रहा है। दरवाजे के पास हिन्दू देवी देवताओं के चित्रों वाली टाइले लगी हुई एक पानी की प्याऊ बना रखी है। यह आस्था कभी बखेड़ा खड़ा कर सकती है।

आस्था के नाम पर धर्म की आड़ लेकर गुलछर्रे उड़ानेवाले सरकारी कर्मचारियों के रंग-ढंग सबसे अलग ही है- थोड़ा आधार मिलते ही सरकारी कार्यालय परिसर में मंदिर निर्माण की योजना शुरू हो जाती है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के प्रांगण में मंदिर निर्माण हेतु परीक्षकों को जबरदस्ती आस्थावान बना दिया गया। वाउचर में अपनी तरफ से छपवा दिया गया- मंदिर निर्माण हेतु स्वेच्छा से दिया गया चंदा-पैसे काटकर चैक भेज दिया जाता है। मेरे जैसे शुद्ध निराकार उपासक को भी राजस्थान मा.शि. बोर्ड ने प्रतीक पूजा हेतु मंदिर निर्माण में सहभागी बना दिया। मीलों-फैक्ट्रियों में तो यह आम बात है। यह सब आस्था के चमत्कार है।

झाड़ फूंक करने वाले ओझे-सयाने-बाबा लोग आस्था का भरपूर लाभ उठाते हैं। चौड़े धाड़े सीधे-साधे लोगों का धन-माल आबरू इज्जत लूट रहे। जनता जानकर भी आस्था के कारण बेवकूफ बनती जाती है एक बार धोखा खाकर भी नहीं संभलती। आस्था अंधी होती है- आगे पीछे, दाएँ-बाएँ कुछ भी नहीं सूझता है। धन दुगुना करने के चक्कर में अच्छे-अच्छे आस्थावानों को लुटते देखा गया है। खुद की गोद हरी[2] करने के चक्कर आस्था के अंधे मासूमों की हत्या कर देते हैं- दूसरों की गोद उजाड़ देते हैं। आस्था के सहारे सभी प्रकार के उत्पात् किये जाते रहे हैं। आज भारत में जो खून खराबा हो रहा है उसके पीछे आस्था का बहुत बड़ा हाथ है।

मनुष्य बुद्धिहीन हो जाता है तभी आस्तिक बनता है। आस्तिक बनते ही उसकी तर्क शक्ति समाप्त हो जाती है, 'अहम' की तुष्टि के अलावा आस्तिक को कुछ भी नहीं सूझता है, चाहे कितना ही विनाश उसे करना

---

1. देखिए, 2. संतान प्राप्त करने हेतु

पड़े। अंत में आस्था के नाम पर उल्टे-सीधे हथकण्डे करने वाले स्वयं का भी विनाश का कारण बनते है। आस्था उच्च कोटि की सनक है। कब क्या कर बैठे ? आस्थावान को कुछ भी नहीं कहा जा सकता है ? ईश्वर में आस्था सर्वोच्च कोटि की सनक है, दुनियाँ को बेवकूफ बनाने के लिए आस्तिक होने का ढोंग आदिकाल से होता आ रहा है।

समाज में जो लोग काम किये बिना दूसरों की कमाई पर मौज उड़ाने में लगे हुये है वो आपको धार्मिक ढोंग करते नजर आयेंगे। ये धार्मिक व्यक्ति पूरी तरह परजीवी है। आज राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याएँ है, इनके पीछे शत प्रतिशत इन परजीवियों का हाथ है। आस्था के नाम पर ये अधार्मिक कुकृत्य कर रहे।

पंडित-मुल्लाँ पादरी, चोराँ का सिर मोर।
चोर हिलाते हाथ-पग, ये कामाँ का चोर॥
पंडित मुल्ला पादरी, सुँ चोर सूदो जाण।
ऊ कर खावे बापड़ो, ये सुवे खूँटी ताण।

समानान्तर रेखाएँ मिट सकती है

बात गणित की नहीं, उन वैचारिक रेखाओं की है जो भारत में सनातन व मुस्लिम संस्कृतियों के रूप में बनी हुई है। दिमाग की सभी खिड़कियों को खोलने के साथ व्यक्ति अपने पूर्वाग्रहों व दुराग्रहों को त्याग दे तो सभी प्रकार के झगड़े मिट सकते है। आज के युग में- विशेषकर भारत व पड़ौसी देशों एशिया माइनर व उप महाद्वीप में जो झगड़े है। उनके मूल में तुच्छ अहं भाव है जो सिर्फ यह सिखाता है कि- 'मेरा मत ही श्रेष्ठ है' जबकि अंतिम सत्य के रूप में सर्वश्रेष्ठ किसी को भी नहीं माना जा सकता है क्योंकि हर युग की व्यवस्था में देश-काल व स्थिति के अनुसार परिवर्तन व परिवर्धन होते रहे हैं और होते रहेंगे।

जीव का विकास कैसे ? कहाँ हुआ ? अपने-अपने तरीकों-विचारों से हल ढूँढने के प्रयास हुये और होते रहेंगे। मानव विकास-पथ पर आगे बढ़ते-बढ़ते धरती से उपग्रह-ग्रहों तक पहुँच बना चुका है और कल ना जाने ये हजरते इंसान कहाँ पहुँचेगा ? कोई नहीं कह सकता है कि आज के मानव का उद्भव स्थल सिर्फ 'अमुक' स्थान ही है। पुराविदों की अब तक की खोजों के आधार पर यह पता चलता है कि अफ्रीका-एशिया-यूरोप की धरा पर आदि मानव फला फूला।

हजरते इंसान ज्यों ज्यों प्रकृति से संघर्ष करने लगा, दो बातें पैदा हुई- भय व लालच। इन दोनों बातों से प्रभावित होकर अनसुलझे रहस्यों की चापलूसी- आराधना करने लगा। प्राकृतिक रहस्यों की पूजा-प्रार्थना होने लगी। प्रकृति का मानवीकरण होने लगा। देवी-देवता, अवतार-पयम्बर की अवधारणा पैदा हुई। प्रतीक पूजा होने लगी, मत-मतान्तरों का जन्म हुआ। धार्मिक समानान्तर रेखाएं बढ़ने लगी- एक दूसरों को मिटाने के लिए ! यही प्रवृति सभ्य समाज के लिए घातक सिद्ध हो रही है।

जहाँ ये धार्मिक विचारधाराएँ एक दूसरे के अस्तित्व मिटाती नजर

आ रही है वहाँ आवश्यकता है एक रेखा (मत) दूसरी रेखा की प्रगति को प्रोत्साहित करे क्योंकि सभी धार्मिक मत-मतान्तरों का आधार भय व लालच ही है। स्वर्ग का लालच, नरक का भय सभी मतों में है।

अनेकान्तवादी नजरिये से विचारिये- जीवन में मानव दुःख से बचकर सुख चाहता है और मरने के बाद भी काल्पनिक नरक से बचकर काल्पनिक स्वर्ग की कामना करता है। मोक्ष की कल्पना करके जन्म मरण के चक्कर से छूटना चाहता है। ये सब बातें काल्पनिक है फिर भी यह काल्पनिक सुख तभी संभव है जब इंसान एक दूसरे से सहयोग लेना व देना सीखें। प्रागैतिहासिक युग में सहयोग का आदान-प्रदान होता था इसलिए शांति थी।

प्राचीन सभ्यताओं से प्राप्त अवशेषों, भवनों, बर्तनों में बहुत कुछ समानताएँ मिलती है। जो अंतर दिखाई देता है वह दूरी के कारण क्रियान्वयन शैली की भिन्नता है और अंतर के लिए स्थान विशेष की परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार है। डॉ. बी.जी. सिद्धार्थ के अनुसार- ''नेवाली कोरी (तुर्की) सभ्यता का वैदिक सभ्यता से गहरा रिश्ता था। वैदिक सभ्यता के देवताओं के नाम ''नेवाली कोरी'' से प्राप्त उत्कीर्ण लेखों में पाये गये। नगरों के नामों पर संस्कृत का प्रभाव अभी भी है।''

डॉ. सिद्धार्थ का मत सच्चाई के काफी नजदीक है। उन्होंने संभावना प्रकट की है कि टर्की व कुर्द (एशिया माइनर व मध्य एशिया की सभ्यता के निर्माता योरोपीय कुल के आर्य थे। प्रो. एच. होटमेन का भी करीब-करीब यही मानना है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है- तुर्की के आस-पास 'कोरी सभ्यता' के निर्माता अरबी मूल के व्यक्तियों से सर्वथा भिन्न थे।

आर्य व अरबी मूल के व्यक्ति अलग-अलग नस्लों के थे फिर भी उनमें कला व संस्कृति का आदान-प्रदान होता था, यह बात जरूर थी कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान विस्तृत व लगातार नहीं रहा। आर्य मध्य से पूर्व व पश्चिम की तरफ बढ़ते गये- अपनी सभ्यताओं को बढ़ाते गये दूसरी तरफ अरबी उत्तर की तरफ अग्रसर हुये। आर्यों व अरबी मूल के व्यक्तियों के चिंतन में बहुत कुछ समानताएँ रही पर ज्यों-ज्यों दूरियाँ बढ़ती गयी वैचारिक भिन्नता आती गयी- यह परिवर्तन व परिवर्द्धन का परिणाम थी।

स्व. भवानी सिंह जी चुण्डावत का मत है कि- ''ईरान व भारत के आर्य सूर्य के उपासक और एशिया माइनर के निवासी चन्द्र माँ के उपासक थे।'' चुण्डावत ने आगे बताया कि भारत में सूर्यवंश व चन्द्रवंश का विकास,

वैदिक सभ्यता के पूर्ण विकास के बाद हुआ। भारतीय आर्यों को सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी उनकी वंश परंपरा से कहा गया व अरबों को चन्द्रवंशी (सेमेटिक) कहा गया। हेमेटिक व सेमेटिक शब्द सूर्य व चन्द्र के सूचक है।

वैचारिक भिन्नता व दूरी के कारण संपर्क में कमी आयी और आर्यों ने अरबों व द्रविड़ों को मलेच्छ कहना व ग्रंथों में लिखना शुरू कर दिया। यूनानियों तक का (जो आर्य नस्ल के ही थे) भी यवन व मलेच्छ कहना व लिखना शुरू कर दिया। यह मानव की प्रकृति है- अपनों से भिन्न मत वालों को हेय नजर से देखना। आर्य वैदिक युग तक प्राकृतिक शक्तियों के उपासक थे, प्रतीक पूजक (मूर्ति पूजक) नहीं थे। सिंधु सभ्यता से आर्यों ने प्रतीक पूजा अपनायी फिर भी उन्हें हेय नजरों से देखा। मौर्य युग में जिन विद्वानों ने अहिंसा का संदेश संपूर्ण एशिया में फैलाया, उनके वंशज जब मूर्ति पूजा (प्रतीक पूजा) की अवधारणा लेकर भारत आये तो उन्हें 'वृषल' (भ्रष्ट) कहा गया। आज भी मध्य एशिया से लौटकर आने वाले विद्वानो के वंशजों को शाक्य द्वीपीय ब्राह्मण कहा जाता है जो जैनियों के 'सेवक' भी कहलाते है।

आर्यों ने अपनी उपासना पद्धति का विकास प्रार्थनाओं व यज्ञों के रूप में किया उधर अरब व एशिया माइनर के लोग मूर्ति पूजा करने लगे। इसी वास्ते आर्य लोग उन्हें मलेच्छ कहने लगे। बाद में मलेच्छ शब्द का प्रयोग द्रविड़ों, मंगोलों, ईरानियों व युनानियों के लिए भी प्रयोग में आने लगा- इनमें ईरानी व यूनानी तो आर्य मूल के ही थे, फिर भी अहं भाव के कारण समानान्तर रेखाएँ बनने लग गयी। यही बात अरबी लोगों की है- आज भी अहं भाव के कारण अरबी लोग अपने आपको अन्य देशों के मुसलमानो से उच्च मानते हैं।

भविष्य पुराण के 'प्रति स्वर्ण पर्व' में मलेच्छ राजाओं के वर्णन से दो बातें स्पष्ट होती है- (1) भारतीय आर्य अपनी सभ्यता का प्रभाव क्षेत्र एशिया माइनर व मध्य एशिया को मानते थे- और सीमित क्षेत्रों में देशाटन भी होता था। (2) दूसरी बात बाइबिल व कुरान में जिनको पैगम्बर बताया है उन्हें भविष्य पुराण ने परम विष्णु भक्त और उनकी बताई गई शिक्षाओं (निराकार एकेश्वरवाद) को मोक्ष का मार्ग बताया। इससे पता चलता है कि प्राचीनकाल में मूर्ति पूजा को अच्छा नहीं माना जाता था पर कालान्तर में प्रतीक स्वरूप मूर्ति पूजा प्रारंभ हो गई। भारत में मूर्ति पूजा को बढ़ावा उन

बौद्ध भिक्षुओं से मिला, जो एशिया माइनर व मध्य एशिया में गयें। वहाँ प्रचलित बहुदेव वाद व मूर्ति पूजा को देखकर शाक्य मुनि (महात्मा बुद्ध) की मूर्तियाँ बनाने लग गये।

जो दूरियाँ आदि युग में शुरू हुई तो ऐसी समानान्तर रेखाएँ बन गई जिनकी स्थिति को देखकर तरस आता है। जो लोग बहुदेव व मूर्ति पूजक थे वे एक ईश्वर के निराकार के रूप में आराधना करने लगे और जो लोग निराकार (ॐ-निराकार, अजर-अमर, अलख निरंजन है) की उपासना करते थे मूर्ति पूजा करने लग गये। दोनो ही विचारधारा के लोगों ने अपने पुराने तुच्छ 'अहं' को नहीं छोड़ा। आज वो ही तुच्छ अहं छलक-छलक कर दंगे फसाद करवा रहा है।

मुसलमान लोग निराकार उपासना का दम जरूर भरते हैं पर भारतीय उप महाद्वीप-भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश-नेपाल के मुसलमान धड़ल्ले से मजारों पर जाकर मनौतियाँ मांग रहे हैं यह निराकार (अल्लाह) की उपासना पर आघात नहीं तो क्या है ? मजारों के निर्माण व मजारों पर लगने वाले मेलों (उर्स) को लेकर कितने फसाद होते हैं ? ताजियों के जुलूस के नाम पर सैंकड़ों दुश्वारियाँ[1] पैदा होती है। विचारणीय प्रश्न है इन बातों का (मजारों पर की जाने वाली रस्में व ताजियेदारी) से मूल इस्लाम का कोई संबंध नहीं है। फिर इस्लाम के नाम को क्यों बदनाम किया जा रहा है ?

सनातनी विचारधारा के लोग कहने को तो कहते हैं- ''गायत्री माता व यज्ञ पिता है'' पर आजकल निराकार पूजा से ज्यादा झुकाव प्रतीक पूजा की तरफ है। क्या ये केवल नाम के सनातनी नहीं है ? क्या ये भाई प्राचीन अरबों की मूर्ति पूजा पद्धति के अनुयायी नहीं है ? हैं तो ये रगड़े क्यों है? सनातनी व मुसलमान दोनो ही आज एक दूसरों के प्राचीन विचारों को मान रहे हैं पर तुच्छ 'अहं' के वशीभूत मूल रास्तों से हटकर उपासना पद्धतियों के नाम पर रगड़े कर रहे हैं। बुतपरस्ती छोड़ कब्र पूजा कर रहे और उधर शुद्ध सनातन को छोड़कर मूर्ति पूजा को अपनाकर नित नये तरीके अपना रहे हैं।

आवश्यकता है अहं को त्यागकर सहयोग व सद्भावना की राह को पकड़ने की तभी जाकर ये समानान्तर रेखाएँ मिटेगी।

---

1. कठिनाइयाँ

राजनीति के रोग से......

राजनीति का रोग ना लगे तब तक ठीक है जब राजनीति का रोग अच्छे भले को लगता है तो वो भी बदनाम हो जाता है। गुनाह[1] और बेलज्जत[2] वाली बात हजरत जैनुल आबेदीन अली खाँ सज्जाद नशीं ख्वाजा गरीब नवाज पर पूरी तरह लागू होती है। उनकी अच्छी छवि पर राजनीति का कीचड़ लोग उस वक्त उछालने लगे जब आबेदीन साहब आडवाणी के "भारत उदय" यात्रा रथ पर दिखाई दिये। बातचीत, विचार-विमर्श भी हुआ होगा। इसमें कोई दो राय नही है। गद्दी नशीन, पठासीन, धर्माचार्य (चाहे वो किसी मत के हों) समय-समय पर राजनीति को दिशा बोध देते रहे हैं- आज से नहीं, युगों-युगों से।

धार्मिक व्यक्ति की राजनीति में उपस्थिति समाज हित की बात होती है पर जब राजनीतिज्ञ धर्म व धार्मिक आस्था का प्रदर्शन करता है तो समाज को बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा करना मात्र है। सनातन धर्मी का दरगाह की जियारत करना और एक मुस्लिम का पुष्कर सरोवर की अर्चना करना समाज को गुमराह करके अपने पक्ष में करना मात्र है। उमा भारती ने गरीब नवाज के आस्ताने पर हाजरी देकर कहा- "मैं इन्हें बाबा अमरनाथ मानती हूँ।" यानि कि उमा भारती की आस्था में कोई अन्तर नहीं है फिर भी मुस्लिम सम्प्रदाय को प्रभावित किया। इसी तरह रमजान खाँ व हफीज मोहम्मद द्वारा पुष्कर सरोवर की अर्चना से उनकी मूल आस्था में कोई अंतर नहीं आया। ये हरकते तो लोगों को आस्था के नाम पर बहलाना मात्र है।

राजनीति के रोग से धर्मनीति सड़ जाती है जबकि धर्म नीति से राजनीति सँवर जाती है।

---

1. गलत काम, पाप, 2. बिना स्वाद का

जैनुल आबेदीन के आडवाणी के रथ पर जाने का विरोध केवल सुर्खियों में बने रहने का धतंगा मात्र है। जैनुल आबेदीन साहब केवल गरीब नवाज की गद्दी के वारिस मात्र है, इस्लाम धर्म के अधिकारिक आलिम नहीं है। उनका विरोध करनेवाले गरीब नवाज के खादिम है। ये लोग राजनीति व धर्मनीति दोनों से परिचित नहीं है वे तो परिचित है तुच्छ स्वार्थ नीति से। लेश मात्र भी इनके स्वार्थ को ठेस पहुँचने पर बिगड़ैल साँड की तरह भड़क उठते है- अनर्गल प्रलाप करने लगते हैं। इनका प्रलाप इनको स्वयं को हिटलर के साथी गॉयबल्स का अनुयायी प्रकट करता है। झूठ को दोहराते रहो- दोहराते रहो एक दिन लोग सत्य मानने लगेंगे। यह गॉयबल्स का दर्शन और इस दर्शन के सच्चे अनुयायी है ख्वाजा के खादिम।

गॉयबल्स के दर्शन का उपयोग खादिमों ने जमकर दो बातों के लिए किया- अपनी स्वयं की वंशानुगत असलियत को छिपाने के लिए और सज्जाद नशीन को बदनाम करने के लिए। इन दोनों बातों में न तो धर्म नीति है और न राजनीति है तो केवल तुच्छ स्वार्थ नीति। कहने वाले ने क्या ही खूब कहा 'सच्चाई छिप नहीं सकती झूठ उसूलों से....।'

लाखा व टेका के ये ही वंशज मौका देखकर भारत के बाहर वाले फखरूद्दीन गुरदेजी व मोहम्मद यादगार के वंशज बन बैठे और समय-समय पर खुराफाती बातें करते रहे हैं। अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए ये खादिम इतने निम्न स्तर पर पहुँच गये कि जैनुल आबेदीन व उनके परिवार वालों व पूर्वजों को ख्वाजा साहब के सिजरे (वंश परंपरा) का भी नहीं माना।

प्रिवि कौंसिल व अन्य न्यायालयों ने गद्दी के दावेदारों के मध्य चले मुकदमों में जैनुल आबेदीन व अन्य पक्षकारों को ख्वाजा साहब का वंशज ही माना है। ये लोग ख्वाजा के वंशज नहीं होते तो सज्जाद नशीनी के दावेदार कैसे बने ? जैनुल आबेद्दीन साहब शुद्ध सैय्यद है- ख्वाजा साहब की 22 वीं पीढ़ी में। ख्वाजा साहब की माँ हजरत मोहम्मद सल. के नवासे[1] इमाम हुसैन की ग्यारवीं पीढ़ी में व इनके पिता इमाम हसन की 12वीं पीढ़ी में जन्मे। इस तरह हसन व हुसैनी दोनो सिजरों[2] से आबेदीन आले रसूल[3] है। आले रसूल की तौहीन[4] से सभी मुस्लिम जगत को ठेस पहुँचेगी इसलिए

---

1. दोहिते, 2. वंश परम्पराओं, 3. पैगम्बर के दोहितों की वंशावली में है, 4. बेइज्जती

सबसे पहले उन खादिमों को तौबा[1] करके माफी माँगनी चाहिये, जिन्होंने स्वामी चैनल अजमेर पर आबेदीन साहब को ख्वाजा का वंशज नहीं बताया। जैनुल आबेदीन साहब की शान में गुस्ताखी[2] ख्वाजा सा. की शान में गुस्ताखी है यह काम कमजर्फ[3] लोग ही कर सकते हैं।

आबेदीन आडवाणी के मंच पर गये तो खादिम एकदम बौखला गये। बुराई की एक बहुत बड़ी विशेषता है- बुराई कभी मरती नहीं। अँग्रेजी काल में खादिमों की करतूतों पर मुकदमेबाजी भी हुई पर इनमें सुधार नहीं हुआ। ये नकटे होकर भी अपनी नाक की बातें करते ही रहते हैं।

''इस्लाम में कोई धार्मिक गुरू पद नहीं है।'' यह बात स्वामी चैनल अजमेर पर एक खादिम ने कही। कहने से पहले कर्बला[4] की वो तारीखी बात भूल गये- जब इमाम हुसैन को यजीद का संदेश मिला- ''हम से बैत[5] कर लो'' सारी राजनैतिक सत्ता यजीद के पास थी फिर वो हुसैन की बैत क्यों चाहता था ? और क्या जवाब दिया हजरत इमाम हुसैन ने ? आपने कड़ककर कहा- ''हम शराबी व बदचलन से बैत नहीं हो सकते।'' बैत होने का मतलब यजीद को धार्मिक रूप से रहबर[6] मानना इस्लाम में खलीफा, इमाम, पीर-रहबर, सज्जाद नशीन ये सब धार्मिक पद नहीं तो क्या है ? गरीब नवाज भारत में धर्म गुरू की हैसियत से आये न कि आक्रमणकारी बनकर। सूफीवाद का विकास इस्लामी परंपरा में हुआ। सूफीवाद में गुरू की महिमा बहुत ऊँची है। अगर गुरू पद की आन बान शान नहीं मानते हो तो क्यों बैठे हो ख्वाजा की चौखट पर?

धर्म नीति से राजनीति का संचालन होना चाहिए- यह सभी के लिए अच्छी बात है, पर राजनीति से अगर धर्म को संचालित करने का प्रयास किया जाता है तो निश्चित रूप से विकार ही पैदा होगा। जैनुल आबेदीन साहब अगर राजनेताओं को आशीष देते हैं, मिलते हैं तो अच्छी बात है। अगर सज्जाद नशीन का मिलना व्यक्तिगत लाभ-पद प्राप्ति के लिए है तो बहुत बुरा। अजमेरी खादिमों के राजनैतिक क्रियाकलाप व्यक्तिगत है अतः आले रसूल पर कीचड़ उछालना बंद करो।

---

1. दुबारा ऐसा नहीं करूंगा, 2. धृष्टता, 3. निम्न स्तर, 4. वो स्थान जहां इमाम हुसैन ने शराबी व बदचलन को धर्मगुरु मानने से इनकार व सच्चाई के लिए साथियों सहित शहीद हो गए। 5. हाथ में हाथ देकर धर्म गुरु-खलीफा मानना, 6. मार्गदर्शक

गर्व से कहो, अलहिन्द-जिन्दाबाद !

मुझे आपसे कुछ कहना है- कुछ क्या बहुत कुछ कहना है- सनातनियों, बौद्धों, जैनियों, सिक्खों, इस्लामियों, पारसियों, यहुदियों आस्तिकों व नास्तिकों से। जो लोग भारतीय सीमा में निवास करते हुये भारतीय संप्रभुता से शासित होते हैं वे सब अलहिन्दु, अलहिन्दी, अल हिन्दुस्तानी, भरत-भारतीय अथवा इण्डियन है। इसलिए गर्व से कहे अलहिन्द पायन्दाबाद या अल हिन्द जिन्दाबाद या जय भारत।

हिन्दू शब्द का अर्थ अरबी, फारसी व तुर्की शब्द कोष में अच्छा नहीं है पर इस शब्द को भारतीयों ने सिन्धु से हिन्दू के अर्थ में स्वीकार किया है- यह राष्ट्रीयता का द्योतक शब्द है किसी धर्म की संज्ञा नहीं है। जो लोग इस शब्द को धर्म की संज्ञा मानते हैं यह केवल अज्ञानता का प्रभाव है। आजकल जिस मत को 'हिन्दू' कहा जाता है उसका वास्तविक नाम 'सनातन' है। सनातन में अनेक परिवर्तन व परिवर्धन हुये है। मानव सभ्यता के विकास से लेकर आज तक के सांस्कृतिक मूल्य सनातन में विद्यमान है।

सनातन पर आघात इसी के माननेवालों ने शुरू किये। वर्ण व्यवस्था व आश्रम व्यवस्था को भूल-भालकर जातीय कूप मंडूक बन गये और आज ऊपरी मन से एक होने के नारे लगाते है पर सच्चे मन से एक हो नहीं पा रहे हैं- ''हिया[1] में तो होल्याँ[2] ऊठे और आओ सगाजी[3] मिलणी कराँ।'' (हृदय में तो होली जल रही है और कहते है कि संबंधी जी मिलन करें!) मिलणी हो नहीं सकती। मेरा सीधा व स्पष्ट प्रश्न है- जब सनातनी सब एक हैं तो पूजा स्थलों में प्रवेश को लेकर रगडे क्यों होते है ? ये रगड़े-रोड़े अटकाने वाले दूसरे नहीं स्वयं सनातनी ही है जो स्वयं को उच्च वर्ग का मानते हैं। निम्न वर्ग का मानकर उन्हें अछूत माना जाता है और अगर वही आपका अछूत 'मत' बदल ले तो अछूत नहीं रहता। यह है आज के तथाकथित उच्च वर्ण का व्यवहार। विडम्बना की बात है जिस समाज में

---

1. हृदय, 2. ज्वाला, 3. समधी जी

छूआछूत का नाम नहीं था उसी में मनघड़न्त व्यवस्थाएँ बनाकर समाज को खण्ड-विखण्ड कर दिया। स्व. बाबू जगजीवन राम के मंदिर दर्शन के बाद प्रतिमाओं को गंगा जल से धोना। है, ना ! मुँह में राम बगल में छुरी। महापुरूषों के आदर्श पोथियों में केवल व्याख्यान हेतु फिर भी आदर्शों की लकीर पीट रहे हैं।

एक नदी में अलग-अलग मिट्टी का प्रभाव लेकर अनेक धाराएँ मिलती है और एक हो जाती है। भारत विशाल नदी है जिसमें कई जातियाँ अपनी-अपनी छाप लेकर आयी और एक-मेक हो गई- कोई पहचान अलग न रही- यही है राष्ट्रीयता।

जब-जब समाज में विकृतियाँ आई, महापुरूषों ने दूर करने का प्रयास किया। महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, नानक देव, कबीर आदि ने सनातन से हटकर अलग कुछ भी नहीं बताया तो हम कौन होते हैं अलग मत की कल्पना करने वाले और अलग मत की कल्पना कर भी लें तो भी राष्ट्रीयता में तो कहीं अन्तर नहीं है। हम सब है भारत के भारतीय।

यहूदी, पारसी बंधुओं की तरफ से राष्ट्रीयता संबंधी कोई पूर्वाग्रह या दुराग्रह भरी बात सुनने को नहीं मिली। अंत में इस्लामी बंधुओं से खुली बात करनी है! आपको हिन्दू शब्द से एलर्जी हो सकती है क्योंकि इस शब्द को इरानियों, अरबों, तुर्कों ने सिंधवासियों पर आरोपित किया। आरोपित करने वाले 5 प्रतिशत से भी कम है, शेष मुसलमान भारतीय मूल के ही हैं। सनातनियों व भारतीय मूल के मुसलमानों को हिन्दू शब्द से परहेज[1] रखना चाहिये था पर इनके पूर्वजों ने इस शब्द का अर्थ सिन्धु से लेकर विशालता-गहनता के रूप में अंगीकार कर लिया। फिर भी अलहिन्द शब्द से सबको प्यार होना चाहिये क्योंकि 'अलहिन्द' का अर्थ- 'जो बुरा नही है' होता है। अल उपसर्ग का अर्थ नहीं है। हादी-ए-इस्लाम हजरत मोहम्मद ने भारत की तरफ इशारा करके फरमाया- ''हिन्द की तरफ से खुशबू आ रही है।''

हिन्दू शब्द का अर्थ भले ही अच्छा न हो पर हिन्द शब्द राष्ट्रीयता का सूचक है। भारतीय हाजी को अरबी हिन्दी ही कहते हैं। अन्य देशों के मुसलमान अपने-अपने देश के नामों से जाने जाते हैं जैसे अरबी, ईरानी, इराकी, तुर्की, मिश्री आदि। राष्ट्रीयता की पहचान राष्ट्र से होती है न कि मजहब से। भारतीय मुसलमानों को भी अपनी पहचान के लिए हिन्दी, अलहिन्दी, भारतीय, इण्डियन शब्दों में से एक शब्द चुनना पड़ेगा।

---

1. दूर रहना, बचना

हिन्दी के ही समान भाववाला शब्द है हिन्दुस्तानी। कुल मिलाकर भारतीय मुसलमानों को अपनी राष्ट्रीयता की पहचान हिन्दी, हिन्दुस्तानी, भारतीय से प्रकट करनी चाहिये।

मातृभूमि का सम्मान करना प्रत्येक मत सिखलाता है। सनातनी कहता है 'वन्दे मातरम्' और जौहर कहता है जय हिन्द ! कहाँ है अन्तर ? और अन्तर है तो सिर्फ भाषा का। वन्दे मातरम् को समझिये- रेडियो पाकिस्तान बोलता है- ''पाकिस्तान पाइन्दाबाद।'' पाइन्दाबाद का अर्थ है जिन्दाबाद। हम धड़ल्ले से कह सकते हैं हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। इसे हम और भी छोटा सा प्यारा नाम दे सकते हैं- ''जय हिन्द''। जयहिन्द का भाव जब मन में रम जायेगा तो यही वन्दे मातरम् होगा।

सनातनी का भाव भी यही है कोई जमीन को खुदा मानकर पूजना नहीं। भावनाओं से संबंधित धरा को जब हम जन्नत से ज्यादा महत्व दे सकते है (मदीने की गलियों में रमजाऊँ, तेरी जन्नत[1] मुझे गंवारा[2] नहीं) तो देह पोषिणी धरा को जन्नत स्वीकारना बुरी बात नहीं है।

आजकल कुछ कट्टर पंथी व निठल्ले आदमी उत्तेजनात्मक नारों के सहारे लोगों को गुमराह करके मुफ्त में गुलछर्रे उड़ाते हैं और लोगों को लड़ाते हैं। महफिलों में नारे लगवाते हैं- गौस का दामन नहीं छोड़ेंगे, ख्वाजा का दामन- नहीं छोड़ेंगे। भारत के मुसलमानों ने हकीकत[3] में इन दोनों महान् संतों का दामन (बताई राह) पकड़ी ही कब ? जो नहीं छोड़ने की बात कर रहे है। मुसलमानों को मुसलमान ही भटका रहे हैं, अन्य मतावलम्बी नहीं।

मातृभूमि की इज्जत करना इस्लाम की बहुत बड़ी शिक्षा है- इस शिक्षा से दूर हटना इस्लाम से हटना है। खेल जैसी बात पर दुश्मन की जीत पर खुशियाँ मनाना मादरे वतन[4] के साथ गद्दारी नहीं तो क्या है ? इस्लाम का दामन हाथ में है ही नहीं और नहीं छोड़ने की बातें कर रहे- यह उचित नहीं है।

हिन्द के सभी नागरिकों से मेरा कहना है कि- सभी धर्म आत्मिक शांति हेतु है, मानते रहिये पर राष्ट्र भाव को प्रथम स्थान मन में दीजिये। इस देश में रहनेवालों का खूनी रिश्ता एक है क्योंकि सभी स्थानीय व बाहर से आने वाले मिलकर एक हो गये है। हिन्द के मुसलमान व इसाई 95 प्रतिशत मूल रूप से भारतीय ही है। मत बदलने से खूनी रिश्ता नहीं बदलता है और न राष्ट्रीयता, अतः हमें गर्व से कहना चाहिये हम हिन्दी-हिन्दुस्तानी है। अलहिन्द-पाइन्दाबाद, जय हिन्द।।

---

1. स्वर्ग, 2. रास नहीं आना, 3. वास्तव में, 4. मातृभूमि

इस देश का नाम भारत ही रहने दो

22 फरवरी 2003 को तथाकथित धर्म संसद में आचार्य धर्मेन्द्र की तरफ से तोगड़िया साहब ने भारत देश का नाम ''हिन्दुस्तान'' रखने की माँग रखी।

देश काल व हालात[1] के अनुरूप परिवर्तन व परिवर्धन होता रहा है और होता रहेगा। होना भी चाहिये, परन्तु हर बदलाव के पीछे ठोस आधार हो और हर पहलू[2] से विचार होना चाहिए। भारत नाम के पीछे बहुत बड़ा आधार है- भारत[3]- भरतों का देश। अच्छाईयों से भरने (परिपूर्ण) वालों का देश- भारत इस देश के प्राचीनतम नामों में भरत खण्ड, भारत, आर्यावृत मिलते है। इनके पीछे बहुत बड़ा आधार है- ये नाम चाहे कबीले (भरत नाम का आर्यों का कबीला था) के नाम पर रहा हो चाहे व्यक्तियों के नाम पर- (दुष्यन्त पुत्र भरत, दशरथ पुत्र भरत व भरत मुनि) रहे हों। आर्यावृत आर्यो के रहने का क्षेत्र। इस बात को सभी समझदार लोग मानते हैं पर जो आदमी अड़ियल रूख अख्तियार[4] करके भैंस की पूंछ छोड़ना ही नहीं चाहते उनको समझाना समझदारों के बस का नहीं है।

हिन्दुस्तान शब्द के पीछे क्या आधार है ? यह शब्द आया कहाँ से? किस तरह से भारतीय जीवन में घुल मिल गया ? एक ही रटा-रटाया उत्तर है 'सिन्धु' से 'हिन्दू'। बात गले उतरने वाली नहीं है क्योंकि 'स' से 'ह' उच्चारण तुर्की-फारसी में है या नहीं पर भारत में सड़क को हड़क, सल को हल, साँप को हाँप पुकारते हैं। वेदों, पुराणों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों में कहीं हिन्दू, हिन्दुस्तान शब्द नहीं मिला। वैदिक ऋचाओं में 'धर्म' को अच्छी तरह समझाया गया है कहीं पर 'हिन्दू' शब्द नहीं आया। भारतीयों के धर्म को सनातन नाम से पुकारा गया जिसका अर्थ है- परंपराओं का अटूट प्रवाह-

---

1. परिस्थितियाँ, 2. दृष्टिकोण, 3. विद्वत्ता में रत रहने वालों का देश, 4. स्वीकारना

जो हमेशा से चला आ रहा।

सनातन में टूटने का सिलसिला उस वक्त शुरू हुआ जब बौद्ध विद्वान मध्य एशिया व एशिया माइनर तक बौद्ध धर्म का प्रचार करने गये और वहाँ पर प्रचलित बहुदेव पूजा व मूर्तिपूजा से प्रभावित होकर भारत आये- अपने साथ मूर्ति पूजा का तरीका लायें। सम्राट अशोक के बाद हर्ष तक का इतिहास ब्राह्मणों व बौद्धों के संघर्ष का इतिहास है।

एशिया माइनर में जब एकेश्वर उपासना पद्धति, इस्लाम के रूप में स्थापित हुई उस जमाने में अरबों व तुर्कों ने भारतीय व्यापारिक काफिलों से बौद्धों-ब्राह्मणों के रगड़े सुने तब उन्होंने भारतीयों को 'हिन्दू' नाम से पुकारना शुरू किया। इस शब्द को भारतीयों ने सिंधु से जोड़कर अपना लिया। अरबी, तुर्की, पठान-मंगोल हमलावर के रूप में भारत में जम गये, इसमें उनकी बहादुरी नहीं थी। उनको यहाँ जमाया भारतीयों की आपसी फूट ने, द्वेष भाव ने। इनसे पहले शक, शिथियन कुषाण, हूण यहां आये घुल मिल गये पर तथाकथित धार्मिक रगड़ों (बौद्ध-ब्राह्मण झगड़ों) से उकताकर वो लोग इस्लाम की तरफ झुक गये- भारत में इस्लाम का प्रचार-प्रसार उच्च जातियों के दुर्व्यवहार से ज्यादा हुआ। अपने ही सनातन धर्मी भाईयों के साथ घटिया व्यवहार के कारण समाज का बहुत बड़ा हिस्सा टूटने लगा जिसका क्रम आज भी जारी है। यह है सनातन का विखण्डन।

आपसी भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण विदेशियों द्वारा आरोपित व घृणित शब्द 'हिन्दू' सनातनधर्मियों का सर का ताज बन गया। शब्दकोष अरबी, फारसी, तुर्की, उर्दू-इंगलिश को देखने पर इस शब्द का अर्थ चोर, डाकू, काला और गुलाम मिलता है।

कूप मंडूक मानसिकता वाले लोगों से कहना है बाहर की ताजा हवा आने दो, पढ़ो-समझो, अपने आप स्वयं को सनातनी व इस देश को भारत ही कहने लगोगे। दुआ[1] है सिरफिरी बातें करने वालों को सही समझ आवे। आमीन[2]।

---

1. ईश्वर से प्रार्थना है, 2. ईश्वर इसे स्वीकार करें

गर[1] जहन्नुम[2] बर रूहे ज़मीनस्त[3] ! अमीनस्त[4], अमीनस्त, अमीनस्त !!

चौंकिये नहीं, गहराई से विचारिये, स्वयंमेव पता चल जायेगा- जिस धरा पर स्वर्ग की कल्पना की जाती थी आज जहन्नुम नजर आ रही है। व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन के किसी भी पहलू पर गौर करने पर यह बात खुलासा[5] हो जायेगी। सुख, शांति व संतोष जहाँ है वहाँ स्वर्ग है इसके विपरीत जहाँ कलह, क्लेश व लालच है वहाँ नरक है। नारकीय स्थिति राग व द्वेष से उत्पन्न होती है। राग व द्वेष मनुष्य को श्रेष्ठ प्राणी न बनाते हैं वहीं निकृष्ट कोटि का भी, भ्रष्ट प्राणी भी ये दो बातें ही बनाती है।

राग द्वेष जन्मना गुण है। प्राचीन मानव इनका इतना गुलाम नहीं था जितना आज है। हम पूर्ण रूप से अंधे हो चुके है। 'अपने' अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता- सूझता नहीं। अपने 'अपनत्व' स्वार्थ को पूरा करने हेतु स्वार्थी आदमी लड़ा देता- मरवा देता और खुद साफ बच निकलता है और अपने को होशियार समझने लगता है। दुनियाँ भी ऐसों को चतुर व साहसी मान रही है। आँखों वाली अंधी यह दुनिया है।

'अपने मुँह मियाँ मिठू' वाली होशियारी को सब जान रहे हैं पर करें क्या ? हर एक इसी रोग का शिकार हो चुका है। दूसरों की पोल खोलने से पहले खुद की पोल खुल जाती है फिर भी बड़ी बेहयाई[6] से दाँत दिखाकर हँस रहे है। गैरत[7] नाम की बात हमारे पास है ही नही।

मौर्यों के उत्तर काल से हमने गैरत को बेचना शुरू किया, आजादी से पहले बेच-बांच कर पल्ले झाड़ लिए हैं। अब गणतंत्र में क्या करे ? गैरत नाम से सबको, नफरत करना सिखा दो ? यही विचार शुरू हो गये।

राजनीति की 'नीति-रीति' को तिलांजली देकर धर्म की बैसाखियाँ लगा ली है। धर्म व राजनीति दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से हितकारी है, वही इनका गढ़मढ़ रूप घातक विष बन जाता है। आज इसी कारण कश्मीर से कन्याकुमारी तक काम रूप से कच्छ तक धर्मयुक्त राजनीति का धुआँ

---

1. अगर, 2. नरक, 3. धरती पर, 4. यही है, 5. स्पष्ट, 6. बेशर्मी, 7. आत्मसम्मान

दम घोंट रहा है। हमारी स्वच्छ छवि पर राक्षस हावी हो गया है। बिना वजह आक्रोश छलका कर खून-खराबा, लूट-खसोट कर रहे हैं। वोट को ही सर्वस्व मान लिया है- इसे प्राप्त करने के लिए मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारों, कलीसा[1] व अन्य धार्मिक मंचों का खुलकर उपयोग किया जा रहा है। धर्म की अवधारणा आत्मिक शांति व उन्नयन के लिए है। इसके स्थान पर धर्म की ओट में अधर्म किया जा रहा है। 'वोट' पाने हेतु धर्म की आड़ लेकर लोगों की भावनाओं को भड़काकर दंगे करवा देते हैं ताकि लोग भयभीत रहे, आशा का केन्द्र माने- रक्षक माने और इसी आशा में वोट देते रहे। सन् 47 के बाद भारतीय मुसलमान इसी प्रकार की आशा में अटके रहे।

आज के धर्मीजन दलदल में फँस गये है। आँख मींचकर उल्टी-सीधी व्याख्याएँ कर रहे। अपनी दुकानों को चलाये रखने हेतु ऐसे हथकण्डे अपना रहे हैं जिनको शैतान भी नहीं अपनाता। चोर डाकुओं ने इनसे शिक्षा लेकर अपने चोले बदल लिये हैं। आजकल धर्म के नाम पर करोड़ों रूपया ठगा जाता हिसाब-किताब पूछनेवाला कोई नहीं है। जनता भोली है सोचती है- हमने तो धर्म के नाम पर दान दिया है, अगला कुछ भी करे, जैसी करेगा वैसी भरेगा, हमें क्या ? हिसाब पूंछने पर बिगड़ैल साँड जैसे बिदककर नये-नये पैंतरे बदलने लगते हैं और सत्य को शर्मिन्दा होना पड़ता है। राम मंदिर के नाम पर कितना धन संग्रह किया गया ? क्या हुआ धन का ? सिर्फ वोटों की राजनीति हुई। यही हाल बाबरी मस्जिद वालों का है। दूध का धुला कोई नहीं है, सबके दामन मैले हैं। ये तथाकथित स्वयंभू धार्मिक मठाधीश इस देश को नरक बनाने पर तुले हुये है। इन्हें न तो अपने धर्म की परवाह है न राज्य-समाज की।

नियम तोड़ना व अपने अनुकूल नये नियम जोड़ना अपना एकाधिकार समझते हैं। धार्मिक नियम तोड़ने की कला बड़ी निराली, कोई चूँ तक नहीं कर सकता है। धर्म के साथ इनका रिश्ता ऊपरी तौर पर रागात्मक लगता है पर है एकदम घटिया।

भारत में धार्मिक केन्द्र लूट के, व्यभिचार के, नशे पते के अड्डे है। मानव का उद्धार करने के स्थान पर क्लेश के कीचड़ में फँसा देते हैं। ब्रह्माजी के मंदिर परिसर में पंडाजी की चेली के रूप में एक महिला शराब सप्लाई करती पकड़ी गई, इधर दरगाह में आए दिन गांजे, चरस, स्मैक की पुड़ियाएं पकड़ी जाती है। इन सफेदपोश लूटेरों पर प्रतिबंध लगा दिया जाय तो समाज में स्वर्गिक आनन्द पैदा हो सकता है वरना धर्म से स्वर्ग की कल्पना करना व्यर्थ है।

---

1. चर्च

बदलने के लिये बहाना चाहिये

बदलना चाहते हो ! बदल डालो ! बदलने के लिए बहाना चाहिये! बिना बहाने के बदलने की बात बेवकूफी नंबर एक है। बिना बहाने के बदलने की बात करके तस्लीमा नसरीन ने लफड़ा[1] पैदा कर लिया। अगर बहाना ढूँढ लिया और थोड़ा सा सहारा आज के तथाकथित धार्मिक जनों का मिल जाये तो कहना ही क्या ? अपने बहाने को चलाने के लिए किसी संत-महंत, पीर-फकीर के कंधे पर बंदूक धर दो फिर चाहे जो कहो- करो, सब जायज[2] है, कोई चूँ तक नहीं करेगा। पीर-फकीरों, संत-महन्तों का सहारा सोने में सुगंध का काम करेगा। ये तथाकथित प्रबुद्ध व धार्मिक जन आस्था की आड़ लेकर कोई ना कोई रास्ता निकाल ही देंगे। चाहे कितनी ही अनुचित (धर्म-व्यवस्था से विपरीत) बात हो इनकी हरी झंडी मिलते ही उचित हो जायेगी। आपकी बात चल निकलेगी। कोई बखेड़ा नहीं। ना मत मतान्तर का विवाद। अगर कोई छोटी मोटी बात होगी भी तो इतना सा कहके लोग चुप हो जायेंगे- ''होगा अलग-अलग फिरके[3] हैं।'' कुछ तू-तू, मैं-मैं होगी भी तो पंथों के आलिमों (जानकारों) पंडितों के मध्य होकर रह जायेगी और आपकी बात चल जायेगी।

इस्लाम में ब्याज हराम[4] है पर आज धड़ल्ले से बैंक ब्याज लिया जा रहा है- बहुत सुन्दर बहाने के साथ- ''अपने काम ना लो, दूसरे काम में खर्च कर दो। सोचने की बात है- हराम, हराम ही है, उपयोग चाहे जैसे लो, पर धर्म के व्याख्याकारों का ''हीला''[5] (बहाना) चल निकला कोई बुरा नहीं कहता। इसी बात को ''परिवर्तन करना है'' के सहारे चलाने की बात जो भी करता है, सजा पा जाता है।

अपनी बात को वसीले (सहारे) से जब कोई चलाता है तो मूल

---

1. विवादास्पद स्थिति, 2. उचित, 3. मत-मतान्तर, 4. बुरा जिसकी धर्म से मनाई है, 5. बहाना, आसरा

सिद्धान्त धरे ही रह जाते हैं। अपने-अपने तरीकों से कुरान व हदीस की व्याख्या करके रूढ़िवादी आस्था के अंधों के लिए ''लाइन क्लीयर'' कर देते हैं- चाहे जैसा परिवर्तन कर डालो कोई बुरा नहीं कहता है। परिवर्तन की बात बेतुकी है, परिवर्धन की बात होती तो वो भी बिना दिखावे के धर्मीजनों की मौन सहमति से चल सकती है।

तस्लीम ने कुरान में परिवर्तन की बात कहके मुफ्त में लफड़ा पैदा कर लिया। कई बातें कुरान व हदीस से एकदम विपरीत चल रही है जैसे भारत में पीर परस्ती[1]। कोई कितना ही परहेजगार, आस्थावान, रोजे नमाज का पाबंद[2] है और पीर के मजार पर गया, वहाँ जाकर अगर उसने चादर नहीं चूमी, नजराना नहीं दिया तो सब बेकार माना जायेगा। सीधे व सच्चे ईमानदारों से लोग लानत-मलामत करते देखे गये। अजमेर में अकीदत के नाम पर जो होता है इस्लाम से उसका कोई लेना देना नहीं है पर इस्लाम से विपरीत काम करने वालों को कोई टोकने वाला नहीं है क्योंकि पीर परस्तों ने अकीदत का सहारा लिया है- परिवर्तन की बात नहीं की और परिवर्धन कर दिया- बात भी बन गयी (जो इस्लाम से एकदम उत्तर दक्षिण है) और किसी ने बुरा भी नहीं माना।

इस्लाम पर्दाप्रथा का हामी है। कुछ लोगों ने ऐसा तरीका अख्तियार[3] किया जिसे देख आज आश्चर्य होता है। अच्छे-अच्छे धार्मिकजनो की औरतें फैशनेबुल बुरके डालकर अपने रूप-श्रृंगार का प्रदर्शन बाजारों, सिनेमाघरों में करती फिरती हैं उन्हें कोई टोकने वाला नहीं है और दूसरी तरफ जो औरतें खेतों में मेहनत मजदूरी कर रही, लाज-शरम नहीं खो रही है उन्हें धर्म के ठेकेदार 'बेपरदा' कह कर हिकारत[4] की नजर से देखते हैं। अच्छे-अच्छे पीरों-फकीरों, आलिमों-पंडितों-जानकारों के यहाँ परदे के लड़दे उड़ रहे हैं। आये दिन अखबारों में बड़े लोगों के घटिया कारनामे छपते हैं पर सब मौन है क्योंकि इन लोगों ने बदलने की बात नहीं की बस थोड़ा सा मौन रहे और जो नहीं होना चाहिए वो हो गया।

परिवर्तन की जगह परिवर्धन की बात करो- चाहे कितना ही उल्टा कर दो अगर बहाना अच्छा बना लिया तो आपकी मरजी की तफसील[5],

---

1. पीरों को मानना, पीर पूजा, 2. नियमित, उच्धारण किया, पकड़ा
3. नफरत, घृणा, 4. टीका, व्याख्या

तरीका, व्याख्या, पंथ जो भी आप चाहेंगे चल निकलेगा। तस्लीमा को अपनी बात चलाने के लिए बागवान से नसीहत[1] लेना चाहिए। बागवान एक ही पौधे पर अलग-अलग रंग व प्रकार की कलमें लगाकर फूल व फल पैदा करता है। कई रंग के फूल एक ही पौधे पर- यहाँ माली ने परिवर्धन का सहारा लिया, परिवर्तन का नहीं। इस्लाम में प्रतीक पूजा का कोई प्रावधान नहीं है पर चतुर लोगों ने अपनी-अपनी व्याख्याओं-आस्थाओं की कलमें इस्लाम रूपी गुलाब पर लगा दी। पीर परस्ती का इस्लाम में कोई प्रावधान नहीं है पर ''पीर परस्ती ही सब कुछ है'' इस बात को बड़ी खूबसूरती से लोगों के मन में बिठा दिया है। सजा मिलनी चाहिये धर्म के ठेकेदारों को तस्लीमा तो मुफ्त में ही सजा की पात्र बन गई है।

---

1. शिक्षा

शरीयत[1] वक्त की नजाकत[2] को समझने की इजाजत देती है।

पूर्वाग्रहों व दुराग्रहों से ग्रसित व्यक्ति बिना सोचे समझे शरीयत को बदनाम करने के अवसरों की ताक में रहते हैं। इस्लामी शरीयत रूढ़िवादी नहीं है और न किसी पर जुल्म करने की इजाजत देती है। भारत में शरीयत से संबंध रखनेवाली बातों को राजनैतिक दांव पेच के चक्करों में घसीट कर बात का बतंगड़ बना दिया जाता है। अति उत्साही व फासिस्टवादी विचारधारा के लोगों ने प्रतिष्ठित अखबारों में कॉलम लिख डालें- ''शरीयत आई संविधान से टकराव के रास्ते पर।'' ''शरीयत में चेंज होना चाहिए।'' ''शरीयत के कारण मुस्लिम महिलाओं पर अत्याचार।'' आदि-आदि अनेक बातें बनाकर इस्लाम को बदनाम करने की साजिश[3] में वोटों के भिखारी नेताओं के पिट्टू मुल्ला, पुलिस व मीडिया लगा हुआ है।

इस्लाम परिवर्तन व परिवर्धन का समर्थक है। शरीयत में अक्ल का दखल[4] नहीं चलता पर जिस समस्या का समाधान कुरान, हदीस व तरीकत[5] में ना मिले तो अक्ल से काम लेने का हुक्म हादी-ए-इस्लाम ने दिया है- अपने एक सहाबी (साथ रहने वाले) को हाकिम बनाकर जब बाहर भेजा तो सहाबी ने पूछा- 'वहाँ का निजाम कैसे चलाऊँगा ?'' हुक्म हुआ ''कुरान व हदीस से।'' फिर सहाबी ने अर्ज किया ''इनमें ना मिले तो ?'' हुक्म हुआ वहाँ की परंपराओं में समस्या का समाधान ढूंढना।'' फिर अर्ज किया- स्थानीय रिवाजों में भी ना मिले तो ?'' हुक्म हुआ- ''अपनी अक्ल से।''

पैगम्बरे इस्लाम की उपर्युक्त हदीस[6] परिवर्तन एवं परिवर्धन की इजाजत देती है पर मनमानी करने की छूट नहीं देती है।

---

1. इस्लामी कानून, 2. बारीकी, 3. षड्यंत्र, 4. टांग अड़ाना,
5. रीवाजों में, 6. हजरत मोहम्मद का कथन

कई देशों ने मुसलमानों से संबंधित कई परिवर्धन किये, वहाँ कोई विरोध नहीं हुआ पर भारत में बात को समझने वाले तो कम है बात का बतंगड़ बनाने वाले ज्यादा है। तलाक के प्रश्न पर आये दिन उलझने पैदा होती है। शरीयत के तरीके से तलाक दी जाये तो 90 प्रतिशत समस्याएं पैदा ही नहीं होगी और खासकर शाहबानो जैसे बुढ़ापे. में तलाक का मामला तो पैदा ही नहीं होगा और हो भी जाये तो वहाँ अक्ल को काम में लिया जा सकता है पर पहले पूरी तरह छानबीन की जावे।

आजक्ल बलात्कार के मामलों को चटकारे ले-लेकर खूब उछाला जा रहा है। इमराना, रानी, रूखसाना के चर्चे बहुत पढ़ने में आ रहे है। ये तीनों पिता तुल्य स्वसुरों द्वारा सतायी गयी। इमराना व रूखसाना को देवबन्द के आलिमों ने अलग-अलग फतवे दिये और दोनों को दुनियाँ में मुँह दिखाने काबिल[1] नहीं रखा। इन दोनों फतवों के संबंध में जब दारूल उलूम मोइनिया-चिश्तिया अजमेर के हेड मुदर्रिश[2] जनाब बशीरूल कादरी साहब से पूछा तो उन्होंने स्पष्ट कहा कुरान व हदीस के हिसाब से इनका निकाह टूट चुका पर इमराना अपने ससुर से निकाह नहीं कर सकती है और ना ही अपने बच्चों के बाप को बेटा मान सकती। देवबन्द के आलिमों का फतवा कुरान व हदीस से हटकर है।

देवबन्द के फतवे दुराग्रहों से ग्रसित नजर आ रहे हैं। इमराना ने न तो फतवा मांगा और ना ही पत्रकार द्वारा काल्पनिक सवाल के आधार पर दिया गया फतवा उस तक पहुँचा। इमराना से कोई पूछताछ नहीं की गई और उधर रूखसाना को सबूतों के अभाव में झूठा करार देकर अपने पति के साथ रहने को कहा गया। ऐसे दोगले[3] आलिमों के कारण ही दुनियाँ के सामने इस्लाम का गलत नक्शा पेश होता है। बलात्कारी के लिए इस्लामी शरीयत संग सारी (पत्थर बरसाकर मारना) की सजा का हुक्म देती है।

इमराना को अली मोहम्मद से निकाह की जगह अली मोहम्मद को संगसारी की सजा देवबन्द के आलिम सुनाते तो शरीयत की बात होती। ये आलिम राजनेताओं की कठपुतलियाँ है, ढोंगी है, मक्कार है। सही बात कहने से डरते हैं- ये आलिम ही इस्लाम के पक्के दुश्मन है।

---

1. योग्य, 2. प्रधानाचार्य, 3. दो तरह की बातें करने वाले

अखबार नवीस[1] सतही[2] जानकारी के आधार पर लंबी-चौड़ी बातें लिखकर इस्लामी शरीयत पर ऊँगली उठाते हैं। नवज्योति को अजमेर के खादिम गुलाम किबरिया ने विरोधाभासी बातें बताते हुये कुरान व हदीस को ही शरीयत मानते हैं जो ठीक है, साथ ही संविधान के कानूनी दायरे[3] में सजा दिलाने की बात बताते हैं। किबरिया साहब शरीयत में अक्ल का दखल तो चाहते हैं पर खुलकर कहने में झिझकते हैं। के.डी. खान पूर्व दरगाह नाजिम ने जो बिना लाग-लपेट के बात बताई उससे गहराई से सभी बुद्धिजीवियों को विचार करके हादी-ए-इस्लाम के उस फरमान[4] की तरफ आना चाहिए जिसमें आपने सहाबी को हुक्म दिया- जब किसी समस्या का हल, कुरान-हदीस व रीवाजों में ना मिले तो अक्ल से काम लेना।''

जो लोग शरीयत को बदलने की बातें करते हैं वो नासमझी की बातें है। शरीयत के नाम पर दिये जाने वाले उल्टे सीधे फतवों पर रोक लगनी चाहिये। शरीयत अपने आप में पूर्ण है, परिवर्तन नहीं, परिवर्धन आप पूरी तरह छानबीन करने के बाद कर सकते हैं पर ध्यान रहे जब समस्या का समाधान कुरान हदीस व इज्मा (रिवाजों) में ना मिले तो।

इण्डिया गेट कॉलम के लेखक अजय सेतिया जैसे अति उत्साही पत्रकार को बताना चाहूंगा- शरीयत बलात्कारी को बचाती नहीं, संगसारी की सजा का प्रावधान बताती है और इधर हमारा संविधान कानूनी दायरे में दोषी को सजा दिलाना चाहता है। कहाँ है शरीयत व संविधान में टकराव ? सेतिया साहब आपने शरीयत व संविधान के टकराव की बात अपनी तरफ से लिखकर नवज्योति की प्रतिष्ठा गिराई है।

शाहिदा बेग ने ठीक ही कहा है ऐसे फतवे (जो गलत दिये गये) शरीयत की ओट में महिलाओं को दोहरी मार मारना है। शाहिदा बेग की बात में दम है- पुरूष शरीयत की आड़ में जुल्म ढ़ा रहा है। इमराना ने फतवा मांगा ही नहीं, न उससे कोई पूछताछ हुई और न काल्पनिक सवाल के आधार पर दिया गया फतवा उसके पास पहुँचाया गया। ये बातें शरीयत के खिलाफ है। मीडिया व कठमुल्ला[5] शरीयत को बदनाम कर रहे। ये बातें इस्लाम को बदलने की प्रक्रिया का षड़यंत्र है। जो लोग इस्लाम के

---

1. पत्रकार, 2. ऊपरी, 3. परिधि, सीमा, क्षेत्र, 4. आदेश, कथन, 5. रुढ़ीवाद, आधे-अधूरे

भारतीयकरण की बातें करते हैं उन्हीं की मंडली की साजिशें है ताकि इस्लाम का भारतीयकरण होते-होते इस्लाम का हिन्दुकरण हो जाये।

इमराना पाँच बच्चों की माँ है पारिवारिक संपती के कारण विवाद के चलते बात का बतंगड़ हुआ।

वैसे तो शरीयत में अक्ल का दखल नहीं करना चाहिये पर इमराना काण्ड जैसे कृत्य शरीयत में नहीं मिलते हैं अतः इमराना के बच्चों की डी. एन.ए. की जाँच होनी चाहिये। इस जाँच पर कठमुल्ला जरूर शोर मचाएंगे पर कोई यह तो बता दें- ऐसी प्रोब्लम पैगम्बरे इस्लाम के जमाने में कभी आई ? या किसी बलात्कारी से निकाह का फतवा देकर खाबिन्द को बेटा मानने की बात कही ? नहीं है तो हादी-ए-इस्लाम के उस आदेश के तहत अक्ल से काम लेकर पूरी जाँच करना चाहिये।

पुलिस का रोल भी दुराचारी को बचाने वाला ही साबित हुआ- आसाम के जेरामई गांव, जिला नौगांव के मोइनुद्दीन ने अपनी 19 वर्षीय पुत्रवधु से मुँहकाला किया। शिकायत दर्ज करने की जगह पुलिस वाले उसे स्थानीय मुल्लाओं के पास ले गये- मुल्लाओं ने पति से तलाक लेने की व्यवस्था दी। जुल्मी को पुलिस, पत्रकार व कठमुल्ला सब बचा रहे हैं और बदनामी शरीयत की। शरीयत औरत पर जुल्म करने की हामी[1] नहीं है।

फासिस्टवादी, अति उत्साही व शरीयत से अनजान लोगों से मेरा कहना है- शरीयत अपने आप में पूर्ण है, परिवर्धन की पूर्ण इजाजत है पर गहन खोजबीन के बाद। कठमुल्लाओं से कहना है- बेअमल[2] हो, जहन्नुम की आग बेअमल आलिमों से ही सुलगाई जायेगी। बलात्कार की जो महिलाएँ शिकार हुई उनकी निकाह टूट चुकी है। पुलिस कानून के दायरे में दोषी को सजा दिलवानी चाहिये। नेता लोग धर्म की आँच पर स्वार्थ की रोटियाँ सेंकना बंद करे। सब में सद्‌बुद्धि पैदा हो। आमीन।।

---

1. पक्षधर, 2. अव्यावहारिक हो, शरीयत पर नहीं चलना

सच्चाई कभी छिपती नहीं

करोड़ जतन कर देख लो- तुकम तासीर सोबत का असर कभी खत्म नहीं होता। कोयला अपना कालापन नहीं छोड़ता। काजल व कोयले के कालेपन को आवरण चढ़ाकर कुछ समय के लिए छिपाया जा सकता है पर आवरण कभी न कभी हट ही जाता है। घटिया को चाहे जितनी अच्छी बातें बताओ पर घटिया हमेशा घटिया ही रहता है। सुधार का कोई लक्षण दिखाई देता भी है तो उसके पीछे कोई न कोई घटिया हरकत का हाथ होता है।

यह बात लाखावत व टेकावत खादिमों पर पूरी तरह लागू होती है। लाखा, टेका, राखा, शेखा, बिरदा व ऊदा- ने गरीब नवाज का सामिप्य हासिल करके घटिया से असल होने की पूरी कोशिश की उन्हीं के वंशज खादिमों ने और बता दिया कि-हमारी औक़ात[1] को हम भुला नहीं सकते हैं।

यह बात अलग है कि दुनियाँ इनकी निम्न दर्जे की हरकतों को जानकर भी अनदेखा कर देती है। लोग सोचते हैं- गरीब नवाज के खादिम है। गरीब नवाज की ओट में अनेकानेक खतरनाक व शर्मनाक हरकतें इन लोगों ने की है और कर रहे हैं। (अनेक अपराधिक केस इन पर चल रहे हैं!) गरीब नवाज की चौकीदारी, झाड़ बुहारी से इनका पेट तो अच्छी तरह भर जाता पर इनकी 'हवस' पूरी नहीं होती दिखी तो लूटमार के हथकंडे गरीब नवाज़ के दर-पे शुरू कर दिये। गरीब नवाज के दीवानों (आस्थावानों) को उल्टे-सीधे झाँसे देकर ठगना शुरू कर दिया। लोगों में यह बात मशहूर कर दी- ख्वाजा सबकी सुनते हैं- गरीब की, अमीर की, चोर की, साहूकार की, मरीज की व डॉक्टर की।

भारतीयों की कमजोर नस है आस्था। अकीदत के नाम पर लोग बहुत जल्दी भ्रमित होकर धोखा खाते हैं पर संभलते नहीं। आस्ताने के भीतर

---

1. वास्तविकता

जेब साफ हो जाने पर गरीब नवाज की रजा बताकर अकीदत के अंधों को राह सुझाने का चक्कर चलाया जाता है। कई लोगों को किराये-भाड़े व रोटी के लिए गिड़गिड़ाते देखकर भी इनको दया नहीं आती है- स्वभाव से ये चिकने घड़े हैं- गिड़गिड़ाने का इन पर कोई असर नहीं होता है। अबलाओं की चीत्कारों से इनके चेहरे गेंडे की खाल की तरह सख्त हो जाते हैं। (अजमेर का अश्लील छायाचित्र काण्ड, ब्राउन शुगर काण्ड व कई बलात्कार के मुकदमे इन स्वयंभू शरीफजादों पर चल रहे हैं) दण्डित होने पर रोते कलपते और छूटते ही रंग बदल लेते हैं।

इनको राह पे लाने व समझाने के प्रयास पुराने समय से आज तक होते रहे हैं- पर इनका मूल मंत्र है- 'या नकटाई तेरा ही आसरा है' ये अपनी आदतों को नहीं छोड़ते हैं। सम्राट अकबर ने इनकी कारगुजारियों को सुनकर फतहपुर सीकरी बुलाया- इन्हें दण्डित किया, मुचलके भरवाये पर ये तो वही ढ़ाक के तीन पात रहे- नित नये तरीकों से लूटना शुरू कर दिया। लूट खसोट के नित नये तरीके इजाद[1] करने में इनका नाम गिनीज बुक में दर्ज होने योग्य है।

अकीदत (आस्था) के नाम पर उल्लू बनाकर इन लोगों ने इस्लाम की धज्जियाँ उड़ा दी। गुजरात के सुनियोजित खून खराबे से मुस्लिम समाज त्रस्त व भयभीत था, इस कारण उस साल मोहर्रम के मौके पर अजमेर सूना-सूना सा रहा। खादिमों के चेहरे मुरझाकर काले स्याह पड़ गये। भीड़ जुटाने की तरकीबें सोचने लगे। आखिर एक ऐसा तीर फेंका जिससे भीड़ का सैलाब[2] उमड़ पड़ा पर इस्लाम की धज्जियाँ उड़ गई।

इस्लाम तसव्वुर[3] का मजहब है तस्वीरों का नहीं। यह बात सत्य है पर कमसल लोगों को असल उसूलों से क्या लेना? उन्होंने आस पास के गाँवों में अपने मिलने वालों के यहाँ फोन किये- ''मियाँ ! गुम्बद शरीफ[4] पर बुजुर्गों के दीदार हो रहे हैं।'' बात बारूद में आग की तरह फैल गई- अंध भक्त उमड़ पड़े। समझदारों ने जब अंधविश्वास भरी बातों का खंडन किया तो ये भड़क उठे और सज्जाद नशीन पर लाँछन लगाने लगे व दुर्व्यवहार के प्लान बनाने लगे। प्रशासन की सख्ती से थोड़े दबे पर साँप की

---

1. आविष्कार, 2. बाढ़, 3. चिन्तन, 4. पवित्र गुम्बद

पूँछ का बल कभी निकलता नहीं, नित नई फरेब[1] भरी बातें बनाने लगे।

भारत में इस्लाम ख्वाजा साहब से पहले भले ही आ गया हो पर इस्लाम के पौधे ने वटवृक्ष का रूप अजमेर में ही लिया। उसी वट वृक्ष की जड़ों में तेजाब डालने का काम गरीब नवाज द्वारा पोषित लाखा, टेखा, शाखा, राखा, उदा व बिरदा की संतति ने किया। आस्ताने पर ऐसे रिवाज चलाए जिनका इस्लाम से कोई लेना देना नहीं है। ख्वाजा साहब के समय इन बंधुओं ने इस्लाम बड़े जोश से स्वीकार किया, इसके पीछे एक बहुत बड़ा कारण यह था- ये लोग समाज में हिकारत[2] की नजर में देखे जाते थे क्योंकि इनका जन्म सामाजिक मान्यताओं से नाजायज था। ख्वाजा साहब के नए शिष्यों (मुरीदों) के जोश को देखकर समाज में एक कहावत चल निकली नया भील मुसलमान बनता है तो जब देखो तब नमाज पढ़ने लग जाता है। आजकल के खादिमों ने नमाज से मुँह सा मोड़ लिया है- (चंद खादिम ही नमाज पढ़ते मिलेंगे, ज्यादातर नमाज के समय जायरीन को पटाते हुये मिलेंगे।) इस्लामी परंपराओं से कोसों दूर हो गये फिर भी कहते हैं- हमारा गरीब नवाज से नजदीकी संबंध है।

इनके स्वार्थों व मनमानी हरकतों पर जब कभी बंदिश लगाने के प्रयास हुये तो ये विधवा के विलाप रोने लगते हैं और थोड़ी ही देर में रंग बदल लेते हैं। अंग्रेजों ने इनको हराम खोर ठीक ही कहा है क्योंकि ये काम धाम तो करते नहीं, बस पैसा लूटने के लिए नित नये तरीके ढूँढकर उन्हें धार्मिक रस्मों का रूप देते रहते हैं। भोली जनता इनके पाखंडों को धार्मिक रस्मे मान लेती है। गुम्बद् पर दीदार की बातें फैलाना इस्लाम के किस फिरके[3] की बात है ? दरगाह में जगह-जगह इन हरामखोरों ने अपने 'ठीये'[4] बना रखे हैं जहाँ ये ठग विद्या चलाते रहते हैं। डोरे गंडे बनाना, झाड़फूँक करना, चढ़ी हुई चादरें बेचना तो साधारण बात है। मादक पदार्थों की तस्करी व हरामखोरी के कामों में जग में कुख्यात है, कई मुकदमें चल रहे हैं फिर भी बड़े ढीठपणे से कहते हैं- 'हमें ख्वाजा साहब की कुरबत[5] हासिल है।

2 अप्रेल 04 को भाजपा नेता आडवाणी 'चुनावी जियारत'[6] को आये- मौका देखकर खादिमों की संस्था 'अंजुमन' के खजाँची इब्राहीम ने

---

1. छल-कपट, 2. हेय, घृणा, 3. मत, धड़ा, 4. बैठकें, 5. सामीप्य, 6. दर्शन

बिना किसी का नाम लिए- खादिमों को ही गरीब नवाज व दरगाह से जुड़े होने की बात कही... व ख्वाजा सा. की खिदमत[1] करना खादिमों[2] का पैतृक अधिकार बताया। मियाँ इब्राहीम यह कहने से भी नहीं चूके कि- ''कुछ लोग अपने को ख्वाजा साहब का वंशज बताकर देश को भ्रमित कर रहे हैं।'' सचिव सरवर मियाँ ने आडवाणी जी की अगुवानी पर दीवान साहब के नहीं आने की तरफ इशारा किया...।

इन बातों को विधवा का प्रलाप ही कहा जा सकता है क्योंकि आनेवाला चाहे कोई भी हो दरगाह दीवान की उपस्थिति सज्जनतावश ही होती है, अनिवार्यता नहीं। अब रही खिदमत की बात- कोई भी कर सकता है- नौकर-खादिम-सेवक-भृत्य- का कोई पैतृक अधिकार नहीं होता है। पैतृक अधिकार वाले सम्राट अकबर के हाथों दण्डित नहीं होते, मुचलके नहीं भरते। खादिमों के नाम रजिस्टर में दर्ज होते रहे हैं। गलती करने पर प्रशासन किसी खादिम को दरगाह में आने से रोक सकता। नौकर वंशानुगत नहीं होते हैं फिर पैतृकता का दम भरने का क्या अर्थ है ?

धार्मिक रस्मों के नाम पर किये जाने वाले रिवाजों में 90 प्रतिशत फर्जीवाड़ा है- चादर चुमाना, अगरबत्ती लोबान मजारों पर जलाना, चराग के वक्त खड़े होना, छठी मनाना- ये सब बातें धर्म के नाम पर ढोंग है। ये सब बातें इस्लामी दायरे में नहीं है, फिर इन्हें धार्मिक रस्में बताना लोगों को बेवकूफ बनाना नहीं है तो क्या है ?

अब रहा सवाल खादिमों के उस बवाल का- ''कुछ लोग अपने को ख्वाजा का वंशज बता रहे हैं।'' यह खादिमों की सबसे निकृष्टतम् हरकत है जो वक्त बेवक्त ये लोग करते रहते हैं। हकीकत में जो सैय्यद होते हैं उन्हें लोग बताते हैं कि ये सैय्यद जाद हैं, ये नहीं कि खुद कहता फिरे कि मैं सैय्यद हूँ या मुझे सैय्यद कहो।'' एक जैनुल आबेदीन साहब ही नहीं जो-जो हजरात[3] ख्वाजा के वंशज है उनमें हक हकूक[4] के लिए लंबे मुकदमें चले हैं। इन मुकदमों से एक बात तो साफ है कि सभी पक्ष ख्वाजा साहब के ही वंशज है और सैय्यद है। इस बात को सम्राट अकबर से लेकर आज तक के सभी न्यायालयों ने पूरी छानबीन के बाद स्वीकारा है। भारत के

---

1. सेवा, चाकरी, 2. नौकर, सेवक, भृत्य, 3. श्रीमान्, 4. अधिकारों

सर्वोच्च न्यायालय ने सज्जाद नशीनी के दावेदारों[1] को ख्वाजा साहब का वंशज ही माना है। ब्रिटिश अदालत-प्रिवी कौंसिल ने भी सज्जाद नशीन[2] व अन्य दावेदारों को ख्वाजा साहब का वंशज ही माना है।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को नकारना अदालत की अवमानना है। "कुछ लोग अपने को ख्वाजा का वंशज बताकर भ्रमित कर रहे हैं।" कहकर इब्राहीम मियाँ अवमानना से बचना चाहते हैं। एक इब्राहीम साहब की ही यह फितरत[3] नहीं है यह तो खादिमों की वंशानुगत फितरत है- विभिन्न वादों से जो न्यायलयों में चले- यह साबित हो चुका है कि अजमेरी खादिम शेखजादे व सैय्यद जादे नहीं है- ये हजरात लाखा-टेका व अन्य भाईयों के वंशज है। चन्द्रभाट की पोथी जब न्यायालय में इन्ही खादिमों के आपसी वाद में पेश की गई तब स्पष्ट हुआ कि खादिम लाखा-टेका राखा, शाखा, ऊदा, बिरदा के वंशज है। सज्जाद नशीन पर कीचड़ उछालना इन्होंने एक आदत बना ली है- छोड़े भी तो कैसे ?

क्षार में कभी मधु मिल नहीं सकता।
जहन्नुम में कभी पुष्प खिल नहीं सकता॥
जमाना लाख कर ले जतन 'जौहर'।
बनावटी कभी असल हो नहीं सकता॥

1. पक्षकारों, 2. पीठाधीश, 3. मनोवृत्ति, आदत, स्वभाव

दरगाह शरीफ़ रस्मों की कैद में !

अजमेर स्थित ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। अपनी मुरादें[1] पूरी कराने के लिए अदना[2] से आला[3] यहाँ आते और दुआ मांगते[4] हैं। ख्वाजा का वास्ता देकर माँगी गई दुआ को अल्लाह पूरी करता है। इसी आशा से हर मजहब-औ-मिल्लत[5] के लोग परवानों की तरह आते रहते है। ख्वाजा गरीबों व जरूरतमंदों के लिए आशा का केन्द्र है- मंजिल पाने की सीढ़ी है।

ऐसे पवित्र स्थान पर अगर निजी स्वार्थों के लिए कोई उल्टे-सीधे चक्कर चलाकर स्वार्थसिद्ध करता है तो निश्चित रूप से पवित्रता नहीं रह पाती है। यह बात आस्ताना-ए-आलिया[6] गरीब नवाज पर शत प्रतिशत लागू होती। आज कोई भी अकीदतमंद[7] बेखौफ[8] होकर दरगाह में नहीं आ सकता है, कई अड़चने रोड़ा अटकाती दिखाई देती है। पग पग पर-हर दरवाजे पर यात्रियों को फँसाने के लिए कुचक्री व षड़यंत्रकारी व्यक्ति तैयार मिलेंगे। यहाँ तक कि रेल्वे स्टेशन, बस स्टेण्ड पर भी षड़यंत्री मिल जायेंगे। दरगाह शरीफ एक तरह से चंद लोगों की कैद में है। कौन है वो लोग जो गरीब नवाज व अकीदतमंद के बीच रोड़ा बने हुये है ?

ये लोग हैं- गरीब नवाज के मुरीद (शिष्य) लाखा, टेका, उदा, बिरदा, राखा, शाखा के वंशज। संक्षेप में इन्हें लाखा-टेका की औलाद कहा गया है। इनमें आपस में चले मुकदमों में कोर्ट ने भी इन्हें लाखा टेका की औलाद ही माना है (साक्ष्य के रूप में न्यायालय के निर्णय व चन्द्रभाट की पोथी देखें।)

इन बंधुओं ने गरीब नवाज की अच्छी खिदमत[9] करके गरीब नवाज को खुश किया पर आज उन्हीं के वंशजों ने लूट खसोट, खून, बलात्कार,

---

1. कामनाएं, 2. छोटा, 3. बड़ा, 4. प्रार्थना करना, 5. हर धर्म व पंथ के, 6. पवित्र मजार, 7. आस्थावान, 8. निडर, 9. सेवा

ब्लेकमेल, नशीले पदार्थों की तस्करी का बहुत पेचीदा जाल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बिछा रखा है। इनकी हरकतों से सामान्य आदमी भी खुश नहीं हो सकता है तो फिर गरीब नवाज के खुश होने का तो सवाल ही नहीं उठता है। एक-एक करके हम इनकी करतूतों का जायजा[1] ले फिर निर्णय लें कि इन खादिमों से दरगाह को मुक्त कराना चाहिये या नहीं ?

सेवक- भृत्य, नौकर, खिदमतगार, खादिम सब एक ही भाव को प्रकट करनेवाले शब्द है। इनकी नियुक्ति होती थी, नियुक्ति का एक तरीका था। पहले इनको परीक्षा देनी पड़ती थी। नियुक्ति रजिस्टर में नाम, तनख्वाह, काम का हवाला[2] होता था- पोशाक नियत थी। जब सज्जाद नशीन के पद के लिए ख्वाजा साहब के वंशजों में मुकदमेंबाजी चली तब इनको मौका मिल गया- पोल देखकर ये नौकर से मालिक बन बैठे। इनकी हिमाकत तो देखिये जब मैंने एक खादिम से सज्जाद नशीन साहब का पता पूंछा तो बिगड़ैल साँड की तरह कैरायली[3] नजरों से देखकर गुर्राया- "क्या काम है? मैं हूँ यहाँ का गद्दी नशीन।"

सज्जाद नशीन के लिए दरगाह परिसर में बैठने के लिए कोई कमरा नहीं है पर इन नौकरों (खादिमो) ने हुजरों (कमरों) पर अधिकार कर रखा है।

लूट खसौट- वैसे तो दिखने में खादिम बड़े मिलनसार-खुशमिजाज[4] लगते हैं पर रूप व रूपया देखकर 90 प्रतिशत खादिम शैतान को पीछे छोड़ देते हैं। यात्री से पैसा ऐंठने के लिए कई प्रकार के हथकण्डे अपनाते हैं। यात्री को ठेके पर दे देते है। ठेके पर लेनेवाला अधिकतम पैसा कमाने के चक्कर में सभी मानवीय सीमाएं तोड़ देता है। मराठा शासक इनकी हरकतों के कारण बिना जियारत के वापस चला गया और नसीराबाद जाकर अंग्रेज अधिकारियों से शिकायत की। अंग्रेज तो इन्हें हरामखोर[5] कहा करते थे। ये जिस थाली में खाते उसी में छेद करते है। खादिमों में आपस में पैसों को लेकर या यात्रियों को अपनी तरफ बुलाने की बात पर लड़ाई-झगड़ा तो साधारण बात है- खून खराबा तक हो जाता है। 11 जुलाई 2004 रविवार को खादिम मोहल्ला निवासी अनवर उर्फ पव्वा ने चौधरी मोहल्ला निवासी

---

1. जाँच करें-परखें, 2. उल्लेख, 3. वक्र, 4. प्रसन्नचित्त, 5. मुफ्तखोर, बिना मेहनत की खाने वाले

जावेद अली चिश्ती को चाकू से घायल कर दिया (दै. नवज्योति 12 जुलाई 04 अजमेर संस्करण) इन दोनों में एक यात्री को जियारत कराने के मामले में झगड़ा हो गया।

ख्वाजा साहब की खिदमत व जियारत[1] के नाम पर जो तरीके इन लोगों ने अपना रखे हैं, उनका इस्लाम से कोई लेना-देना नहीं है। किसी भी कब्र पर चाहे वो अदना इंसान की हो या पीर-पैगम्बर की- मुसलमान के लिए (फातिहा पढ़ने) जियारत का हुक्म है। इसके आगे सब बातें मनगढ़न्त है- लूट मचाने के तरीके हैं। आलमे इस्लाम[2] के लिए सबसे प्रतिष्ठित कब्र हादिये इस्लाम[3] हजरत मोहम्मद मुस्तुफा सल. की है- जो मदीना में है। जब वहाँ अगरबत्ती, लोबान, फूल-चादर, चढ़ावे नहीं होते हैं तो फिर अजमेर व अन्य स्थानों के मजार पर क्यों? किसने निकाले ये तरीके? आग को कब्र से चालीस कदम दूर रखना चाहिये यह बात पैगम्बरे-इस्लाम ने बतायी पर अजमेर में पैगम्बर साहब की नहीं खादिमों की चलती है।

कब्र पर फातिहा (कुरआन की आयतें पढ़कर मृतक की मुक्ति हेतु अल्लाह से प्रार्थना करना) पढ़कर नीची नजरों से कब्र को देखना (जियारत करना) तो ठीक है पर यहाँ तो चद्दर ओढ़ाकर जियारत कराई जाती है। भोले भाले यात्री जो अधिकांश अनपढ़ होते हैं- अकीदत (आस्था) के नाम पर उन्हें अंधा बना दिया जाता है। लोग इन खादिमों के कहने से चादर चूमते हैं, दरगाह के किंवाड़, खंभे चूमते, सीढ़ियों को झुककर हाथ से छूकर सलाम करते हैं। हमें तो इस्लाम में कहीं पर ये बातें नहीं मिली।

ग़रीब नवाज के आस्ताने[4] पर छेद में हाथ डलवाकर गरीब नवाज से मुसाफ़ा[5] कराने का दम भरते खादिमों को देखा है। बदले में जायरीनों की अंगूठियाँ गायब हो जाती, जेबें कट जाती है। दरगाह में जेब कतरों का एक बहुत बड़ा गिरोह पल रहा है। दरगाह में जगह-जगह लूटने के लिए खादिम बैठे हुये हैं- कोई रजिस्टर व रसीद बुक लेकर बैठा है तो कोई मोरछल। जितने आदमी उतने तरीके ये लोग अपनाते रहते हैं। उद्देश्य एक मात्र रूपया ऐंठना।

दरगाह में जगह-जगह दरगाह कमेटी की तरफ से दान पात्र रखे हुए

---

1. दर्शन, 2. इस्लामी जगत, 3. इस्लाम के पैगम्बर, 4. मजार शरीफ, 5. हाथ मिलाना

हैं। उनमें अगर कोई यात्री रूपया डालने का प्रयास करता तो खादिम रोकने के लिए झपट पड़ेंगे। मैंने एक दिन नजर बचाकर दान पात्र में रूपए डल दिये पाँच-छः खादिम लड़ने लग गये। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की तो अपना हक[1] जताने लग गये- एक तरफ तो ये अपने आपको सैय्यद जादे[2] बताते हैं दूसरी तरफ सदकाखैरात[3] पर हक जताते है। जबकि सैय्यद के लिए सदका व खैरात खाना हराम है। दरगाह का कोई कोना ऐसा नहीं है जहाँ इन्होंने अनाधिकृत कब्जा नहीं कर रखा हो।

नशीले पदार्थों की तस्करी व अन्य अपराधिक कृत्यों के लिए खादिम सारे जग में कुख्यात है फिर भी तुर्रा यह है कि- अगर कोई पकड़ा जाता है तो खादिम समाज की बदनामी का रोना रोते हैं- कहते हैं अपराधी को खादिम समाज से मत जोड़ो।

खादिमों ने दरगाह की पवित्रता को बिगाड़ के रख दिया। पग-पग पर खादिम अड़चने उत्पन्न करते मिल जायेंगे। ऐसा महसूस होता है मानो दरगाह खादिमों की कैद में है। दरगाह की पवित्रता को बनाये रखना है तो खादिमों को दरगाह से खदेड़कर बाहर निकाला जाय। खिदमत के लिए नियुक्ति परीक्षा के बाद दी जाय। वो भी दरगाह की साफ-सफाई व निगरानी के लिए न कि जगह-जगह लूटने के लिए। नौकर को नौकर ही रहना चाहिए जबकि अजमेर दरगाह के नौकर (खादिम) मालिक बन बैठे और तस्करी, लूट व अय्याशी में लिप्त हो गये अतः लाखा-टेका के वंशजों से दरगाह को मुक्त कराना जरूरी है।

---
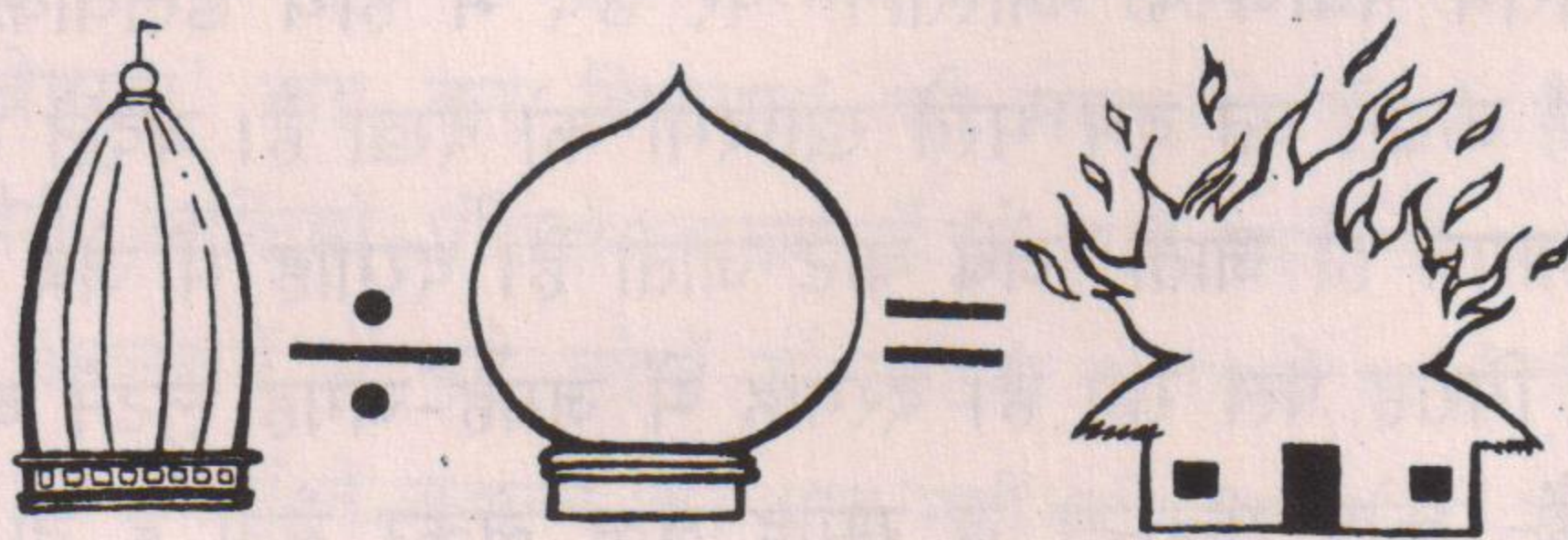
1. अधिकार।

2. पैगम्बर साहब की बेटी फातिमा की संतति सादात व सैय्यद कहलाते हैं, अन्य नहीं।

3. दान-पुण्य - सदका व खैरात सैय्यदों के लिए हराम (बुरा व मना) है। एक बार बचपन मं हजरत मोहम्मद सा. के नवासों ने आकर बताया हमें सदके की खजूर खाने को दी गई। नानाजान ने अंगुली मुंह में डालकर उल्टी कराई और फरमाया सैय्यदों के लिए सदका व खैरात हराम है।

सच्चाई सामने आ ही जाती है

दिनांक 12 सितंबर 2004 के दैनिक नवज्योति के अजमेर संस्करण के पृष्ठ 11 पर चौथे कालम में ''ख्वाजा फखरूद्दीन गुर्देजी के उर्स का कुल आज'' नामक-सुर्खी में जो भ्रामक समाचार प्रकाशित करवाकर और प्रकाशित करके पाठकों में एक भ्रामक स्थिति पैदा करने की षड़यंत्रपूर्वक कुचेष्टा की गई वह अपने आप में एक झूठी वाहवाही के सिवा कुछ नहीं है।

उपरोक्त शीर्षक में सूफी संत हजरत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती-संजरी-अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह के जाँ-नशीन, जिनको खादिमों का पूर्वज बताया है। यह एक सफेद झूठ के अलावा कुछ नहीं है- क्योंकि फखरूद्दीन गुर्देजी नामक व्यक्ति को न तो गरीब नवाज ने अपना मुरीद बनाया और ना जाँनशीन ! इसी प्रकार ख्वाजा साहब के गुरू महाराज हजरत उस्मान हारूनी ने भी किसी फखरूद्दीन गुर्देजी को अपना मुरीद नहीं बनाया। ऐसी किसी ऐतिहासिक पुस्तक जिसमें सूफी संतों का वर्णन पढ़ने को मिलता उसमें न तो इस बात का उल्लेख देखने को मिला ना ही पढ़ने को।

जबकि वास्तविकता यह है कि फखरूद्दीन गुर्देजी-जिनकी संतान होना खादिम लोग अपने आपको बताते हैं- वो, असल में लाखा था। इसकी माँ का नाम मीना था जो पृथ्वीराज की रखैल थी। जिस फखरूद्दीन गुर्देजी की संतान होने का झूंठा प्रचार करते हैं उसका असली नाम लाखा था। लाखा का मजार मोहल्ला सिलवटान ऊपरली हताई की गली, लाखन कोटड़ी में है। लाखा के नाम से ही इस मोहल्ले का नाम लाखन कोटड़ी पड़ा। सन् 1947 तक खादिम अपने पूर्वज लाखा की कब्र पर जाकर फूल अगरबत्ती चढ़ाते रहे व उर्स मनाते रहे। आज सिर्फ हाजी इफ्तेखार अली पुत्र सरफराज अली ही ऐसे खादिम है जो वहाँ फूल अगरबत्ती करते है। आजकल तो यदा-कदा ही फूल अगरबत्ती होती है।

हजरत उस्मान हारूनी से संबंध जोड़ने वाले फखरूद्दीन गुर्देजी की बीबी के नाम का कहीं वर्णन नहीं मिला और उनकी संतान का भी कहीं जिक्र नहीं है। गुर्देजी को खादिम उस्मान हारूनी का चचा जाद भाई कहते हैं तो फिर ये ख्वाजा साहब के मुरीद कैसे और **अगर मुरीद बनकर आये तो खादिम कैसे ?** कोई फखरूद्दीन गुर्देजी नामक व्यक्ति ख्वाजा साहब के साथ भारत नहीं आया। किसी एतिहासिक पुस्तक में इस बात का वर्णन नहीं है।

लाखा भील जिसको ख्वाजा ने मुरीद बनाकर फखरूद्दीन नाम दिया उसकी कब्र लाखन कोटड़ी ऊपरली हथाई में मौजूद है इसकी पुष्टि नवाब खादिम हुसैन की पुस्तक मोइनुल अरवाह पृष्ठ 410 से व आसानुस्सिहर पुस्तक के पृष्ठ 71 व 72 से होती है। इसी बात का अकाट्य प्रमाण चन्द्र भाट की पोथी है (चन्द्र भाट का संवत 1175) जो कि विक्रमी संवत 1265 में लिखी गई) चन्द्र भाट ने पोथी में लिखा ''दोनों भाईयों के इस्लाम स्वीकारने के बाद लाखा का नाम फखरूद्दीन व टेका का नाम मोहम्मद यादगार रखा।' बही की पृष्ठ संख्या 44 व 45 ।

चन्द्र भाट की पोथी को कोर्ट में इन्हीं खादिमों के आपसी मुकदमे में- एक जीबिट (प्रदश) डी- 44 व डी 45 के रूप में पत्रावली में संलग्न कराया गया। अदालत ने निर्णय दिया चन्द्र भाट के संवत 1175 में लाखा व टेका मुसलमान बने....लाखा का इस्लामी नाम फखरूद्दीन व टेका का मोहम्मद यादगार रखा।

''9 अगस्त 1971 को राजस्थान उच्च न्यायालय ने दोनों अंजुमनों को लाखा व टेका की जायदाद से आधा-आधा हिस्सा दिया। लेकिन धोखा करके 11 आने हिस्सा लाखावालान व 5 आने टेका वालान के नाम करवा दिया। इकरारनामे में अपनी अंजुमन के आगे लाखावालान नहीं लिखा और टेकावालान अंजुमन के आगे टेकावालान लिखवा दिया।'' उपरोक्त वर्णित बयान शेख रियाज मोहम्मद का है जो यह बताता है कि खादिम लाखा व टेका की औलाद है।

ठीक इसी प्रकार जिस मोहम्मद यादगार- सब्जवारी की औलाद होने का खादिम दम भरते हैं वह कभी हिन्दुस्तान में ही नहीं आये उनकी कब्र सब्जवार हिसार (अफगानिस्तान) में है यहाँ अजमेर में नहीं है। तारीखे

फरिश्ता में यादगार की कब्र सब्जवार में ही बताई।

''हमारे ख्वाजा'' नामक पुस्तक के लेखक खादिम फजले मतीन के वालिद है मआनी अजमेरी ने अंदाज से ही फरिश्ता को झूठा लिख दिया। 12 सितंबर 04 को भास्कर के पृष्ठ 4 के कालम 6 पर खबर छपी-''हजरत शेखुल मशायख का सालाना उर्स संपन्न।'' यह खबर मोहम्मद यादगार चिश्ती सब्जवारी के बारे में थी। उनके वंशज का नाम शेखजादा सैय्यद हबीबुर्रहमान चिश्ती लिखा।

कितनी भ्रामक बातें ये लोग छपवा देते हैं इनका नमूना देखिये-यादगार को चिश्ती-सब्जवारी लिख दिया तो अजमेरी लिखने में क्या परेशानी थी ? और शेखजादा सैय्यद हबीबुर्रहमान साहब शेखजादे व सैय्यद दोनों ही बन रहे ? आपके सिवा अन्य लोग तो कुछ समझते ही नहीं ?

मोहम्मद यादगार को शेखुल मशायख का खिताब किसमें दिया गया? जबकि सच्चाई यह है कि ये शेखजादे खादिम टेका की औलाद है। टेका का मजार मोहल्ला टेकावालान सरावगी मोहल्ला स्थित टाल में है। शेखुल मशायख का खिताब हजरत गरीब नवाज की औलाद में 24 वें दीवान हजरत गयासुद्दीन सा. को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने 1.1.1877 को देकर नवाजा। इस तरह का खिताब आज तक हिन्दुस्तान में किसी को अता[1] नहीं किया गया। तब यादगार कहाँ से खिताब लेकर आ गये ?

दरगाह कमेटी लाखावालान व टेकावालान खादिमों के बारे में असलियत को जानकर भी दरगाह में ऐसे उर्स करने की इजाजत देती है यह ताज्जुब की बात है।

दिनांक 14.09.04 दैनिक भास्कर पृष्ठ 16 कॉलम नं. 2 पर छपा-''ख्वाजा फखर का उर्स कल' आगे कॉलम 3 के मध्य बड़े अक्षरों में लिखा-''चाँदरात को चढ़ेगा सरवाड़ स्थित बाबा फखर की दरगाह में झंडा।''

ख्वाजा गरीब नवाज के साहबजादे ख्वाजा फखर के बारे में कोई पुख्ता प्रमाण नहीं जिसके आधार पर कहा जा सके कि ख्वाजा फखर सरवाड़ में दफन है। अगर सरवाड़ के तालाब की उस पाल की कार्बन-

---

1. देना

पद्दति से उम्र निकाली जाये तो पता चलेगा- यह तालाब ज्यादा से ज्यादा 400 वर्ष पुराना है जबकि ख्वाजा फखर का इंतकाल[1] 764 वर्ष पूर्व 5 साबान 661 हिजरी को हुआ।

जहाँ-जहाँ ख्वाजा साहब के वंशज है वहाँ उर्स पर दरगाह दीवान की तरफ से चादर जाती है तो फिर सरवाड़ में क्यों नहीं जाती ? बादशाह इल्तुतमिश का फरमान ही एकमात्र आधार है जिससे साबित होता है कि ख्वाजा फखर को माण्डल व रायला की जागीरी दी गई और ख्वाजा फखर ने माण्डल में अंगूरों की खेती की। माण्डल स्थित ख्वाजा फखर के मजार की जानकारी की पुष्टि करने के बाद दरगाह दीवान की तरफ से चादर दीवान साहब खुद लेकर जाने लगे।

खादिमो द्वारा सरवाड़ में नौ दिन उर्स मनाया जाता है इसकी क्या तुक[2] है ? ख्वाजा फखर का इंतकाल 5 साबान को हुआ था फिर नौ दिन का क्यों ? गरीब नवाज का इंतकाल 1 रज्जब से 6 के बीच कब हुआ पता नहीं होने से 6 दिन उर्स मनाया जाता है ख्वाजा फखर के उर्स का 9 दिन मनाना समझ से बाहर है वहीं पर माण्डल शरीफ में 5 साबान को ही उर्स होता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष में देखने से पता चलता है खादिम लोग झूठ के आधार पर लूट मचाने में लगे हुये है। वोटों के भिखारी नेता इनके झांसे में जान बूझकर आते हैं प्रशासन इसी कारण मौन है और ये खादिम उलूल झुलूल[3] रस्मों के आधार पर मनमानी कर रहे हैं।

"प्रजातंत्र का पोषण युग में आँधी पीसे कुत्ता खावे रे।
जनता को तो राम रूखालो मुसटंड मौज उड़ावे रे।।"

---

1. स्वर्गवास, 2. औचित्य, 3. व्यर्थ की

खादिमों के क्रिया कलाप इस्लामी नहीं है!

गरीब नवाज के भारत में आने से पहले इस्लाम भारत में आ चुका था पर हकीकत[1] में इस्लाम के पौधे ने वटवृक्ष का रूप ख्वाजा साहब के आने के बाद ही लिया और गरीब नवाज की शिक्षाओं से फलने-फूलने का बहुत बड़ा 'रोल' रहा है।

जहाँ इस्लाम का पौधा वटवृक्ष बना उसी अजमेर में आज इस्लाम की जड़ों में तेजाब डाला जा रहा है। बड़ी सफाई व खूबसूरती से अकीदत (आस्था) के नाम पर तेजाब डालने का काम कर रहे हैं- दरगाह के खादिम जो सैय्यद-शेख, चिश्ती, फारूख़ी, अशरफी और न जाने क्या-क्या बने बैठे हैं?

ये खादिम अपने आप को फखरूद्दीन गुरदेजी व मोहम्मद यादगार के वंशज बताते हैं पर समकालीन व बाद के ऐतिहासिक तथ्यों को जाँचने-परखने से पता चलता है कि ये दोनों सज्जन भारत में ही नहीं आये (देखिये, तारीखे फरिश्ता)। प्रश्न पैदा होता है तब इन खादिमों की वंश परंपरा क्या है ? इस बात का पता लगाने के लिये- इन्हीं खादिमों में अपने हक-हकूक के लिए विभिन्न न्यायालयों में वाद चले। इन मुकदमों में इन्हीं लोगों (मुकदमा लड़नेवालों) ने चन्द्रभाट की पोथी कोर्ट में प्रस्तुत कर स्वयं को लाखा-टेका उदा शाखा राखा बिरदा के वंशज साबित किया (अजमेर क़ोर्ट व उच्च न्यायालय के फैसले देखें)। सम्राट औरंगजेब के थोड़े दिनो बाद भारत के सैय्यदों पर एक पुस्तक[2] लिखी गई जिसमें एक सैय्यद परिवार भी कहीं बसा हुआ था तो भी उसका वर्णन उस पुस्तक में हैं पर अजमेरी खादिमों का सैय्यदों के रूप में कहीं जिक्र नहीं है। 'मदाईन मोईन' नामक

---

1. वास्तव में।

2. औरंगजेब के बेटे बहादुरशाह के समय 'तजकरातुस्सादात' पुस्तक लिखी गई। जो सैयद सौलत हुसैन के पुत्रों के पास है।

पुस्तक सालार जंग म्यूजियम हैदराबाद व सैय्यद सौलत हुसैन साहब के साहबजादों के पास अजमेर में है। इसमें भी खादिमों को सैय्यद नहीं बताया। कई पुस्तकों से साबित हो चुका कि खादिम शेख व सैय्यद नहीं है।

खादिमों ने अपनी हवस[1] की पूर्ति के लिए न केवल गरीब नवाज की शिक्षाओं की धज्जियाँ उड़ा दी बल्कि इस्लामी परंपराओं को उलटकर रख दिया फिर भी दम भरते इस्लाम का और फख्र[2] से कहते हैं- "हम ख़्वाजा के ख़ादिम है, हमें गरीब नवाज की कुरबत (सामिप्य) हाँसिल है।"

दरगाह शरीफ़ में बड़े अजीबो-गरीब रिवाज इन ख़ादिमों ने चला रखे हैं जिनका इस्लाम से कोई लेना-देना नहीं है। अब आप ही विचारिये जिन बातों का इस्लाम से रिश्ता नहीं है उन बातों से गरीब नवाज कैसे खुश हो सकते हैं ?

इस्लाम में अपनी तरफ से नई बात जोड़ना मना है फिर भी ये ख़ादिम नई-नई परंपराएँ चलाते रहते हैं इस्लाम के नाम पर। कब्र पर अगरबत्ती, लोबान इस्लामी रिवाज नहीं है पर खादिम लोगों ने लोबान जलाने का वक्त नियत कर रखा है और लोगों को लोबान 'लेने' (लोबान का धुंआँ अपने शरीर से छुआने के लिए प्रेरित करना) खादिमों की देखा देखी दूसरे लोगों को भी लोबान दानी लेकर दरगाह में व बाहर देखा जा सकता है। लोबान लेकर लोग पैसा देते हैं।

अगर किसी यात्री की पीठ गरीब नवाज के रोजे[3] की तरफ अज्ञानतावश हो जावे तो टोकने के लिए खादिम झल्ला पड़ेंगे पर खुद ख्वाजा साहब की तरफ पीठ करके मुख्य द्वार पर रसीद बुक व रजिस्टर लेकर बैठे मिलेंगे। 'भट्ट जी तो भट्टा खावे दूजा ने ज्ञान बतावे' वाली कहावत इन खादिमों पर पूरी तरह लागू होती है।

गरीब नवाज नशीले पदार्थों से दूर रहे और अपने शिष्यों को भी दूर रहने की शिक्षा दी पर आज अधिकांश खादिमों के चरस, स्मैक, ब्राऊन शुगर से गहरे संबंध उजागर हुये हैं। कई तस्करी करते पकड़े गये और जेलों में बन्द है।

नौबतबाजी[4] के समय खड़े होना, चराग-लोबान-फातिहा व छठी पर

---

1. इच्छा, लालसा, 2. गर्व, 3. मजार शरीफ, 4. नौबत बजाने के समय

सिजरा[1] पढ़ते समय खड़ा होना इस्लामी परंपराओं में नहीं है पर खादिमों ने ये रस्में भी अपनी तरफ से चलाई और इन मौकों पर खड़े रहने की परंपरा भी इनकी अपनी है। अगर ये रिवाज इस्लामी होते तो सबसे पहले हजरत मोहम्मद स. की बारवीं[2] तारीख मनाई जाती और नौबतबाजी, लोबान-अगरबत्ती मदीना में हजरत मोहम्मद के रोजे पर होती। इससे पता चलता है कि अजमेरी खादिमों के क्रियाकलाप इस्लामी नहीं है।

थोड़ी देर के लिये मान भी लें- कि छठी अकीदत[3] नाम पर मनाई जाती है तो पैगम्बरे इस्लाम की 12 वीं पहले मनावे पर ऐसी रस्मों की इस्लाम इजाजत नहीं देता है। इस्लाम की मूल शिक्षा नमाज व रोजा की तरफ इनका ध्यान नहीं है। सुन्नत (हजरत मोहम्मद द्वारा बताये तरीके) की पाबंदी[4] बिरले खादिम ही करते हैं, अधिकांश बेनमाजी, दाढ़ी मुंडे मिलेंगे।

निराकार उपासना के स्थान पर खादिम पीर गुलाम रसूल बजरंगगढ़ मंदिर में जाकर अंडे से निर्मित केक चढ़ाकर इस्लाम को नकारने का काम तो किया ही है साथ ही सनातन धर्मियों की आस्था से भी खिलवाड़ ही किया, फिर भी दम भरते हैं कि हम मुसलमान है। 23 अप्रेल 2003 को बजरंगगढ़ केक चढ़ाते भास्कर में छपे चित्र को देखकर रा.स्व. सेवक के सुदर्शन जी जरूर खुश होंगे- यह सुदर्शन जी की दृष्टि में शायद इस्लाम का भारतीयकरण हो सकता है पर मेरी दृष्टि में पीर गुलाम रसूल इस्लाम व सनातनधर्मी दोनों आस्थाओं की मखौल उड़ानेवाला है।

मनौती-मिन्नत[5], नजर-नियाज[6], दान-पुण्य अल्लाह के नाम पर हो- यह तो है इस्लामी तरीका। अगर कोई दूसरे- चाहे वो पीर-पैगम्बर, वली[7]- के नाम पर नजर नियाज-चढ़ावे, मनौती करता है तो वो इस्लाम में मना है पर अजमेरी खादिमों का तो जीवन का आधार ही नजर, नियाज, चढ़ावे, भेंट लेना है। हकीकत में हराम[8] इनके मुँह लग गया है, छूटना बड़ा मुश्किल है। खादिम लोग अनपढ़ मुसलमानों को अकीदत के नाम पर बेवकूफ बनाकर लूटते हैं, वो तो ठीक क्योंकि इनके माजने ही ऐसे ही है पर आस्था के नाम पर गैर मुस्लिमों के साथ धोखाधड़ी, लूट-खसौट कहाँ की इंसानियत है?

---

1. वंशावली। 2. 12 रवि उल अव्वल सोमवार को पैगम्बर हजरत मोहम्मद मुस्तफा पैदा हुए व इसी तारीख व वार को दुनिया से रुखसत फरमाई। 3. नियमित, 4. मनौती मांगना, 5. भेंट-चढ़ावा, 6. अल्लाह का दोस्त, 7. जो धर्म की तरफ से मना है।

इनकी हिमाकत तो देखिए.....

लाखा व टेका के वंशज हैं तो भी गरीब नवाज के खादिम पर अपने आपको सैय्यद व शेख बताकर कुलीन[1] होने का दम भरते और गरीब नवाज के वंशजों को (जो पीर जादे कहलाते हैं) हेय नजरों से देखते हैं। विशेषकर ख्वाजा साहब के सज्जाद नशीन का नाम लेते ही बिगड़ैल साँड की तरह बिदकने लगते हैं। खादिमों की यह प्रवृति अकबर के काल में भी ऐसी हो गई थी क्योंकि सम्राट अकबर ने सज्जाद नशीन व मुलतवी[2] दोनों पद एक ही व्यक्ति को दे दिए। उस समय के सज्जाद नशीन व मुलतवी ने खादिमों की लूट की प्रवृति पर अंकुश लगाया तो ये ओछी हरकतों पर उतर आए परिणामस्वरूप अकबर ने इनको फतहपुर सीकरी बुलाकर दंडित किया और मुचलके[3] भरवाकर छोड़ा।

दादा की भूल पोते ने सुधारी। सम्राट शाहजहाँ ने सज्जाद नशीन व मुलतवी का पद अलग-अलग कर दिया, फिर भी खादिमों का व्यवहार सज्जाद नशीन व मुलतवी से कभी अच्छा, नहीं रहा। नौकर होकर अपने आका[4] के वंशज पर ऊँगली उठाए यह बात किसी दृष्टिकोण से ठीक नहीं है।

इनकी हिमाकत[5] तो देखिए- सज्जाद नशीन से संबंधित कोई भी बात हो सबसे पहले एतराज खादिमों की तरफ से ही उठता है- सज्जाद नशीन बाहर चला जाए या अस्वस्थ होने की हालत में महफिल खाने में सदारत[6] के लिए अपने भाई-बेटे को कहते हैं यह उनका निजी मामला है पर खादिमों की हिम्मत तो देखिए अपनी औकात[7] से बढ़कर विरोध दर्ज करा रहे हैं। इनका विरोध विधवा का प्रलाप मात्र है क्योंकि खादिमों की कोई कानूनी हैसियत[8] नहीं है।

---

1. श्रेष्ठ, 2. प्रशासक, आय इकट्ठी करने वाला, 3. बॉण्ड भरवाए, 4. स्वामी, 5. धृष्टता, 6. अध्यक्षता, 7. हैसियत, 8. स्थान।

सज्जाद नशीन को नीचा दिखाने में ये अच्छा-बुरा कुछ भी नहीं सोचते हैं, जी हुजूरी व लल्लू चप्पू में खादिम लोग बड़े माहिर है। कुछ खादिम अपने आपको स्थानीय कांग्रेस की नींव का पत्थर मानते हैं। श्री आडवाणी के दरगाह आने पर सज्जाद नशीन की अनुपस्थिति का जिक्र आडवाणी के सामने किया। कोई इन चापलूसों से पूछे- क्या सज्जाद नशीन की उपस्थिति राजनैतिक चापलूसी के लिए अनिवार्य है? हाँ यह बात जरूर है कि सज्जनतावश घर आए मेहमान का स्वागत् करना चाहिए- यह अनिवार्यता नहीं है।

पर इनकी (खादिमों की) हिमाकत तो देखिये अपने आका गरीब नवाज के वंशज को येन केन प्रकारेण बदनाम करके नीचा दिखाने का अवसर खोना नहीं चाहते, चाहे अवसर अनुचित ही हो। मौका मिलते ही बात उछाल देते हैं चाहे तीर निशाने पर लगे या नहीं लगे। सज्जाद नशीन पर कीचड़ उछालना इनकी आदत है।

ताज्जुब तो इस बात का है कि जो काम गरीब नवाज ने कभी नहीं किए व्रो काम गरीब नवाज के इन खादिमों ने इस्लाम के नाम पर नई-नई परंपराएँ चलकर कर दिए। इन लोगों ने ऐसी-ऐसी परंपराएँ विकसित कर डाली जिनका इस्लाम से कोई लेना देना नहीं। नई परंपराओं को विकसित करने में इन्होंने अनपढ़ व भोले-भाले आदमियों की आस्था को आधार बनाया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सुदर्शन जी बार-बार (अपने भाषणों में व पाथेय कण में) इस्लाम के भारतीयकरण की बात कहते रहते हैं मेरा सुदर्शन साहब से निवेदन है आप बिना किसी को बताये अजमेर तशरीफ लावें और दरगाह गरीब नवाज के खादिमों के क्रिया कलापों का अवलोकन करें। मेरा दावा है सुदर्शन जी आपकी आत्मा पुकार उठेगी- इस्लाम का भारतीयकरण ही नहीं अजमेर में तो इस्लाम का हिन्दूकरण हो गया है। आपकी मंशा इस्लाम के भारतीयकरण की जो भी हो पर अजमेरी खादिमों ने इसका रूप एकदम विकृत कर दिया। आप दरगाह में इस्लाम के रूप में हिन्दुओं के रिवाज पायेंगे। 'हिन्दुओं के रिवाजों' से आशय आप सनातन धर्म के रीवाजों से मत लगाना। शुद्ध सनातन (वैदिक युग तक- जिसमें प्रतीक पूजा का प्रावधान नहीं है) का अरबी संस्करण अगर कोई है तो वह

इस्लाम है जिसमें एक निराकार की उपासना का प्रावधान है व्यक्ति पूजा का नहीं। आपको अजमेर में न तो शुद्ध इस्लांम मिलेगा न भारतीय स्वरूप (वैदिक) आपको मिलेगा हिन्दुत्व वाला स्वरूप भी 'सिंधु' से उत्पन्न नहीं बल्कि अरबी तुर्की-फारसी वाला हिन्दू रूप।

सुदर्शन जी आप जब ख्वाजा साहब के खादिमों के क्रिया-कलाप देखेंगे तो इन्हें दाद दिए बिना नहीं रहेंगे क्योंकि आपकी भावना (भारतीयकरण) से भी आगे बढ़कर इन्होंने इस्लाम का रूप एकदम बदलकर रख दिया। आप यहाँ पायेंगे- देवरों व अन्य पूजा स्थलों पर जिस तरह पुजारी व भोपे 'धूप' लगाते हैं ठीक उसी तरह लोबान अगरबत्ती मजार पर जलाते हुए खादिम मिल जायेंगे वो भी सुबह-शाम नियमित। इनके तरीकों को देखकर के ही तो उमा भारती ने गरीब नवाज के आस्ताने[1] के बारे में कहा- "मैं इन्हें बाबा अमरनाथ मानती हूँ।" अगर मजार शरीफ पर इस्लामी तरीके वो देखती तो ऐसा नहीं कहती।

आप देखेंगे- जैसे मंदिरों में आरती के समय सब खड़े रहते हैं ठीक उसी तरह यहाँ चरागबत्ती के वक्त सब को खड़े कर देते हैं, शमा दानियों[2] में शमाएँ जलाकर सर पे लेके खड़े रहते हैं। इस्लामी परंपरा में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। आप अगर किसी खादिम के जरिये दरगाह में जियारत (दर्शन) करने जाएं तो बहुत से काम आप से ऐसे कराए जायेंगे जैसे पुष्कर या हरिद्वार के पंडे कराते हैं- आपके हाथों फूल चढ़वाएंगे, आपके गले में लच्छा बाँधेंगे (सनातनी भाई ताँती बँधवाना कहते है) आपकी कोई मिन्नत-मनौती है तो आपसे कई बातें कहीं जायेगी आप उस समय अपने आपको मंदिर-देवरे में ही खड़ा महसूस करेंगे। भभूत व पाती देवालयों में दी जाती वैसे ही अगर[3] व फूल यहाँ दिये जाते हैं। मंदिरों में जैसे चरणामृत दिया जाता है दरगाह में आपके माँगने पर गुस्ल[4] का पानी उपलब्ध करा दिया जाएगा। आपके सर पर चद्दर ढककर दर्शन कराके आपके लिए दुआ मांगी जाएगी, आपके सर पर चादर की 'लीरी' बाँधकर दस्तारबंदी[5] की जाएगी। आप अपने आपको खुश नसीब[6] महसूस करेंगे फिर होगा दौर पैसे लूटने का वैसे तो चादर खरीदने से लेकर दस्तारबंदी तक कई जगह आपको जेब ढीली

---

1. मजार शरीफ, 2. दीया बत्ती का पात्र, 3. भभूत, 4. मजार को धोना, स्नान 5. पगड़ी बंधवाना, 6. सौभाग्यशाली।

करनी पड़ेगी पर अंत तक आपसे विभिन्न बहानों से पैसे ऐंठे जाते रहेंगे जैसे पंडे लोग पिण्डदान के नाम पर लेते हैं। आप खादिमों व पंडों के व्यवहार में थोड़ा भेद यह पाएंगे कि पैसा खत्म हो जाने पर पंडे आपको जितनी जरूरत है दे देंगे पर पैसा खत्म हो जाने पर खादिम एकदम किनारा कर लेंगे। आप अजमेर की कई मस्जिदों में किराये के लिए हाथ फैलाते लोगों को पायेंगे।

मिन्नत-मनोती पूरी होने पर कई तरह की रस्में जैसे बाल उतरवाना, सवा मणी, फलों व मिठाइयों के बराबर तोलना इन सब कामों में नजराणे[1] व चौथान[2] के नाम पर खादिम मनमानी करते हैं। अकीदत (आस्था) के नाम पर जम के लूटते हैं। बालाजी-भैरूंजी-माता के मंदिर में मनौती पूर्ण कराने के नाम पर इतनी लूट नहीं मचती है जितनी लूट अजमेरी खादिम मचाते हैं। ये सब बातें इस्लाम में तो है ही नहीं पर सनातनी परंपरा में भी इतनी लूट नहीं है। अब आप[3] ही सुझाव दें इस्लाम का स्वरूप भारत में कैसा हो?

दरगाह में जगह-जगह खादिमों ने हुजरों[4] पर (इबादत करने के नाम पर) अधिकार कर रखा है। मसनदें[5] लगाकर बैठ जाते हैं। गले में भगवा दुपट्टा डाले हुए खादिमों को मोरछल व हाथ सर पर रखकर आशीष देते देखा जा सकता है जैसे देवरों में भोपाजी जात्रियों को आशीष देते हैं। खादिम अपने आप को पीर बताते हैं और भोले अकीतमंदों[6] को लूटते हैं। इनका सबसे बड़ा उद्देश्य यही है।

---

1. भेंट, 2. चढ़ावे से कुछ हिस्सा देवरों-मजारों के कर्मकाण्ड करने वाले लेते हैं उसे चौथान कहा जाता है। 3. सुदर्शन जी, 4. कमरों, 5. बैठने के स्थान पर गोल तकिये, 6. आस्थावान।

प्रशासन पंगु है

प्रशासन सख्ती के लिए हमेशा बदनाम रहा है, वो भी गरीबों के संदर्भ में। प्रभावशाली व भ्रष्ट व्यक्तियों के सामने प्रशासन पंगु बन जाता है। अजमेरी खादिमों के संदर्भ में प्रशासन का ढ़ीलापन साफ देखा जा सकता है- ये लोग मनमानी गुण्डागर्दी करके भी बच जाते हैं और प्रशासन मूकदर्शक बना रहता है।

इनकी हिम्मत देखिये कि यू.पी. के दो विधायक (पति-पत्नी) जियारत को आये। मनचले खादिम ने चादर सर पर ओढ़ाकर महिला के साथ बदतमीजी कर डाली। हंगामा खड़ा हो गया। जब खादिमों को पता चला कि ये तो वी.आई.पी. है तो भाग गये। प्रशासन की तत्परता धरी की धरी रह गई।

सूरत में होनेवाली (3-4 जुलाई 04 को) दरगाह कमेटी को मीटिंग के लिए दरगाह नाजिम[1] को गरीब नवाज सूफी मिशन सोसायटी के अध्यक्ष जुल्फिकार चिश्ती ने एक ज्ञापन देकर जायरीन की सुविधा हेतु कुछ मांगे रखी। उन मांगों में एक मांग यह भी थी कि 'भिखारियों को दरगाह परिसर[2] से बाहर निकाला जाए।'

भिखारियों को निकालने की बात जुल्फिकार के भाईबंधों (खादिमों) के पक्ष में ठीक, क्योंकि भिखारी सदका व खैरात खाते हैं तो खादिमों के हिस्से में कमी आती है। ये स्वयंभू सैय्यदजादे, भिखारियों को बाहर भगाकर अपनी लूट का एक छत्र राज्य कायम करना चाहते हैं। सदका खैरात पर पलने वाले भिखारियों को बाहर निकालने की बात करते हैं।

प्रशासन का पंगुपन देखिये, नौकरों के ज्ञापन प्रशासनिक व्यवस्था हेतु स्वीकार रहे हैं। आज हर कोई कह देता मैं खादिम हूँ। गलत हरकत

---

1. सरकार की तरफ से नियुक्त प्रशासक, 2. दरगाह के अंदरूनी भाग

करने पर कह देते- वो खादिमों में से नहीं था। प्रशासनिक अधिकारी व ड्यूटी पर तैनात पुलिस अफसरान भी थोड़ी बहुत हरकत बताकर पीड़ित को थोड़ी सी तसल्ली दिलाने में कामयाबी पा लेते हैं पर अमूमन[1] यह तसल्ली क्षणिक व झूंठी होती है।

खादिमों की उल्टी-सीधी हरकतों व दुष्कृत्यों पर अनेक उदाहरण प्रशासनिक पंगुता के देखे जा सकते हैं। अखबार भरे पड़े हैं। राम नाम पर हुए प्रायोजित दंगों से पीड़ित व भयभीत जनता मोहर्रम की पांच तारीख को अजमेर नहीं आयी परिणामस्वरूप अजमेर सूना-सूना सा रह गया। मोहर्रम का मिनी उर्स[2] सूना निकलने से खादिमों, फूल-तबर्रक वालों व दुकानदारों के मुँह उतर गये। आमदनी का बहुत अच्छा अवसर रीता जो बीता ! पर दाद देनी पड़ेगी उन खादिम लोगों को जिन्होंने सोच समझकर एक ऐसा तीर फेंका जिसके कारण भयत्रस्त जनता टिड्डी दल की भाँति उमड़ पड़ी। प्रशासन के लिए परेशानियाँ खड़ी हो गई। शहर की होटलें, सरायें भर गयी। गली कूँचों में मुख्य उर्स जैसी भीड़ हो गयी। ऐसा कौनसा तीर फेंका जिसके कारण यह सब हुआ ? वह तीर था-

''गरीब नवाज के गुम्बद शरीफ पर बुजुर्गों के दीदार[3] हो रहे हैं।'' आस पास के गाँवों में खादिमों ने फोन किये। बात चारों तरफ तीव्र गति से फैली। भीड़ उमड़ पड़ी। चमत्कारों की चर्चाएँ होने लगी- कोई आस्था की बातें करता तो कोई चमत्कारों को ढोंग बताने लगा। मीडिया ने दोनो तरह की बातों को उछाला।

बुद्धिजीवियों ने गुम्बद पर चमत्कारों की बातों को मनगढंत व अधार्मिक बताना शुरू किया तो इन लोगों ने अनपढ़ व सीधे आदमियों को अकीदत के नाम गुमराह करने के प्रयास करने वाले कहने लगे कि इन लोगों का बुजुर्गों में अकीदा[4] नहीं है। ये लोग तो वहाबी[5] है। मीडिया ने जब सज्जाद नशीन सा. से संपर्क साधा तो सज्जाद नशीन ने गुम्बद के चमत्कारों की बात को बेबुनियाद[6] बताया तो खादिम भड़क उठे और जुम्मेरात की महफिल में सदारत के लिये आने से पहले ही निजाम गेट पर बद्तमीजी

---

1. अधिकांश, 2. मेला, भीड़, खुशी पर बनाया जाने वाले भोजन, महाप्रयाण के दिनों श्रद्धांजलि देने हेतु इकट्ठा होना। 3. दर्शन, 4. विश्वास, 5. जो सिर्फ अल्लाह को मानो, पैगम्बर, पीर व वलियों को रक्षक नहीं मानने वाला।

करने की योजना बना डाली, पूर्व में भी सज्जाद नशीन ने मारपीट व अभद्र व्यवहार करने पर अदालत में एक वाद दायर कर रखा है। प्रशासन को जब इस बात का पता चला तो बात शांत करने के लिए (गुम्बद के चमत्कार की असलियत का पता लगाने के लिए) एक मीटिंग बुलाई जिसमें सज्जाद नशीन खादिमों के प्रतिनिधियों, दरगाह नाजिम व प्रशासन के आला[1] अफसर शरीक[2] हुए। खादिमों व सज्जाद नशीन में समझौता कराकर बात को शांत सा कर दिया।

प्रशासन से बहुत स्पष्ट मेरे सवाल है –

(1) इस्लाम धर्म पर, धार्मिक दृष्टिकोण से राय देने का (फतवे[3] जारी करने का) अधिकार किसे होता है?

(2) क्या पीर-फकीर-सूफी धार्मिक फतवे दे सकते हैं?

(3) क्या मजारों की खिदमत करने वाले धार्मिक राय कायम कर सकते हैं?

इन तीनों बातों का उत्तर देने में प्रशासनिक अधिकारी सक्षम है पर करें क्या? उनकी सारी विद्वता राजनैतिक आँटा बेड़ी में उलझकर रह जाती है। इस्लाम धर्म पर धार्मिक व्यवस्था देने के लिए सिर्फ आलिम (कुरआन व हदीस की पूर्ण जानकारी रखने वाला) ही मान्य होता है। पीरों-फकीरों-सूफियों का मिजाज व तरीका अलग व रहस्यात्मक[4] होता है। इस्लाम के मूल सिद्धांतों से थोड़ा हटकर। उदाहरण के लिए संगीत को इस्लाम में मान्यता नहीं है पर भारतीय सूफियों में कव्वाली को मान्यता प्राप्त है (इराकी सूफियों में नही) अब रहा मजारों पे खिदमत करने वालों के बारे में- इन हजरात की अमली[5] जिंदगी (बिरले व्यक्तियों को छोड़कर) इस्लाम से कोसों दूर है। जिन्हें शरीयत की जानकारी ही नहीं वो क्या राय देंगे ?

'गुम्बद पर चमत्कारों' से उत्पन्न विवादों को हल करने के लिए बुलाई मीटिंग में अगर किसी आलिम को बुलाया जाता तो जो राय मिलती वो शरीयत[6] सम्मत होती फिर कभी ऐसा धतंगा करने की हिम्मत किसी की नहीं होती। इस मीटिंग में आलिमों को नहीं बुलाना प्रशासन का पंगु होना ही सिद्ध करता है।

---

1. उच्च, 2. सम्मिलित, 3. धार्मिक व्यवस्था, 4. चिन्तन व भक्ति का तरीका, 5. व्यावहारिक, 6. इस्लामी कानून।

अभी थोड़े दिनों पहले आस्ताना-ए-औलिया से सोने की प्लेट (स्वर्णाक्षरों की पट्टिका) चौड़े धाड़े गायब हो गई और प्रशासन ने व्यर्थ के हाथ-पाँव पककर खामोशी धारण करके नई चाँदी की प्लेट लगाने का निर्णय लिया। प्रश्न पैदा होता है जिस जगह से प्लेट गायब हुई उस क्षेत्र में दरगाह के किस कर्मचारी की ड्यूटी थी? कौन-कौन हजरात (खादिम लोग) वहाँ आस पास विराजमान थे? क्या खादिमों का फर्ज[1] जायरीन से पैसे ऐंठना ही है? इनको पूछा जाना चाहिए था और जिम्मेदारी से इन पर मुकदमा कायम करना चाहिए था, पर दरगाह का प्रशासन खादिमों के सामने एकदम पंगु है।

विशिष्ट व्यक्तियों को जियारत कराने के नाम पर आये दिन खादिमों में 'तू-तू, मैं-मैं' से लेकर चाकू तक चलते हैं (कई मुकदमें दर्ज हुये), ऐसे समय में प्रशासन मूकदर्शक बन जाता है। यह दरगाह प्रशासन का काम है कि- कितने खादिम किस-किस दिन, किस समय से किस समय तक ड्यूटी देंगे? जिसके टाइम में जो आ जावे उसे वो जियारत करा दें। आधी भीड़ तो दरगाह में खादिमों की है जो ख्वाजा की खिदमत करते-करते जायरीन के गाइड बन गये। गाइड बने वहां तक तो ठीक है पर अधिकांश मादक पदार्थों के सप्लायर बन गये। थोड़ी सी इच्छा प्रकट करने पर आपके पास मादक पदार्थ की पुड़िया पहुँच जायेगी। क्या इन बातों की खबर प्रशासन को नहीं है? ऐसा तो हो ही नहीं सकता। फिर क्या मजबूरी है? प्रशासन की मजबूरी है खादिमों की उद्दण्डता। जो सज्जाद नशीन से बदसलूकी करने में नहीं हिचकते वो दूसरों के साथ बदसलूकी करने में कभी नहीं चूकेंगे।

दूसरी बात कोई अधिकारी हिम्मत करके इनके विरूद्ध कोई कार्यवाही करता भी है तो अपने राजनैतिक प्रभाव का ये प्रयोग करके मामले को ठंडे बस्ते में डलवा देते हैं।

---

1. कर्तव्य

प्रशासन पर सचिव बरसे...

एक समाचार- 'अजमेर अब तक

प्रशासनिक व्यवस्था में मीन मेख[1] निकालना हर एक आदमी अपना तथाकथित अधिकार समझता है। सफल जनतंत्र का यह शुभ लक्षण है। जागरूक नागरिकों का कर्त्तव्य बोध ही प्रशासन पर अंकुश लगाता है परंतु जब 'स्वयंभू जागरूक नागरिक' अपनी मन की खुन्नस[2] निकालने के लिए बात का बतंगड़[3] बनाकर कोई बात कहता है तो सीधे व भोले लोगों को भले ही भ्रमित कर दें पर सब को एक साथ भ्रमित नहीं किया जा सकता है।

792वें गरीब नवाज के उर्स पर की जाने वाली प्रशासनिक व्यवस्था पर सचिव बरसे। बरसने से पहले सोचा-समझा भी होगा पर अपना (गहरापन व बड़प्पन) प्रकट करने की जगह छिछलापन प्रकट कर गये। सचिव साहब ने पत्रकारों से कहा- 'बदइंतजामियों[4] के कारण जायरीन को परेशानियां उठानी पड़ी.... देग के पास कुत्ता घूमता देखा गया.....पानी की सप्लाई पूरी नहीं थी......।' अफसोस जताते हुए सचिव साहब ने कहा- दोनों विधायक उर्स की व्यवस्था देखने नहीं आये।

उर्स पर किये गये इंतजामात को सचिव साहब ने बाहर निकलकर देखा होता तो इतना आक्राश पैदा ही नहीं होता और प्रशासन पर बरसते नहीं। सबसे पहले तो सोचना व समझना होगा सचिव सा. आपको ! आप किस हैसियत से बरस रहे है? खादिमो की संस्था अंजुमन सैय्यद जादगान के सचिव की हैसियत से!

खादिमों (नौकरों-सेवकों) को बाकायदा नियुक्ति दी जाती रही है- रजिस्टर में नाम-काम वेतन दर्ज होता रहा- क्या आप इसी प्रकार के वैधानिक तरीके से नियुक्त खादिमों की संस्था के सचिव हैं? अगर है तो आपका कोई अधिकार नहीं है प्रशासनिक कामों में मीन मेख निकालने का,

---

1. कमी, 2. भड़ास, 3. राई का पर्वत, 4. दुर्व्यवस्था।

क्योंकि प्रशासन स्वयं खादिमों को काम बताता है। गरीब नवाज के खादिमों को चौकीदार भी कहा जाता रहा है- आपने कहा- देग के पास कुत्ता देखा गया- क्या कर रहे थे खादिम जो दरगाह के हर दरवाजे पर खड़े है ? उनकी नजरें कुत्ते पर पड़े भी तो कैसे ? वो तो सिर्फ जायरीन की जेबों पर टिकी हुई थी- है ना यही बात ?

अगर आपकी संस्था के सदस्यों के नाम-काम दरगाह कमेटी के रजिस्टर में दर्ज नहीं है तो आप लोग ख्वाजा साहब की दरगाह के खादिम नहीं है 'स्वयंभू खादिम' भले ही बन जाओ और भोले जायरीनों को लूटने के लिए नित नये हथकण्डे अपनाते रहो। आप 'खादिम' शब्द से संतुष्ट नहीं हो इसलिए जायरीनो को समझाते हो- हम आस्ताने के भीतर गरीब नवाज के हुजूर में आपके 'वकील' है। हमारी बात को गरीब नवाज पूरी तरह मानते हैं- हम जायरीन की हर ख्वाहिश[1] को गरीब नवाज के दरबार में इस तरीके से पेश करते हैं कि कोई भी अरजी रद्द नहीं होती है। सचिव साहब आपके सदस्य (चाहे वो किसी भी सिजरे[2] से संबंध रखते हों) खादिम से वकील बन जाते हैं और वकील बनते-बनते लुटेरे व व्याभिचारी बन जाते हैं।

सचिव साहब आपको बहुत बुरा लगेगा पर आप इन लोगों की अंजुमन के सचिव हो इसलिए बता रहा हूँ- ता. 26.8.04 को असर की नमाज से पहले एक खादिम ने आस्ताना-ए आलिया में एक खातून को चादर ओढ़ाकर उसके स्तन को पकड़ लिया। खातून[3] खानदानी थी- बिफर गई- खादिम की कायदे से धुलाई लोगों ने की। अपनी आदत के मुताबिक भारतीय पुलिस मामला बीतने पर आई और खादिम को ले गई और खातून को बदनामी का वास्ता आपके दूसरे मेम्बर देने लगे।

सचिव साहब क्या आपकी अंजुमन में ऐसे ही लोग है जिनके आप सचिव है। आप लोगों ने अपने मतलब के लिए मनघड़न्त बातें बना ली है जिनका इस्लाम से कोई लेना देना नहीं है। आप में से ही एक हजरत ने अजमेर 'अब तक' को 'उर्स' शब्द का अर्थ बताया 'खुदा से मिलना' किस शब्दकोष में यह अर्थ है हमें भी बताने की मेहरबानी करावें ताकि हमारे ज्ञान में भी इजाफा[4] हो।

---

1. कामना, 2. वंशावली, 3. महिला, 4. वृद्धि

सचिव साहब आपको पूरा हक है प्रशासनिक कमियों को बताने का पर सही जागरूकता का पता तो तब लगता जब आप दरगाह से भीतर व बाहर दुष्कृत्य करने वालों को पकड़वाते और फिर प्रशासन की ढ़िलाई बताते।

ख्वाजा साहब के 792 वें मेले (उर्स का शाब्दिक अर्थ मेला होता है- खुदा से मिलना नहीं) जायरीन उतने नहीं आये जितने 791 वें मेले में आये थे। इस साल तो बादल भी अच्छे बरसे। हो सकता है कि किसी मोहल्ले विशेष में पानी की बनावटी कमी रही हो- प्रशासन की तरफ से पूरे शहर में पानी की सप्लाई बड़ी अच्छी रही। सचिव साहब पानी के मामले में तो प्रशासन को धन्यवाद देना था पर आप भी क्या करें ? आपके जहन[1] में तो एक ही बात बैठी हुई है- खादिम समुदाय जो सोचे-समझे, करे वो सब ठीक है बाकी सब गलत है।

उर्स शुरू होने से पहले प्रशासन को अंजुमन की तरफ से कुछ सुझाव बहुत अच्छे दिये गये जैसे भिखारियों को बाहर निकालना पर आप लोगों ने उन लुटेरों को बाहर निकलवाने की बात नहीं की जो हर जगह खिदमत के नाम पर, जियारत कराने के नाम पर लूट रहे हैं। दरगाह में पानी की मशकें लोग दरगाह में लगे नलों से भरकर वजूखाने[2] के हौज में डालकर पैसे वसूल रहे ये शायद आपकी आचार संहिता में लूट नहीं मानी जाती है।

दरगाह परिसर में जगह-जगह स्वयंभू खादिमों ने हुजूरों (कमरों) को अधिकार में करके इबादत करने के स्थान पर चरस गांजा फूँकने के अड्डे बना रखे हैं- नशीले पदार्थों के धुएँ से सारा वातावरण प्रदूषित कर रखा है और दरगाह परिसर में वजुखानों के पास पेशाबघर बनवाने के नाम पर आप लोग दरगाह की पवित्रता का राग अलापते हैं। सचिव साहब जब खादिम हुजूरे में गांजा-चरस फूंकता है तब पवित्रता खत्म नहीं होती। जब आस्ताना-ए-आलिया में औरतों से बदतमीजी की जाती है तब पवित्रता नष्ट नहीं होती ?

सचिव साहब आपने उर्स के मौके पर विधायकों के नहीं आने पर अफसोस जताया- इसमें अफसोस की कोई बात नहीं है। वैसे तो निश्चित

---

1. मस्तिष्क, 2. इस्लामी तरीके से हाथ-पांव - मुंह धोने को वजु कहते हैं, वजुखाना = हाथ-पांव, मुंह धोने का स्थान।

रूप से दोनों विधायकों ने अधिकारियों के माध्यम से समय-समय पर व्यवस्था के बारे में जानकारी ली ही होगी। इतने बेफिक्र देवनानी साहब व अनिता जी तो क्या कोई भी राजनीतिज्ञ नहीं हो सकता क्योंकि धार्मिक अवसर ही वोट बैंक बनाने के अवसर होते है और अगर वो व्यवस्था देखने नहीं भी आये तो आपको क्या एतराज है ? व्यवस्था करना प्रशासन का काम है व्यवस्थापिका के सदस्यों विधायकों का नहीं है।

आप लोगों को तो व्यक्तिगत खुन्नस निकालने के लिए कोई ना कोई बहाना चाहिए। आपने सोनिया गाँधी की तरफ से भेजी गई चादर को दरगाह कमेटी के कार्यालय की टेबल पर रख देने मात्र से चादर की पवित्रता नष्ट होने की बात कह दी- दाढ़ी मुण्डे, बेनमाजी, गंजेडी-नशेड़ी खादिमों के हाथों में बार-बार गुजर कर बिकने से चादर की पवित्रता नष्ट नहीं होती। पीर गुलाम रसूल चिश्ती बजरंग बली के मंदिर में केक चढ़ाकर आता है और चादर ओढ़ाकर जियारत कराता है तो आस्ताना-ए-आलिया[1] की पवित्रता नष्ट नहीं होती ? वाह रे आपकी फिलॉसाफी![2]

उर्स के बाद अफसरों के स्वागत की परंपरा के बारे में सचिव साहब ने कहा 'स्वागत काहे का ? इंतजाम तो हुआ ही नही।' इस परंपरा के बारे में ही नहीं दरगाह शरीफ अजमेर की कई परंपराएँ ऐसी है जिनका सीधा संबंध खादिमों से हैं। नई-नई परंपराएँ विकसित करके उन्हें मूर्त रूप देना (स्थायी परंपरा में बदल देना या बिगाड़ देना सचिव साहब आप लोगों का बाएँ हाथ का काम है।)

अच्छे इंतजाम के लिए स्वागत किसकी तरफ से होना चाहिए ? उच्च अधिकार प्राप्त व्यक्ति या संस्था की तरफ से या निम्न स्तर के व्यक्तियों या संस्था की तरफ से ? जहाँ तक मेरा विश्वास है सभी प्रबुद्धजन इस बात को स्वीकारेंगे कि अच्छा काम करने पर बड़ों के द्वारा प्रोत्साहन देने हेतु किया जानेवाला स्वागत-सत्कार शोभा देता है न कि निम्न अधिकार प्राप्त व्यक्तियों द्वारा भविष्य में अच्छे काम की आशा की याचना करनेवाला स्वागत। निम्न अधिकार प्राप्त व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला स्वागत चापलूसी के अलावा और कुछ भी नहीं है।

---

1. पवित्र मजार, 2. दर्शन

अधिकारियों को स्वागत की भूख नहीं होती है फिर भी अगर अधिकारियों का स्वागत उर्स में अच्छे इंतजाम के लिए किया जाता है तो दरगाह कमेटी की तरफ से या सज्जाद नशीन की तरफ से हो तो बात सम्मानजनक होती। खादिमों की संस्था के द्वारा स्वागत करना- अपनी फजीहत[1] कराना है। अबकी बार सचिव साहब आप अफसरों का स्वागत करके फजीहत नहीं कर रहे- अच्छा विचार है।

अंजुमन ने राज्य सरकार, मुख्यमंत्री व प्रभारी मंत्री को भी कोसा, यह बुद्धि का दिवालियापन ही उर्स के पूरे इंतजाम में राज्य सरकार का ही तो रोल है। यह जरूरी थोड़े ही है कि मंत्री व मुख्यमंत्री आये ही आये। स्व. मोहनलाल सुखाड़िया मुख्यमंत्री रहते हुये कितनी बार उर्स में आये व कितनी बार उन्होंने चद्दर भेजी ? सचिव साहब ! जनप्रतिनिधियों की तरफ से चादरें आना व दरगाह में हाजिरी देना नयी-नयी बात है और यह परंपरा भी सिर्फ वोटों की राजनीति के लिए ही है।

अपने आप को पहचानिये फिर अफसरों, नेताओं पर बरसिये वरना आप की खींझ, झल्लाहट मात्र प्रलाप ही साबित होगी।

1. उपहास
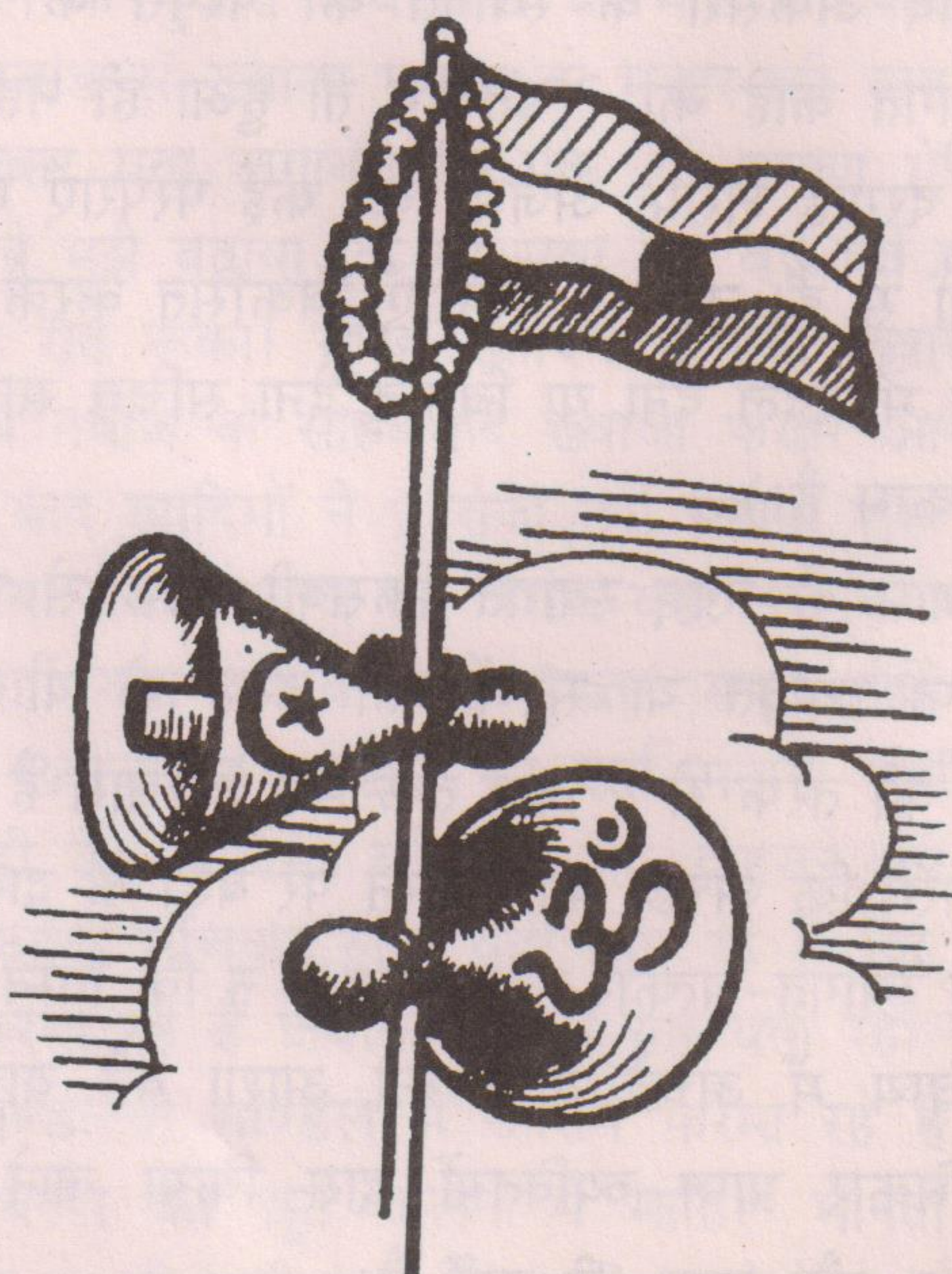
गॉयबल्स सिर धुन रहा....

झूठ को सच बनाने में गॉयबल्स अपने आपको उस्ताद मानता था पर जब उसकी नजर अजमेर के खादिमों पर पड़ी उसकी आत्मा यहाँ रम गई। शुरू-शुरू में तो गॉयबल्स की आत्मा खुश हुई पर जब उसने देखा झूठ व फरेब[1] के मामले में अजमेर के खादिम के हजार गॉयबल्स कहीं नहीं अड़ते तब से वो सिर धुन रहा....। जो बात अस्तित्व में नहीं है और उसे अपनी अक्ल-होशियारी- धूर्तता से ऐसी प्रसिद्ध करे कि सारा जमाना उसे सत्य मानने लग जाये। इस मामले गॉयबल्स बहुत पीछे था इसलिए सिर धुन रहा है।

आप भी खादिमी धूर्तता को इस एक उदाहरण से समझने की चेष्टा करें। जायरीन जब फातिहा पढ़ने लगता है उसे आगे बढ़ो-आगे बढ़ो कह कर फातिहा भी पूरी नहीं पढ़ने देते हैं और जो लोग उनके कहने पर पैसा देते रहते हैं उन्हें अपने तरीके से जियारत कराके खुश कर देते हैं (जियारत कराने का इनका तरीका-इस्लामी नहीं है।) कुछ नमूने देखिये जिनसे पता चलेगा कि गॉयबल्स से ये कितने आगे है- 12 सितंबर 2004 के दैनिक नवज्योति के अजमेर संस्करण के पृष्ठ 11 पर चौथे कॉलम में ''ख्वाजा फखरूद्दीन के उर्स का कुल आज'' नामक सुर्खी में समाचार प्रकाशित करवाकर एक भ्रामक स्थिति पैदा करने की षड़यंत्रपूर्वक कुचेष्टा की गई जो अपने आप में एक झूंठी वाहवाही के सिवा कुछ भी नहीं है। इस शीर्षक में सूफी संत हजरत ख्वाजा मुइनुद्दीन हसन चिश्ती-संजरी-अजमेरी रहमतुल्लाह के जाँनशीन जिनको खादिमों का पूर्वज बताया गया है यह एक सफेद झूठ के अलावा कुछ भी नहीं है। झूंठ को किस तरह खादिम लोग सच बना देते हैं इसका एक और नमूना देखिये- 14.9.04 के दैनिक भास्कर पृष्ठ 16 कॉलम 2 पर छपा- ''ख्वाजा फखर का उर्स कल'' कॉलम तीन पर ब्रेकिट में लिखा- ''चाँद रात को चढ़ेगा सरवाड़ स्थित बाबा फखर की दरगार में झंडा।'' सरवाड़ में बाबा फखर का मजार हो सकता है पर गरीब नवाज के साहबजादे ख्वाजा फखरूद्दीन चिश्ती माण्डलवी का नहीं है क्योंकि कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है जिसके आधार पर ख्वाजा फखरूद्दीन का सरवाड़ में

1. *जालसाजी*

दफन होना साबित होता हो। जिस तालाब की पाल पर खादिम लोग ख्वाजा फखर का मजार बताते हैं यह तालाब 400 वर्ष से ज्यादा पुराना नहीं है।

माण्डल शरीफ में ख्वाजा फखरूद्दीन ने ताउम्र खेती करवाई (गरीब नवाज ने बादशाह इल्तुतमिस से माण्डल का पट्टा लाकर दिया) शेष शय्या सायी जी के मंदिर के पुजारी कँवरलाल पाराशर के वंशानुगत भाट की पोथी में ख्वाजा फखर के ताउम्र माण्डल में रहने का वर्णन है। जहाँ-जहाँ ख्वाजा साहब के वंशजों के उर्स होते हैं वहाँ पर सज्जाद नशीन की उपस्थिति जरूरी होती है फिर सरवाड़ में केवल खादिम ही चादर लेकर क्यों जाते हैं ? महफिल की सदारत वंशज करते हैं या नौकर ? सज्जाद नशीन व अजमेर में पीरजादे कहलानेवाले लोग गरीब नवाज के वंशज है जबकि अजमेर के खादिम सिर्फ नौकर है। माण्डल में 5 साबान को एक दिन का उर्स होता है। खादिमों से कहना है अंधेरे में तीर चलाना बंद करो, ऐतिहासिक संदर्भ में बात करो ताकि भ्रम के बादल छँटे।

यह बात सर्वविदित है कि गरीब नवाज ने अपने साहबजादे ख्वाजा फखरूद्दीन के तेज स्वभाव के कारण अपने से दूर रखा। वक्त की गर्दिश[1] में बहुत लंबे अरसे[2] तक ख्वाजा फखरूद्दीन के बारे में पूर्ण जानकारी किसी को नहीं थी। माण्डल के पुजारी कँवरलाल के भाट की पोथी ने रहस्य से पर्दा उठाया उधर सरवाड़ में ख्वाजा फखर के मजार की बात भी जान लें- आप सरवाड़ में जाकर पता लगायेंगे तो एक भी प्रमाण ऐतिहासिक नहीं मिलेगा। कुछ लोगों ने मुझे बताया कि सौ सवा सौ, वर्ष पूर्व खादिम परिवार उधर से गुजरा और रात रूका। सुबह खादिम ने एक ख्वाब का जिकर[3] किया कि यहाँ गरीब नवाज के साहबजादे ख्वाजा फखर आराम फरमा रहे हैं।'' इस ख्वाब के बाद खादिमों ने 9 रोजा उर्स मनाना शुरू कर दिया पर कोई सज्जाद नशीन या गरीब नवाज का वंशज वहाँ उर्स के मौके पर चादर लेकर सदारत हेतु नहीं गया क्योंकि उन्हें पुख्ता[4] सबूत नहीं मिले।

सरवाड़ में ख्वाजा फखरूद्दीन का उर्स मनाना खादिमी झूठ की जंजीर की एक कड़ी है। खादिमों की झूठ को दोहराने की आदत इतनी तगड़ी है कि आज आँख मींचकर लोग यही मान रहे है कि ख्वाजा फखर सरवाड़ में आराम फरमा रहे हैं जबकि तारीख यह बता रही है कि ख्वाजा फखरूद्दीन चिश्त-माण्डलवी माण्डल में आराम फरमा रहे है।

दुनियां गॉयबल्स को झूठ बोलने में माहिर[5] मानती है यह बात ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी सही नहीं है, खादिम लोगों ने तो गरीब नवाज के बाद से ही झूठ को पकड़ा जिसे आज तक नहीं छोड़ा।

---

1. समय का फेर, गुबार, 2. अन्तराल 3. वर्णन 4. मजबूत, सही 5. दक्ष

इस्लाम का भारतीयकरण

पाथेयकण में इस्लाम के भारतीयकरण के बारे में सुदर्शन जी की बात पढ़ी-बहुत खुशी हुई। पर भारतीयकरण का स्वरूप क्या होगा ? तरीका क्या होगा ? इस बारे में उन्होंने कुछ नहीं बताया।

शायद सुदर्शनजी आप भारत में सनातन पंथियों के परिवर्तित स्वरूप की भावनाओं का इस्लाम चाहते हैं। प्राचीन आर्यों की उपासना पद्दति, प्रकृति पूजा, निराकार 'ॐ' की उपासना पद्धति में धीरे-धीरे अन्य जातियों के संपर्क से परिवर्द्धित होते-होते आज प्रतीक पूजा, पूर्वज पूजा तक पहुँच गई। आजकल जो स्वरूप सनातन धर्म का बना है वैसा अगर आप इस्लाम चाहते हैं तो मेरा निवेदन है कि इस्लाम का स्वरूप भी एकदम जैसा आप चाहते हैं वैसा ही बन गया- मूल इस्लाम से एकदम उल्टा। आज इस्लाम में पीर पूजा जोरों से प्रचलित है यही आपकी पितृ-पूजा है। कब्र पूजा का जीता जागता उदाहरण है- इस पद्धति का इस्लाम से कोई लेना देना नहीं है- यह आपके धर्म का पूर्ण प्रभाव है। आज भले ही इसे सूफीवाद को नाम दे दिया जाये पर है यह व्यक्ति पूजा-प्रतीक पूजा। ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने में शंका करना ईश्वरत्व में दूसरों का शरीक[1] करना ही पीरपरस्ती है। यह इस्लाम नहीं है शुद्ध रूप से सुदर्शन जी यह आपका तरीका है। फिर आप कौन सा भारतीयकरण चाहते हैं ?

आपने देवरों, पूर्वजों के चबूतरों पर 'धूप' लगता हुआ (अंगारों पर घी, अगर, गुगल, लोबान, नारियल जलाना) देखा होगा ? मान्यता है कि इससे पितरों की आत्माएँ राजी होती है। इसी क्रम में फूल, इत्र, केशर, चन्दन चढ़ाये जाते हैं- कहीं-कहीं सगसजी व देवियों की प्रतिमाओं पर शराब चढ़ाया जाता है। प्राचीनकाल में प्राकृतिक शक्तियों को राजी करने हेतु

---

1. शामिल

यज्ञों का प्रावधान था। आजकल के धूप, अगरबत्ती, लोबान को यज्ञों का आधुनिक संस्करण माना जा सकता है। आजकल भारत में कब्रों पर लोग बड़ी अकीदत (आस्था) से चादरें, फूल, इत्र, अगरबत्ती, लोबान चढ़ाते हैं। मंदिरों में जिस तरह प्रसाद चढ़ाया जाता है ठीक उसी तरह मजारों पर शीरनी, तबरूक चढ़ाया जाता है। मंदिर में जिस तरह परिक्रम लगाई जाती है ठीक उसी तरह मजारों की परिक्रमा लोग लगा रहे है जिसे नाम भले ही तवाफ़ दे दिया। तवाफ़ सिर्फ काबा[1] शरीफ का ही मान्य है। देवरो-माताजी के स्थानों पर जैसे डाकन-भूत औरतों व आदमियों के शरीर में भाव के रूप में आते है उसी तरह कई मजारों पर औरतों व आदमियों के शरीर में डाकन-भूत जिन्न खेलते देखे जा सकते है।[2] अपनी मुरादे पूरी होने की उम्मीद में सुदर्शन जी आपकी आस्था व मेरी अकीदत में कोई अंतर नहीं है। हो तो बताओ ?

इस्लामी दर्शन कब्रपरस्ती, पूर्वज पूजा की ऐसी कोई इजाजत नहीं देता है। कब्र पर फातिहा (पवित्र कुरान की कुछ आयतें) पढ़े अल्लाह से मृतक की मुक्ति के लिए दुआ करें। मृत आत्मा को खुश करके उससे कुछ आशा लगाने की इजाजत इस्लाम नहीं देता है। हो सके तो कब्र पर पौधा लगा दो ताकि पौधा मृतक की मुक्ति के लिए प्रार्थना करता रहे। हजरत मोहम्मद के मजार पर कुछ भी नहीं चढ़ाया जाता है जैसा भारत में कब्रों पर चढ़ाया जाता है। भारत में मजारों की प्रतिष्ठा इस्लाम पर आपके 'हिन्दुत्व' का ही प्रभाव है। फिर आपको इस्लाम का कैसा भारतीयकरण चाहिए ?

---
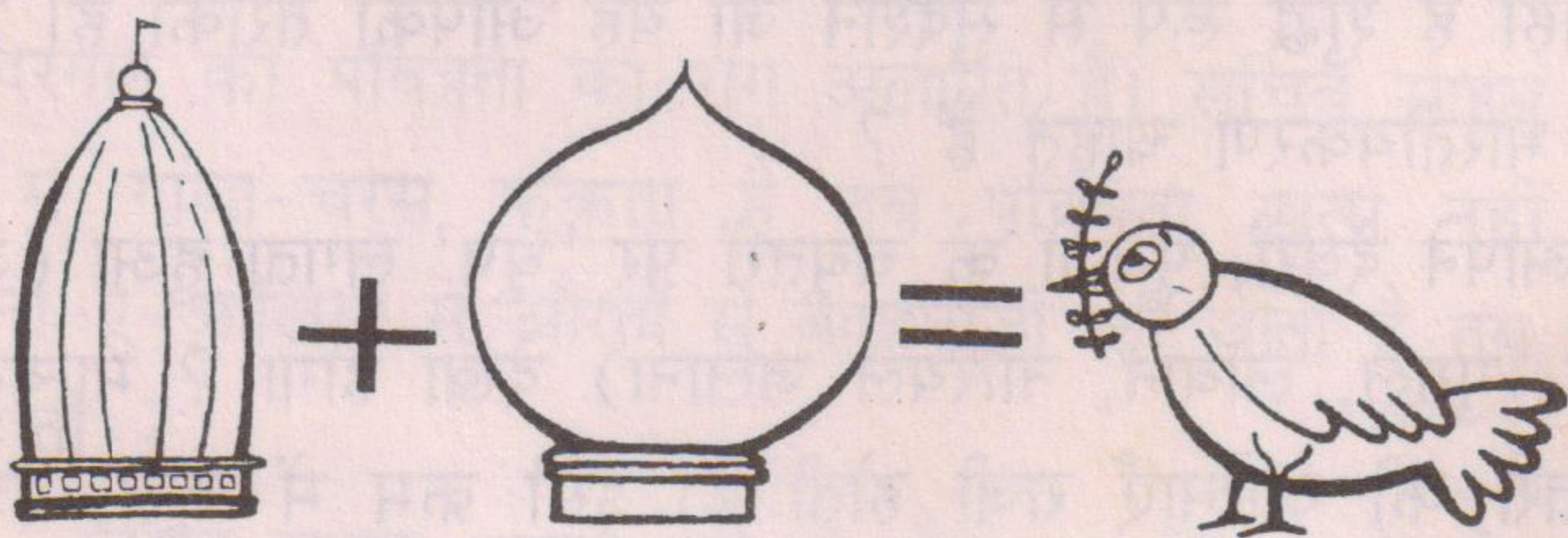
1. अल्लाह का पवित्र घर जिसे हजरत इब्राहिम ने बनाया।

2. मीरां दातार (गुजरात) कपासन मेवाड़ में मर्द-औरतें रात-दिन खेलती रहती है।

उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा,
गफ़लत से हमारी, यह मुल्क बदनाम हुआ जा रहा।

उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा,
गफ़लत से हमारी, यह मुल्क बदनाम हुआ जा रहा।
रंति देव, कर्ण, शिवि को भूल गए?
क्या अस्थिदाता दधिचि के वंशज मिट गए?
क्या आन के खातिर सब कुछ यहां-
दान हरिश्चन्द्र ने नहीं किए?
दानियों के इस देश में हर इन्सान भिखारी हुआ जा रहा।
उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा॥
उठो ले के अर्जुन का दहकता बान
हर एक बनो तुम प्रताप सा आजादी कादीवान
क्या खून तुम्हारा ठंडा पड़ चुका है?
नहीं बन सकते हो आजादी के दीवान?
स्वर्ग सी कश्मीर में मरघट का नजारा नजर आ रहा।
उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा॥
दुश्मन को कुचलने का दम भरते हो!
पर घर में भी तो कभी निगाह डालो।
अलग-थलग का नहीं है जमाना-
फूट आपसी तुम मिटा डालो।
हर मोती माला का आज बिखरता नजर आ रहा।
उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा॥
पृथ्वीराज सी हार कहीं खानी न पड़े
इतिहास प्लासी का कहीं दोहराना न पड़े।
दुश्मन अच्छे हैं जो सामने आकर लड़ते हैं-
खरबदार! पीठ पीछे, मीर जाफर आ न पड़े!
आज फिर गद्दारों का कुकृत्य बढ़ता जा रहा!
उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा॥
दरिया घी-दूध के बहे यहीं,
दामन तुर्कों ने हीरो से भरे यहीं।
खजाना लंदन का फिरंगियों ने
चूस-चूस खून भरा यहीं।
वैभव का यह मालिक आज कर्जे के लिए चिल्ला रहा।
उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा॥
वृद्ध और असहाय को आज यहां-
ठोकरों में निकाला जाता है।
बाद मरने के जाति-बिरादर को-
गंगोज-औ-चहल्लुम में बुलाया जाता है
रीवाजों के चक्कर में झूठा 'अहं' बढ़ता जा रहा।
उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा॥
अभी समय है संभलने में तो-
मान पुरखों का रह जाएगा
हालत रही गर यही 'जौहर'-
तो नामों निशां दुनिया से मिट जाएगा
छोड़ो अब गफ़लत जौहर तुम्हें जगा रहा
उठो गाफ़िलों! यह रेशम राख हुआ जा रहा॥

- जमालुद्दीन जौहर

(लेखक के शीघ्र प्रकाश्य काव्य संकलन से)

जौहर : एक परिचय

दाहिर वंशा जनमियो, गोत बिहारी जाण।
नील बणाई नेह सूँ, रंगलो सब सुजाण॥
रंगलो सब सुजाण, दूजो रंग ना चढ़सी,
फीकी पड़ी न आब, घुटकी नानी सुँ घटकी॥
नौ फरवरी रि परभात, उनिसौ पैतालियो।
'जौहर' ननिहाल में, दाहिर वंशा जनमियो॥
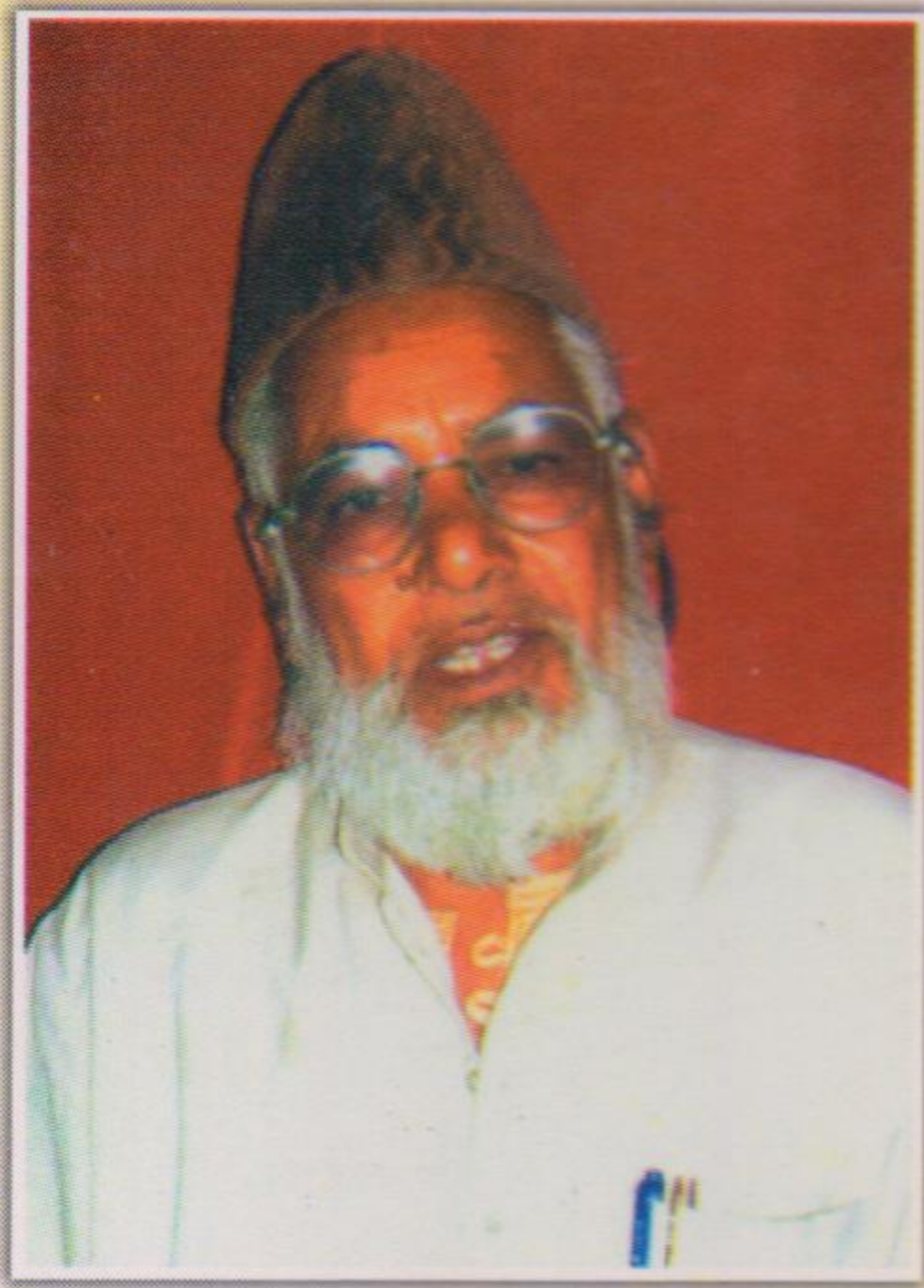
नाम - जमालुद्दीन 'जौहर'

जन्म दिनांक - 12 फरवरी 1945

पिताश्री - अनारद्दीन जी रंगरेज

माताश्री - हलीमा बाई

पितृभूमि - माण्डल

जन्मभूमि - मोड़ का निम्बाहेड़ा

पढ़ाई - एम.ए. (इतिहास)

रुचि - अध्ययन-अध्यापन, छोटे-छोटे आँचलिक स्थानों पर कवि सम्मेलन कराना, हिन्दुतानी में गजलें, कविताएँ लिखना। राजस्थानी में (विशेष कर उदयपुर-राजसमन्द, चित्तौड़, भीलवाड़ा व अजमेर क्षेत्र में बोली जाने वाली सरल बोली में) दो हजार के करीब दोहे शीघ्र प्रकाशन की प्रतिक्षा में।

सम्प्रति - व्याख्याता (इतिहास)

सम्पर्क सूत्र - कविता कुंज, झरणेश्वर मार्ग, मोड़ का निम्बाहेड़ा
भीलवाड़ा (राज.) - 311026 मो.: 94145-73557